स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय

॥ इति दीपक रागकी प्रथम रागनी केदारी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी दूसरी रागनी करणाटीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष माम मुखसों करणाटी गाईके वाको दीपककी छायायुक्ति देखी । दीपक रागको दीनी याहिको कन्हडी कहतहै॥ अथ करणाटीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर अंग जाको एक हातमें खड्ग है । और दूसरे हाथमें हाथिके दांतको पत्र है । देवताचारणनके समूह जाकी स्तुति करें हैं। ऐसी जो रागनी तांहि कन्हडी जानिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें वरतीहै । नि स रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरी पहरकी दूसरी घडीमें गांवनी । यहतो याको बखत है । ओर रातिके दूसरी पहरमें चाहो तब गावो । यह राग सुध्द हैं । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये । राग वरतेसो जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें ग्रहांश न्यास निषाद अनूपविलाससें न्यास षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी दूसरी करणाट रागनी २ (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा चार

॥ इति दीपक रागकी दूसरी कन्हडी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी तीसरी रागनी देसी टोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों देसी रागनी गाईके । वाको दीपककी छाययुक्ति देखी दीपकको दीनी । लोकिकमें याको नाम देसी टोडी कहे हैं ॥ अथ देसी टोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है महासुंदर है। ओर सूवापंखी हारे वस्त्र पहरे है । रसमें पूरन जाको चित्त है । अरु निद्रायुक्त अपने पतिकों कपटसुं जगावे है । ओर सुरतिको चाह है । ऐसी जो रागनी तांहि देसी टोडी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छ सुरनसों गाई है । रि ग म ध नि स रि । यातें षाडव है । याको दिनके दूसरे पहरकी सातवी घडीमें गावनी । यह तो याको बखत है। ओर दिनके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो। याकी आ-लापचारि छ सूरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥ संगीत दरपनसें । ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी तीसरी रागनी देसी टोडी ३ (षाडव).

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

॥ इति दीपकरागकी तीसरी रागनी देसी टोडी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी चोथी रागनी कामोदी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको ॥ तत्पुरुष नाम मुखसों कामोदी गाईके। वाको दीपककी छायायुक्ति देखि दीपकको दीनी । अथ कामोदीको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदर रंग गोरो पीरे वस्त्र पहरे है । सुंदर जाके केश है । ओर बनमें रुदन करे है । कोइलका शब्द सुनि अत्यंत दुःख पावे है । अरु भयसों दिशानको देखे है अपनें पतिकों याद करे है। ऐसी जो रागनी तांहि कामोदी जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरकी दूसरी घडीमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर रातिके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । नृत्यनिर्णयसें ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी चोथी रागनी कामोदी ४ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मध्यमसों मिडिकें मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति दीपक रागकी चोथी कामोदी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी पांचवी रागनी नटकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । तत्पुरुष नाम मुखसों नट गाईके । वाको दीपककी छायायुक्ति देखि दीपकको दीनी । याहिको लोकिकमें सुधानट कहे हैं । अथ नटको स्वरूप लिख्यते ॥ एक हाथ जाको घोडेके कंधेपे है । अरु सोनेकेसों जाको रंग है । बैरीनके लोहीसों जाको देह लिप्तहै । अरु संग्राम भूमींमें विचरे है । बडो जाको प्रताप है । ओर रंग युक्त जाकी मूर्ति है । वीर-रसमें छकिरहो है । ऐसो जो राग तांहि नट जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरकी छटी घडीमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रातिके प्रथम पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये । राग बरतेसों जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी पांचवी नट रागनी ५ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मध्यमसों मिडिकें मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मध्यमसों मिडिकें मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

भाषामें साफ नट कहेहैं ॥ इति दीपक रागकी पांचवी नट रागनी संपूर्णम् ॥

अथ नट राग औडव मार्गीको जंत्र लिख्यते.

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा तीन
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति नटराग औडव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके पंचम ईशान नाम मुखसों । श्रीराग भयों ॥ देवतानके वर देवेके अर्थ ॥ यह लक्ष्मीनारायण रूपहै ॥ देवताननें याको श्रवण करिकें सब मनोरथ पाये ॥ अथ श्रीरागको स्वरूप लिख्यते ॥ अठारह वरसकी अवस्था है ॥ अरु कामहूं तें मनोहर जाकी मूर्ति है ॥ कोमल पल्लव कानमें धरेहैं ॥ षड्जादिक सातों सुर जाकों सेवहैं ॥ ओर लाल वस्त्र पहेरहैं ॥ राजाकीसी जाकी मूर्ति है ॥ ऐसो जो राग तांहि श्रीराग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सप्तस्वरनमें गाईहै ॥ स रि म म प ध नि स । यातें संपूर्णहै ॥ याकों दोय घडी दिन पीछलेसों ले संध्या ताईं गावनों । यह तो

याको वखतहै ओर चाहो जब गावो ॥ अथ श्रीरागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो कोई अदमी मरिगयो होय ॥ अरु वाके आगे श्रीराग गाईये । जो गाईवेसों वह मर्‍यो अदमी चैतन्य होय । तब श्रीराग साचो जांनिये ॥ याकी आलापचारी सप्तस्वरनमे किये ॥ राग वरतेसों जंत्रसों समाझिये । अनूपविलास ओर संगीत पारिजातसें ॥ रिषभ । ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

रि	रिषभ उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार

॥ इति श्रीराग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी पांचों रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों गाईकें । श्रीरागकी छायायुक्ति देखि पांच रागनी श्रीरागको दीनी ॥ तहां श्रीरागकी प्रथम

वसंत रागनी ताको स्वरूप लिख्यते ॥ नील कमलसों जाको श्याम रंगहै ओर विलासयुक्त है ॥ शरीरकी सुगंधसों जाके पास भवरा गुंजार करेहै ॥ मोर चंद्रिकासों चोटी गुहीहै । ओर काननमें आंबके मोर धरेहै। ऐसी जो रागनी तांहि वसंत जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसो गाईहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्णहै ॥ याको चार घडी उपरांति दिनके प्रथम पहरमें गाईये ॥ अरु वसंत पंचमीको मुख्य करिकें गाईये ॥ यह राग मंगलीकहै चाहो तब गावो ॥ याकी आलापचारि सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समझिये॥ संगीत दरपनसें । ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

श्रीरागकी प्रथम रागनी वसंत १ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी प्रथम रागनी वसंत संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी दूसरी रागनी मालवीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

याहूको शिवजीनें ईशान मुखसों गाईकें। श्रीरागकी छायायुक्ति देखि श्रीरागको दीनी । याको लोकीकमें मारवो कहतहै ॥ अथ मालवीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सचीक्कन जाकी कांति है। काननमें कुंडल पहरेहै। ओर मानीहै । तरुण स्त्री जाके मुखकों चुंबन करेहै । कंठमें माला पहरेहै । ओर संध्या समें संकेत घरमें पे हे । एसो जो राग ताहि मालवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनमें गायोहै ॥ नि स ग म ध नि । यातें औडव है । याको दिनके चोथे पहरकी छटी घडीमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चोथे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारि छे सुरनमें किये । राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें ग्रहांश । धैवत । न्यास । षड्ज ॥

श्रीरागकी द्वितीय रागनी मालवी (मारवा) २ (षाडव).

ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी द्वितीय मालवी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी तीसरी रागनी मालश्री ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ मालश्रीको शिवजीनें ईशान मुखसों गायके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि श्रीरागको दीनी ॥ अथ मालश्री रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर जाको नाजूक शरीर है॥ हाथसों लाल कमल फिरावे है। ओर आंबके वृक्षके नीचे बैठी है। मनमुसिकान करेहै। ऐसी जो रागनी तांहि मालश्री जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पहरकी पांचवी घडीमें गावनी। यह तो याको बखत है। अरु चोथे पहरमें चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें ग्रहांश। न्यास। षड्ज ॥

श्रीरागकी तीसरी रागनी मालश्री ३ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि नीचली सप्तककी मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	नि	निषाध चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी तीसरी मालश्री रागनी संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी चोथी रागनी आसावरी ताकी उत्पत्ति लि-ख्यते ॥ आसावरीको शिवजीनं ईशान मुखसों गाईके । श्रीरागकी छायायुक्ति देखि श्रीरागको दीनी ॥ अथ आसावरीको स्वरूप लिख्यते ॥ ऊजरो नीलमनीसों जाको रंग है । ओर मलयाचल पर्वतके शिखरमें बैठी है । ओर मोरचंद्रिकाके वस्त्र पहरे हैं । गजमोतिनकी माला जाके कंठमें है । ओर चंदनके वृक्षमें लिपटे सर्पकौषेत्विकैवको चूडा हाथनमें पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि आसावरी जांनिये । शास्त्रमें तो पांच सुरनमें गाई है । ध म रि स प ध । यातें औडव हैं । अथवा स रि म प ध नि सा । ऐसे कोऊक याको षाडव कहै । याको दिनके दूसरे पहरकी सातवी घडीमें गावनी । यह तो याको बखत हैं । ओर दिनके दुसरे पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किंये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये । नृत्य निर्णयसें ओर रागचंद्रोदयसें । ग्रहांश । मध्यम । न्यास । षड्ज ॥

श्रीरागकी चतुर्थ रागनी आसावरी ४ (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार
ग	मांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी चौथी आसावरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ आसावरी मार्गीको जंत्र लिख्यते.

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षडज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक		

॥ इति आसावरी मार्गीको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी पांचमी रागनी धनाश्री ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें धनाश्रीकों ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छायायुक्ति देखी श्रीरागको दीनी ॥ अथ धनाश्रीको स्वरूप लिख्यते ॥ दूवरीकेदलसों स्याम जाको रंग है। ओर अपनें प्रियकों चित्र आप लिखे है। विरहसों दूबरी है। ओर जाके विरहसों कपोलस्वेत है। नेत्रनके आसूनके प्रवाहसों कूचनकों धोवे है। ऐसी जो रागनी ताहि धनाश्री जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छ स्वरनमें गाई है। स रि ग म ध नि स। यातें षाडव है। ओर लौकिकमें याको संपूर्ण वा औडवभी कहे हैं। याको दिनके तीसरे पहरकी पांचमी घडीमें गाईये। यह तो याको बखत है। ओर यह रागनी मंगलीक है। चाहो जब गावो। याकी आलाप चारी छ सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें। ग्रह। न्यास। षड्ज॥

श्रीरागकी पांचवी रागनी धनाश्री ५ (षाडव).

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक		धैवत अंतर, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम असालि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी पांचमी धनाश्री रागनी संपूर्णम् ॥

अथ धनाश्री रागनी मार्गी (मियाकी) षाडव.

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा तीन

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति धनाश्री मियाकी मार्गी षाडव संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ मेघराग पार्वतीजीके मुखतें भयो । शिवजीके भाल नेत्रके तेजतें । तप्त भयो जो त्रैलोक्यताकी सीतलताके अरथ यह राग जलरूप है । याको श्रवणकरि त्रैलोक्य सीतल भया ॥ अथ मेघरागको स्वरूप लिख्यते ॥ नीले कमलसों जाको रंग है । ओर चंद्रमासों जाको मुख है । पीतांबर पहरे है । चातक जाकी याचना करे हैं । अमृतसी जाकी मंद मुसकानि है । ओर वीर पुरुषमें विराजमान है । ओर तरुण जाकी अवस्था है । ऐसा जो राग तांहि मेघ जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको आधिरात। समें गावनो घडी दोय तांई । यह तो याको बखत है । ओर चाहो जब गावो । यह राग सदाही मंगलीक है ॥ अथ मेघरागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो आकासमें वादल नही होय धूप पडती होय ता । समें मेघराग गाईये । जो गाईवे । सो तासमें मेह बरसने लगे । तब मेघराग साचो जांनिये । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें । ग्रहांश । धैवत । न्यास । षड्जमें ॥

अथ छठो राग मेघ ६ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय		

॥ इति मेघराग संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागके विभाग करि अपने मुखसों पार्वतीजीसों विनंति करि जो मेघराग तिहारे मुखसों उत्पत्ति भयो । यातें इन रागनीनमेंसों विभाग करि । अपने मुखसों गाईके मेघकी छायायुक्ति देखिके पांच रागनी मेघ रागको दीनी । ऐसे शिवजीकों वचन सुनि पार्वती शिवजीकों नमस्कार करिके । उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेकों । अपने मुखसों गाईके । मेघरागकी छायायुक्ति देखि । पांच रागनी मेघरागकों दीनी । तहां मेघरागकी प्रथम रागनी गोडमल्लारी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों प्रथम रागनी गोडमल्लारी गाईके । वाकों मेघरागकी छायायुक्ति देखि मेघरागकों दीनी ॥ अथ गोडमल्लारीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको वरण है । ओर तरुण अवस्था है । कंठको नाद कोकिलकोसों है । अरु गांनके बलसों पतिको सुमरन करेहैं दूबरी जाकी देहहै । ऐसी जो रागनी ताहि गोड मल्लारी जांनिये ॥ शास्त्रमें० । पांच सुरनमें० । ध नि रि ग म ॥ यातें औडव ओर लोकीकमें संपूर्ण कहेहै ॥ याको रातिके दूसरे पहरकी सातवी घडीमें गावनी । यह तो याको वक्तहै ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारि सात सुरनसों किये सो जंत्रसो समझिये ॥

मेघरागकी प्रथम रागनी गोड मल्लारी १ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, ऊपरलि सप्तककी मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागकी प्रथम गोडमल्लारी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी दूसरी रागनी देसकारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

पार्वतीजीनें रागनीनमेंसों विभाग करिके । अपने मुखसों देसकार गाईके । वाको मघकी छायायुक्ति देखि मेघरागको दीनी ॥ अथ देसकारको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके सुंदर केंस हे । अरु कमलपत्रसं बडे नेत्र है । कठोर कुच है ओर चंद्रमासों मुख है । अरु सुंदर शरीर है ओर भ्रतारके संग सुरत करत है । ऐसी जो रागनी तांहि देसकार रागनी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरकी छटी घडीमें गावनी । यह तो याको वक्त है। ओर दिनके तीसरे पहरमें चाहो तब गावो यह रागनी सुद्ध है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । सो जंत्रसों समझिये ॥

मेघरागकी द्वितीय रागनी देसकार २ (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मेघकी दुसरी रागनी देसकार संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी तीसरी रागनी भूपालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

पार्वतीजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको। अपने मुखसों भूपाली गाईके। ताको मेघरागकी छायायुक्त देखि मेघरागको दीनी ॥ अथ भूपालीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको वर्ण है। अरु केसरीको अंगराग किये है। ऊंचे कुच है। चंद्रमासो मुख है। मनोहर रूप है। विरहतें दुबरी भ्रतारको समरण करे है।

सात रस जुक्त है । ऐसी जो रागनी तांहि भूपाली जांनिये । शास्त्रमें तो सप्त स्वरनमे गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण ॥ अथवा पांच सुरनमें गाई है । सा रि म प ध सा । यातें ओडव है । याके रात्रिके प्रथम पहरकी चोथी घडीमें गावनी । यह तो याको बखत है । रात्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आ० । सात सु० । सो जंत्रसों समझिये ॥

मेघरागकी तृतीय रागनी भूपाली ३ (ओढव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मेघरागकी तीसरी भूपाली रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी चौथी रागनी गुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

पारवतीजीनें उनरागनमेंसों विभाग करिवेकों आपनें मुखसों गुजरी गाईके वाकों

मेघरागकी छायायुक्त देखी मेघरागको दीनी ॥ अथ गूजरीको स्वरूप लिख्यते ॥ सोलह बसरकी अवस्था है सुंदर जाके केश है ॥ चंदनके वृक्षके नीचे कोमल पल्लवनकी शेजमें बेठी है ॥ अरु वीणाके तारमें विचित्र सुरनको उच्चार करे है प्रवीण है ॥ ऐसी जो रागनी तांहि गुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमें सात सुरनमें गाईये । रि ग म प ध नि स रि । संपूर्ण । याको दिन दूसरे पहरकी प्रथम घडीमें गावनी यह तो याको वखत है । और दिनके दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये रागवरतेसो । जंत्रसों समझिये ॥

अथ मेघरागकी चतुर्थ रागनी गुजरी ४ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागकी चोथी रागनी गुजरी संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी पांचवी रागनी श्रीटंककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पारवतीजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको ॥ अपनें मुखसों श्रीटंक गाईके वाकों मेघरागकी छायायुक्त देखि मेघरागको दीनी ॥ अथ श्रीटंकको स्वरूप लिख्यते ॥ शास्त्रमें याको टंक लोकिकमें श्रीटंक कहेहै ॥ कमलनीके दलकी सेजपें सोवे है ॥ ओर वियोगनीहै उद्विग्न जाको चित्तहै ॥ ऐसी अपनी प्रियाको देखिके वासों संभाषण करिवेको उत्कंठित । ऐसो जो सुवर्णकोसों जाको देह को रंग है ओर अपने घरमें आयो । ऐसो जो राग तांहि श्रीटंक जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है ॥ याको दिनके दुसरे पहरकी दुसरी घडीमें गावनी ॥ याको यो वखत है ओर चाहो जब गावो यह मंगलीक है । यह राग सुद्ध है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसो । जंत्रसों समझिये ॥

अथ मेघरागकी पांचवी रागनी श्रीटंक ५ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक

म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रे	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार

॥ इति मेघरागकी पांचवी श्रीटंक रागनी संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको प्रथम पुत्र बंगाल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होय करि उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । भैरवकी छाया युक्ति देखि वाको बंगाल नाम करिकें । भैरव रागको पुत्र दीनों ॥ अथ बंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ जो पवित्र होईकें कुशनके आसनपर बैठके रुद्राक्षकी मालासों आपके इष्ट शिवको जप करे है । शुभजनेऊ जाके कंठमे है वेदको पाठि है । सुफेद वस्त्रनको पहेरे है । सोनेकी झारि जाके आगे धरी है । और नृत्य गीत जाको प्यारे है । ऐसो जो राग ताहि बंगाली जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसो गायो है । स ग म प नि सा । यातें औडव है । याको सूर्यउदय समयमें गावनों यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं जाकी शिवाय बुद्धि होय यासों वरति लीजिये ॥ इति बंगाल संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको दुसरो पुत्र पंचम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । अघोर नाम मुखसों गाईकें भैरवकी छाया युक्ति देखि । वाको पंचमनाम करिके भैरवको पुत्र दीनो ॥ अथ पंचमको

स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पानको बिडा हाथमें है । दुसरे हाथमें स्वेत कमल फिरावे है । कोमल केश मधुर ताके वचन है। पीतांबर पहरे है । कर्पूर अगर चंदन कस्तूरी आको अंगराग शरीरमें लगाये है । माथेपें मुकुट है । भालमें जाके चंद्रमा विराजे है । ऐसो जो राग ताहि पंचम जानिये ॥ शास्त्रमें तो पांच सुरनसो गायो है । स ग प ध नि स । यातें औडव है । याकों रातिके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है पहरदिन चढे पहले चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें कियें राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं या जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुध्दि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति पंचम संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको तीसरो पुत्र मधुर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिकें अघोर मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि । वाको मधुर नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ मधुरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है ॥ पायननूपर पहरे है ॥ मधुर जो वीणाके सुरमें मिलिके गाये है ॥ अरु स्वर्गमें जाको वास है जो पृथ्वीमें नहीं रह है ॥ सगरी विद्यानकी खानि है अरु गुनीनमें सिरोमनि है अरु लाल चोलना पहरे है ॥ माथेपें फेटा है ॥ लाल दूपटा कांधेपे है ओर सुनिवेवारे पुरुषको मन वस करे है ॥ ऐसो जो राग ताहि मधुर जानिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गायो है । म प ध नि स रि ग म। यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दुपहरसों ईच्छाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कियें राग वरतें यह राग सुन्यो चहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुध्दि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति मधुर संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको चोथो पुत्र हरष ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिकें । अघोर नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखी हरष नाम करिके भैरवको दीनों । अथ हरषको स्वरूप लिख्यते ॥ ताको आनंदसो मुख प्रफुल्लित है ॥ हाथनमें करताल लिये है । घेरदार नाफर-वानी रंगको चोलना पहरे है ॥ ओर माथेपें लिलो फेटा है ॥ ताके उपर माथेपें सिरपेंच बांधे है । ओर कंठनमें मोतिनके हार पहरे है काननमें कुंडल पहरे है ॥ सुभ्र दुपटा ओढे है । अरु उतावलो बोल है ॥ गोरो जाको अंग है ॥ ऐसो जो

राग तांहि हरष जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायो है। ध नि स म ग ध। यातें औडव है। याको दिनकें प्रथम पहरमें गावनों। यह तो याको वखत है। ओर दुपेरतांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति हरष संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको पांचवो पुत्र देषाख ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों। अघोर नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि। वाको देषाख नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों॥ अथ देषाखको स्वरूप लिख्यते॥ जाके माथेपें सिंदूरकी बिंदी है। नेत्रनमें वीर रस झलक है। बलसों बन्यो है। ओर जीतिसों जाको जसहै। जाके पुष्ट भुजदंडनमें रजलगिरहो है। मल्ल जुद्धमें प्रवीण है। बडो जाको क्रोध है। मल्लपनेकी ध्वजा जाके हाथमें है। ओर भीमसेन वा हनुमानके समान जाके बल है। ओर शरीर है। लातसों बेरीकी छातिकों दाबे है। ऐसो जो राग तांहि देषाख जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छ सुरनसों गायो है। म प ध नि स ग। यातें षाडव है। याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों। यह तो याको बखत ओर दिनके दोय पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलाप छ सुरनमें किये राग वरते यह राम सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्जो ॥ इति देषाख संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको छटो पुत्र ललित ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होयके उन रागनमेंसो विभाग करिवेको। अघोर नाम मुखसों गाईके। भैरवकी छाया युक्ति देखी। वाको ललित नाम करिके भैरवकों पुत्र दीनों ॥ अथ ललितको स्वरूप लिख्यतें ॥ जाके भालमें केसरिको तिलक है। ओर चंदनकी कोर है। ताके बीचमें चंदनेको विंदा है। वीजुरीसों गोरो अंग है। गलेमें चंपाके फूलनकी माला पहरे है। हाथमें पके नागरवेलिके बीडा है। फूलवाडीकी जाके पोसाग है। ओर बडो विलासी है तरुण अवस्था है। मतवारे हाथीकीसी चाल है। कामदेवसों सुंदर है। ऐसो जो राग तांहि ललित जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायो है। स ग म ध नि स। यातें औडव है। याको सूर्यको

उदयसमयमें गावनों । यह तो याको बखत है । और दिनके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरतें ॥ हींडोल रागकी पांचवी । ५ । ललित तहां याको जंत्र है ॥ इति भैरव रागको छटो पुत्र ललित संपूर्णम् ॥

अथ भैरव रागको सातवो पुत्र बिलावल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिके । अघोर नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि । वाको बिलावल नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ बिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके हृदय केसरी अरु चंदनसों चर्चित है । सुफेद वस्त्र पहेरे है । माथेपें जडावु मुकुट है । काननमें मणिके जडे कुंडल है । गोरो जाको रंग है । एक हाथमें कमल फिरावे है । बांई हाथमें ताल बजावे है । एक हाथसों धीं धीं धि धि किट या प्रकार मृदंग बजावे है । ऐसो जो राग तांहि बिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । ग प ध नि सा रि ग । याते संपूर्ण है । दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । दिनके दूसरे पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमे किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

भैरव रागको सातवो पुत्र बिलावल ७ (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मीडिके मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा ६

॥ इति भैरव रागको सातवो पुत्र बिलावल संपूर्णम् ॥

अथ भैरव रागको आठवो पुत्र माधव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको सद्यो जात नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि । वांको माधव नाम करिकें भैरवको पुत्र दीनों । अथ माधवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है बडो तेज है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। मोतिनकी माला कंठमें है । कामदेवके समान जाको रूप है । और सोनेके मणिजडित कुंडल जाके कानमें है । बीन बजावे है । चतुरनके मनको मोहे है । ऐसो जो राग तांहि माधव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो छह सुरनसों गाया है । ग म ध नि स रि ग । यातें षाडव है । दुपहर तांहि चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी छह सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरति लीजिये ॥ इति माधव संपूर्णम् ॥ इति भैरव पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ मालकोसको पुत्र नंदन ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें प्रसन्न होईकें वामदेव नाम मुखसों गाईके मालकोसकी छाया युक्ति देखी । वांको नंदन नाम करिके मालकोसको पुत्र दीनों । अथ नंदनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो अंग है केसरीको तिलक ललाटपे है । जाके एक हाथमें लकुट है । अरु एक हाथमें पंचरंगी गेंद है । मोतिनके हार गलेमें है । मोतिनके कुंडल जाके कानमें है । नील कलंगी माथेपे है । जरीको पेचा बांधे है । अरु सोसनी वस्त्र पहरे है बडो नेत्र है । सोनेका गहना पहरे है । ऐसो जो राग तांहि नंदन जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें

संपूर्ण है । याको रातिके चौथे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । दिनके दुसरे पहर तांई गावनो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नही यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत लीज्यो ॥ इति मालकोसको पुत्र नंदन संपूर्णम् ॥

अथ मालकोसको पुत्र खोखर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसो विभाग करिबेको वामदेव नाम मुखसों गाईके मालकोसकी छाया युक्ति देखि वांको खोखर नाम करिके मालकोसको दीनो । अथ खोखरको स्वरूप लिख्यते ॥ जो हाथसों ताल बजावे है सब गुनी-नमें सिरोमणि है । ओर ढोलकके परननके संग गान करे हैं । उजरी पोसाग पहरे है । ईंद्रके मनको हरष उपजावे है । ओर गंधर्वको नायक है नृत्यमें गानमें प्रवीन है सुरतीत मूर्छना सुद्ध जाने हैं नटवर भेष धारे है । ऐसो जो राग तांहि खोखर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरमें मायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको बखत हैं । ओर दिनके दोय पहरमें चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरति लीजिये॥ इति खोखर मालको-सको पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलके आठ पुत्रनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

प्रथम पुत्र बंगाल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सो विभाग करिवेको । सद्यो जात नाम मुखसों गाईके हींडोलकी छाया युक्ति देखि वांको बंगाल नाम करिके हींडोलको पुत्र दीनो । अथ बंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो अंग है विचित्र वस्त्र पहरे है । ओर ओरबदार मोतीनकी माला कंठमें हैं । अपने शरीरकीसों कामदेवको जीत है । मधुर सुरसों ताल बजावे है। मुखसों ॐकार उच्चार करे है । मणिनको जडाउ मुकट जाके माथेपे बिराजे है। सबजनको मन वस करे है। मंद मुसकान करे है । सब रागको राजा है। ऐसो जो राग तांहि बंगाल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । यांको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो

याको वखत है । ओर दिनके दोय प्रहर तांई चावो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ इति बंगाल संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको दुसरो पुत्र चंद्रबिंब ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखि । वांको चंद्रबिंबनाम करिकें हिंडोलकु पुत्र दीनों ॥ अथ चंद्रबिंबको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है ॥ अमोलक ढोलक जाके कांखमें है ॥ रंग बिरंगे फूलनकी माल जाके कंठमें विराजमान है ॥ कमल पत्रसे जाके नेत्र है ॥ हाथसों कमल फिरावे है ॥ अरु जाके मुखमें कमलकी सुगंधि है ॥ तासों भवर गुंजारकर है ॥ लाल वस्त्र पहरे है ॥ सोनेके आभुषन पहरे है ॥ ऐसो जो राग सो चंद्रबिंब जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है ॥ म म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है ॥ याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको वखत है ॥ ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें यंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि होय सों वरतली ज्यो ॥ इति हिंडोलको पुत्र चंद्रबिंब संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको तिसरो पुत्र सुभ्रांग ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको सद्योजात नाम मुखसों गायकें हिंडोलकी छाया युक्ति देखि वांको सुभ्रांग नाम कीनों ॥ अथ सुभ्रांगको स्वरूप लिख्यते ॥ केसरिको सो जाको रंग है। अंगनमें आभूषन फूलनके है केसरि। चंदनकों अंगराग अंगनमें किये है । अरु हाथनसों ताल बजावे है । सुपेद वस्त्र पहरे हैं । स्त्रीनको हसावे है । आप हसे है । आनंदमें मग्न है। खंजनसे चपल नेत्र है । ऐसो जो राग तांहि सुभ्रांग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसो गायो है ॥ स ग म प ध नि स । यातें षाडव है ॥ याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको वखत है ॥ ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो ॥ याकी आलापा चारी छह सुरनमे है ॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति सुभ्रांग संपर्णम्॥

अथ हिंडोलको चोथो पुत्र आनंद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ॥ सद्योजात नाम मुखसों गाईकें हिंडोलकी छाया युक्ति देखि । वांको आनंद नाम करिकें हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ आनंदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है ॥ स्वेत वस्त्र पहरे है ॥ तांबूलके रससों दांतनकी पंक्ति जाकी लाल है ॥ शरीरमें चंदनकों अंगराग लग्यो है ॥ अरु देवांगनानके मनको वसिकरे है ॥ हाथनसों ताल बजावे है ॥ अरु मधुर राग गावे है ॥ याकों लोकमें नाजर कहे है ॥ देवांगना जाके संग है ॥ ऐसो जो राग तांहि आनंद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है ॥ म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है ॥ याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको बखत है । ओर दिनके दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति आनंद संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको पांचवो पुत्र बिभास ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । सद्योजात नाम मुखसों गाईकें हिंडोलकी छाया युक्ति देखी वांको विभाग करिके हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ विभासको स्वरूप लिख्यते ॥ सर्द कालको संपूरन चंद्रमासों जाको मुख है । गोरो जाको अंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । चंचल जाके नेत्र है ॥ प्रीतिमें मग्न है । अरु केसरीको रंग जाके भालमें है । फूलनकी माला जाके कंठमें विराजे है । मणिनके जडाउ आभूषन जाके कंठमें है । मनमान्यो विहार करे है । हाथमें सूवाको पढवा है । तरुण जाकी अवस्था है । ओर जाके अधरामृत चूवे है । ऐसो जो राग तांहि बिभास जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । ग प ध स नि ध प म ग रि स म । यातें संपूर्ण है । याको रातिके चोथी पहरसों लेके सूर्यके उदय पहले गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दिनके प्रथम पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग बरते सो जंत्रसें समझिये ॥

हिंडोलको पांचवो पुत्र बिभास–संपूर्ण ॥

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद् उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोलको पांचवो पुत्र बिभासको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको छटो पुत्र वर्धन ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिके । सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी । वांको वर्धन नाम करिके हिंडोलको पुत्र दीनो । अथ वर्धनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । केसरकी खोल ललाटमें है । माथेपें मुकुट है । सुपेद वस्त्र पहरे हैं । हाथनमें जाके खड्ग है ।

हीरानके जडाऊ आभूषन पहरे है। महत तरुण सुंदर स्त्री जाके संग है। वीररसमें मग्न है। ओर कल्पवृक्षकी छायामें मनभाई क्रीडा करे है। मोतिनके हार पहरे है। ऐसो जो राग तांहि वर्धन जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। प ध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है ॥ याको दिनके दुसरे पहरमें गावनों ॥ यह तो याको बखत है। ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलाप सात सुरनमें किये राग वरते ॥ यह राग सुन्यो नहीं याते जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति वर्धन संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको सातवो पुत्र वसंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी। वांको वसंत नाम करिके हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ वसंतको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। लाल वस्त्र पहरे है। माथेपें मुकुट है। मोतिनकी माला जाके गरेमें है। ओर फूवागनकी फूलवारी सरोवरनेंमें जाकी प्रीति है। अरु फूलनकी सुगंध जाके अंग अंगनमें है। ओर वोरपास जाके भौरानकी समह गुंजार करे है। मुखमें बीडा खाय है। सींगी मुखसो बजावे है। पग नूपुरकी झनकारसों तरुनीनके मनको हरष उपजावे है। कामदेवको मित्र है। ऐसो जो राग ताहि वसंत जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो यह तो याको बखत है। अरु वसंत पंचमीके दिन ओर सब ऋतुनमें सब समेमे गावनों। यह राम मंगलीक है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते ॥ इति वसंत संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको आठवो पुत्र विनोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखिके। वांको विनोद नाम करिके हिंडोलको पुत्र दिनो॥ अथ विनोदको स्वरूप लिख्यते॥ सोनेसो अंग है। हाथमें पानको बीडा है। सुंदर तिलक जाके ललाटमें है। माथेपें जाके चंद्रमाकी कला है। अरु अलकनकी छबिसुं

सुख उपजावे है। स्वेत वस्त्र पहरे है। सोनेका कडा जाके हाथमें है। गरेमें मोतिनकी माला हैं। काननमें जाके कुंडल है। कपोलनमें मुकटकी झलक पडे है। हाथमें वीणा बजावे है। प्रसन्न जाको मन हैं। सरीरमें सुगंधकी लपट आवे है। ऐसो जो राग तांहि विनोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। स रि म प ध नि स। यातें षाडव है। याकों दुसरे पहरमें गावनो। यह तो याको बखत है। ओर चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है। याकी आलाप चारी छह सुरनमें किये राग वरते॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुध्दि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति विनोद राग संपूर्णम् ॥

॥ इति हिंडोलके आठ पुत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ दीपकके आठ पुत्रकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

अथ दीपकको प्रथम पुत्र कुसुम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईकें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको। तत्पुरुष नाम मुखसों गाईके दीपककी छायायुक्ति देखि वांको कुसुम नाम करिके दीपकको पुत्र दीनो॥ अथ कुसुमको स्वरूप लिख्यते ॥ वांके वोर पास भोंरानकें समूह गुंजार करे है। कमलनके आसनपें बेठो है। ओर कमल जाके दोऊ हाथनमें हैं। गोरोजाको रंग हैं। श्वेत वस्त्र पहरे है। मोतीनकी माला पहरे है। हाथनमें कडा पहरे है। माथेपें जाके मुकुट है। ऐसो जो राग ताहि कुसुम जांनिये॥शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है॥ स ध नि स ग म प। यातें षाडव है॥ याको दिनके दूसरे पहरमें गावनो। यह तो याको वखत हैं। ओर दोय पहर उपरांति चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुध्दि होयसों वरत लीजिये ॥ इति कुसुम संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको दूसरो पुत्र कुसुम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। तत्पुरुष नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि दीपककों पुत्र दीनों ॥ अथ कुसुमको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंगहै। लाल वस्त्र पहरेहै। कमलके आसनपें बेठोहै। अरु कमल जाके

हाथनमेंहै । माथेपें मुकुटहै । सोनेके आभूषन पहरेहै । अपनें समान मित्रको बतलावेहै ॥ ऐसो जो राग तांहि कुसुम जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायोहै । स नि प स ग म । यातें औडवहै ।याको दिनके तीसरे पहरमें गावनो यहतो याको वखतहै । ओर संध्यातांई चाहो तब गावो । याको आलापचारी पांच सुरनमें किये । राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसों वरत लीजिये ॥ इति कुसुम संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको तीसरो पुत्र राम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको दीपककी छाया युक्ति देखि। वांको नाम राम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ रामको स्वरूप लिख्यते।। गोरोजाको रंगहै । कल्पवृक्षकी छायामें रत्नसिंहासनपें बेठोहैं । रंगबिरंगें वस्त्र पहरेहै । अनेक आभूषन पहरेहै । सखीजाके पीछे ठाडी पंखा करहै ॥ आगेकू हाथ जोरि ठाडी जो अपनी स्त्री तिनसों बात करेहै ॥ ऐसा जो राग तांहि राम जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायोहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको बखत ओर दिनके दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलाप सात सुरनमें किये । राग वरते ॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत लीज्यो ॥ इति राम राग संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको चोथो पुत्र कुंतल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों गाईकें दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको कुंतल नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ कुंतलको स्वरूप लिख्यते ॥ जो पदार्थ सुनेहेसो जाको याद रहे है । ओर जो बांसरीमें रागनीकी आलापचारी करेहै ॥ चंपाके फूलनकी माला गरेमेंहै । एक हाथसों ताल बजावेहै। पीतांबर पहरेहै। गोरो जाको अंगहै । सुंदर फुले कमलकी चोकीपें बेठोहै । दोऊ वोर चवर जाके उपर ढुले है। बडे नेत्रहै । सोनेके आभूषन पहरेहै ॥ ऐसो जो राग तांहि कुंतल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायोहै । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्णहै । याको ग्रीष्म ऋतुमें दुप-

हरके समयमें गावनों ॥ यहतो याको वखत है दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत लीज्यो ॥ इति कुंतल संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको पांचवो पुत्र कलिंग याको लोकिकमें कलिंगडो कहे है ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईकें उन राग-नमेंसों विभाग करिवेकों । सद्योजात नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको कलिंग नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ कलिंगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । केसरीकी खोल जाके ललाटमें है । मुखमें बीडा खाय है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । बांईकोर कमरमें जाके कटारी है । ओर हाथनमें जाके खड्ग है । जाके मनमें क्रोध है । युद्धके लिये सिंहनाद करे है जाके रूपकूं देखि बैरीनके हिय धरके है । बडो बलवंत है । युद्धके लिये बांह जाकी फरके है । ऐसो जो राग तांहि कलिंग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । म म रि स स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों । जंत्रसों समझिये ॥

दीपकको पांचवो पुत्र कलिंगडो संपूर्ण ॥

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद् चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति दीपकको पांचवो पुत्र कलिंग संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको छटो पुत्र बहुल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । सद्योजात नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको बहुल नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ बहुलको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके अरुण कमलसे नेत्र है । हाथमें बीडीनको डब्बा लिया है । चंद्रमासों मुख है मुखमें पान खाय है । ताके पीक जाके कंठमें झलक है । और पानडीके कुंडल बनाय काननमें झलक है । नागरि वेलिका पाननसों जाकी फेंट भरी है । जाके मित्रहू बीडा बहुत खाय है। उनहींके संग रहे है । सोनेके आभूषन पहरे है । गोरो जाको अंग है । सुपेद वस्त्र पहरे है । ऐसो जो राग तांहि बहुल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो छह सुरनसों गायो है । ग प ध नि स नि ध प म ग । यातें षाडव है । दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलाप चारि छह सुरनमें किये राग वरते सों । जंत्रसों समझिये ॥

अथ दीपकको छटो पुत्र बहुल षाडव (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति दीपकको छटो पुत्र बहुल षाडव संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको सातवो पुत्र चंपक ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको चंपक नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ चंपकको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । हाथमें कमल है । लाल कमलसे जाके नेत्र है । कमलसों जाको मुख है । जाको शरीर हरषसो प्रफुल्लित है । जडावु मुकुट माथेपें है । काननमें कुंडल है । सुपद अरु पीरे वस्त्र पहेरे है । बडि जाकी छबि है । ग्रीष्म ऋतुमें दुपहरको सरोवरके निकट सघन वृक्षकी छायामें विश्राम करे है। वीणा हाथमें बजावे है । ऐसो जो राग तांहि चंपक जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दोय पहरमें गावनों यह तो याको वखत है । दिनके तीसरे पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सि० ॥ इति दीपकको सातवो पुत्र चंपक संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको आठवो पुत्र हेम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । सद्योजात नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको हेम नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ हेमको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । मंदमुसकानयुक्त जाको मुख है । कोकिलसों कंठ है । जो बचन सुनि कामनीनके चित्तलल चावे है । पक्के नागरवेलके पान सुप्रसन्न रहे है । विडाके खाविवारे जाके मित्र है । ऐसो जो राग तांहि हेम जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों यहतो याको वखत है । रातिके दोय पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें राग वरते सो जंत्रसें समझिये ॥

दीपकको आठवो पुत्र हेम संपूर्ण ॥

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति हेम संपूर्णम् ॥ इति दीपक पुत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीरागके पुत्र नव ॥

तहां प्रथम पुत्र सैंधव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । सैंधव नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ सैंधवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंगहै । रंगबिरंगे वस्त्र पहेरेहै । पाखरके घोडापर चढेहै । माथेपें ताकें झिलमल टोपहै। जाके दाहिने हाथमें नागी तरवारहै । वीररसमें मग्नहै । कालिके चरणारविंदको ध्यानहै । बडो बलवानहै । जाके नेत्रनमें क्रोध झलकहै । युद्धमें बडो बीरके संघार करहै । ओर बडो उद्धतहै ॥ ऐसो जो राग तांहि सैंधव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायोहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्णहै । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखतहै । संग्राममें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनपें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । जाकी सिवा० ॥ इति श्रीरागको प्रथम पुत्र सैंधव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको दूसरो पुत्र मालव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरामकी छाया युक्ति देखि । वांको मालव नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ मालवको स्व० ॥ गोरो जाको रंग है । फूले कमलसों मुख है । सूर्यको सो तेज है । संपूर्ण पृथ्वीको राजा है । अरु विसाल कमलसे जाके नेत्र है । गरेमें कमलकी माला पहेर है । सिंहासनपें बेठो है। माथेपें मुकुट है। हाथनमें कमल फिरावे है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । अनेक प्रकारके आभूषन पहरे है । जाके ऊपर चवर ढुले है। अरु छत्र फिरे है । जगतमें जाकी आज्ञा रुकतनाहिं । ऐसो जो राग तांहि मालव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायो है । स नि प ग म । यातें औडव है । दिनके तीसरे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । दोय पहर उपर चाहो तब गावो । यह राम सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि० ॥ इति मालव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको तीसरो पुत्र गौड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी

छाया युक्ति देखि । वांको गौड नाम करिकें श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गौडको स्वरूप लि० ॥ गोरो जाको अंग है । चंदनको तिलक जाके ललाटमें है । काननमें कुंडल है । मुखमें बीडा चाव है । सुपेद वस्त्र पहरे है । गलेमें माला पहरे है । नारायणकी पूजा करे है । कोकिलकेसे मधुर स्वरसें स्तुति करे है । ऐसो जो राग तांहि गौड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध स । यातें षाडव है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनो यह तो याको बखत है । अरु पहर रात गयातांई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि० ॥ इति श्रीरागको तीसरो पुत्र गौड संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको चोथो पुत्र गंभीर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गंभीर नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गंभीरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । जामें भोंरा गुंजार करे है । ऐसो कमल जो हाथमें है । ओर मुकुट माथेपें है । मोतिनकी माला कंठमे है । एक हाथसों ताल बजावे है । जाके चित्तमें बडी प्रीति है । बडो सुखी है । मगरमछपें बेठ्यो है । क्रीडा करे है । ऐसो जो राग तांहि गंभीर जांनिये ॥ शास्त्रेंम तो यह सात सुरनसों गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको सांजसमें गावनों यह तो याको बखत है । रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरन किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकि सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति गंभीर संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको पांचवो पुत्र गुणसागर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गायके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गुणसागर नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गुणसागरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । माथपें मुकुट है । जडाऊ कुंडल पहरे है । अरु हाथनमें सोनेका कडा है । रति करिके युक्त है । अनेक फूलनकी माला पहरे है । सर्व गुन युक्त है । रत्नाकरके समुद्रके बीचमें खेल करे है । फूलफूलनसों ओर कमलनसों सखीनके संग प्रेम युद्ध करे है ।

ओर ब्रह्म जाति है। कामदेवसों सुद्धे है। ऐसो जो राग तांहि गुणसागर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। म प ध नि स रि ग म। यातें संपूर्ण है। याको दो पहरमें गावनो यह तो याको बखत है। दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सु० यातें० जाकी सिवाय० ॥ इति गुणसागर संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको छटो पुत्र विगड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि। वांको विगड नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ विगडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरोचनसों गोरो जाको अंग है। रंगबिरंग वस्त्र पहरे है। माथेपें जाके मुकुट है। सोनेका कडा जाके हाथनमें है। हाथमें जाके बीडा है। कामदेवके समान रूप है। सखीनके संग अंतरको आदिले सुगंध लगावे है। ओर कोककलामें निपुन है। धनुषविद्या जाने है। ऐसो जो राग तांहि विगड जांनिये ॥ शास्त्रमें छ सुरनसों गायो है। ग म प नि स रि म। यातें षाडव है। याको सायंकालसमें गावनो यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति विगड संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको सातवो पुत्र कल्याण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाम करिवेको। ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि। वांको कल्याण नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ कल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। सुंदर वस्त्र पहरे है। हीरामोती रत्नजडे सिंहासनपें बेठ्यो है। जडावु मुकुट माथेपें है। छत्र जाके उपर फिरे है। जाके दोऊ मोर चवर ढुरे है। ओर जो राजसभा कर बेठ्यो है। मुखमें बीडा खाय है। जाकी सुगंधसों भौरा गुंजार करे है। मोतिनको गरेमें हार है। बडे नेत्र है। ऐसो जो राग तांहि कल्याण जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। ग म ध रि स नि ध प म स रि ग। यातें संपूर्ण है। याको रातिके प्रथम पहरमें गावनो यह तो याको बखत है। रातिके दोपहरताँई चाहो

तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्या नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि हो० ॥ इति कल्याण राग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको आठवो पुत्र कुंभ ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। ईशान नाम मुखसों गाईको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि। वांको कुंभ नाम करिकें। श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ कुंभको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेसो जाको रंग है। स्वेत वस्त्र पहरे है। माथेपें जाके मुकुट है। फूल जाके काननमें है। झलझलातो सोनेको कमल जाके हाथमें है। जाके दोऊ मोर चवर ढुले है। चंदन धूप पुष्प या अक्षत इनसों मंगलाचार करे है। ओर पास संगकी सखीनके मधुर सुरनसों गावे है। ऐसो जो राग तांहि कुंभ जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है ॥ स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्या समें गावनो यह तो याको बखत है ॥ रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बु० ॥ इति कुंभ राग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको नववो पुत्र गड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी छाया युक्ति देखि। वांको गड नाम करिकें श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ गडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको स्वरूप है। स्वेत वस्त्र पहरे है। कमलपत्रसे नेत्र है। काननमें कुंडल है। ओर सोनेके कडा जाके हाथनमें है। ओर चित्रनके संग वार्ता आलाप करे है। मोतीनकी माला जाके कंठमें है। माथेपें जाके मुकुट है। ऐसो जो राग तांहि गड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो पांच सुरनसों गायो है ॥ प ध म ध नि स नि ध प। यातें औडव है। याको दिनके चोथे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते। यह राग सु० जाते जं० ॥ जाकी० ॥ इति श्रीरागको नववो पुत्र गड संपूर्णम् ॥ इति श्रीराग पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागके पुत्र आठकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पांच रागनीसहित मेघरागन शिवजीकी आज्ञातें। पार्वतीजीकों गान श्रुतिसों प्रसन्न कीनों।

तब पार्वतीजीनें प्रसन्न होईकें वांको वरदान आठ पुत्र दीनों ॥ तहां प्रथम मेघ-रागको पुत्र नग ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईकें उन रागनमें सों विभाग करिवेकों । अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वाकों नग नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ नगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । सुपेद वस्त्र पहरे है । विसाल कमलसे जाके नेत्र है । माथेपें मुकुट है। गलेमें गज मोतीनकी माला है। मन्यनसों जडे सोनेके आभूषन पहरे है। बहुत सुख करिके देवतानकी सभामें इंद्रसो अधिक जाकी छबी है । जाको सेज जग मम है । ऐसो जो राग तांहि नग जांनिये सास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याकों संध्या समें गावनो यह तो याको वखत है । ओर रातिके चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नही जाकी शिवाय बुध्दि होय सो वरति लीजिये ॥ इति मेघ रागको प्रथम पुत्र नग संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको दूसरो पुत्र कान्हरो ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेसों विभाग करिवेकों । अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि वांको कान्हरो नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ कान्हराको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । केसरका वस्त्र पहरे है । हीराकी सोनाकी देहकी दुति है। कामदेवके समान जाको रूप है । ओर जाके दांत है । हाथनमें जडावु कडा है । गरेमें मोतिनके हार पहरे है । माथेपें मुकुट है । कांननमें जडावु कुंडल है । अनेक प्रकारके सुगंधको फुलनसो सुगंधित जाको अंग है। सोनेके आभूषण पहरे है। संगीत सास्त्रमें सुघर है ॥ ऐसो जो राग तांहि कान्हरो जांनिये । सास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है । प ध नि स रि ग म प । यातें संपूर्ण है । याकों रातिके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । ओर रातिके दोय पहरतांई चाहो तब गावो । बाकी आलाप-चारी सात सुरमें किये राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नही जाकी शिवाय बुध्दि होय । सो वरत लीजियो । इति मेघरागको दूसरो पुत्र कान्हरो संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको तिसरो पुत्र सारंग ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों आपनें श्रीमुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको सारंग नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों ॥
अथ सारंगको स्वरूप लिख्यते । स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । मणिनसों जडाऊ मुकुट जाके माथेपे है। वनमाला पहरे है। च्यारुजाके भूजा है। बानसहित सारंग धनुष सुदर्शन संख ओर चक्र आर गदा ये सस्त्र हाथमें लिया है। बांई कोर जाके लक्ष्मी गरूडके उपर असवार है। ऐसो जो राग तांहि सारंग जांनिये। सास्त्रमें यह तो सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स यातें संपूर्ण है। याकों दिनके दुसरे पहरमें गावनो यह तो याको वखत है। ओर दिनमें चाहो तब गावों । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये राग वरतें सो । जंत्रसों समझिये॥

मेघरागको तीसरो पुत्र सारंग (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दो
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गंधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषांद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मेघरागको तीसरो पुत्र सारंग संपूर्णम् ॥

अथ मेंघरागको चोथो पुत्र केदारो ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागमेंसों विभाग करिवेको । अपनें श्रीमुखसों गाईके मेघकी छाया युक्ति देखि । वांको केदारो नाम करिके मेघरागको दीनों ॥ अथ केदारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । सुपेद धोवती उपरना पहरें है । बांयें हाथमें जाके त्रिशूल है । डाये हातमें दंड है । योगासन सों बेठो है । योगाभ्याससों मनमें शिवजीको ध्यान करे है । कामदेवको जानें जीत्यो है । लाल कमलसे जाके नेत्र है । सरपकी जाके जनेऊ है । सिरपें जटाजूट धारे है । भालमें जाके चंद्रमा है । ऐसो जो राग तांहि केदारो जांनिये । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है ॥ नि ध प ग ग रि स नि । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । येतो याको वखत है । और रातीके दोपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरते ॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो महीं । जाकी सिवाय बुध्दि होय सो वरत लीज्यो । इति मेघरागको चोथो पुत्र केदारो संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको पांचवो पुत्र गोड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें श्रीमुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गोड नाम करिकें मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गोडको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । वगतर पहरे है । माथेपें मुकुट है । वा

मुकुटको जामोनकें नवीन पल्कनसों ढांके है । ललाटमें भसमनको त्रिपुंड है । दाहिनें हातमें माला है । क्रोधसो उपर चढे है । भीलनके समूह जाकें संग है । गज मोतीयनकी माला पहरे है । मृगनकी शिकारमें निपुन है । रौद्रमें मग्न है । मनमें शिवजीको ध्यान धरे है । ब्रह्मचारी है । ऐसो जो राग ताहि गोड जांनिये । शास्त्रमेंतो सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको ग्रीष्ममें दूपरीकों गावनों यहतो याको वखत है । ओर ग्रीष्ममें चाहो तब मावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरतें सो जंत्रसो समझिये ॥

मेघरागको पांचवो पुत्र गोड (संपूर्ण ५).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गंधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

म	ध्यम उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागको पांचवो पुत्र गोड संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको छटो पुत्र मल्लारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेंको। अपनें श्रीमुखतें गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि। वांको मल्लार नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों॥ अथ मल्लारकों स्वरूप लिख्यते ॥ श्यामजाको रंग हे। भयानक जाको भेष है। सर्पकी माला गरेमें पहरे है। फूलनकी आभूषण पहरे है। स्त्रीजाके संग है। विंध्याचलमें वस है। केलकेपत्रनकों पहरे है। केलहीके वलकनको मुकुट पहरे है। मोरनके गरेमें फासि नाखि उनके पंख उखारे है। जाके दोनू हातनमें धनुषबान है। कमरमें कटिआरि है। तीखो छुरा है। ऐसो जो राग तांहि मल्लार जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। नि ध प म ग रि स। स रि ग म प ध नि। यातें संपूर्ण है। याको वर्षाऋतुमें गावनों यहतो याको वखत है। ओर वरषा होय तब चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है ॥ याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सों वरत लीजो ॥ इति मेघरागको छटो पुत्र मल्लार संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको सातवो पुत्र जालंधरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईकें उन रागनमेंसों विभाग करिवेंको अपनें श्रीमुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि। वांको जालंधर नाम करिकें मेघरागको पु० ॥ अथ जालंधरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोपगोपी गायबछा तिनके हेत गोवर्द्धन पर्वतको वांमे हाथकी चटि आंगुरीसों उठाईकें सात दिन तांई धारन करतो भयो स्याम जाको रंग है। पीतांबर पराव है। मुरली बजावे है। मूसलधार मेहकी झडी लगी रही है। बडी जामें गर्जना है। ऐसो पोंन चले है। तासमें इंद्रको मद जीत्यो है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। अर गोकुलको रख-

वारो है । नानाप्रकारके आभूषण पहरे है । माथेपें मोर मुकुट है । ऐसो जो राग तांहि जालंधर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है । स ग म प ध नि स । यातें षाडव है । याको ग्रीष्म ऋतुमें दूपहरमें गावनों याको यो वखत है । ओर ग्रीष्म ऋतुमें चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो० ॥ इति जालंधरराग संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको आठवो पुत्र संकर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको संकर नाम करिकें मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ संकरको स्व० ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । रूप करिके मनमथको जीते है । तीखो त्रिशूल जाके हाथमें है। जडाऊ कीरट जाके माथेपें है । सोनेके कडा जाके हाथमें है । कमल पत्रसे जाके नेत्र है। मुखमें वीडा खाय है । अरगजाको लेप करे है । स्त्रीनके संग विहार करे है ॥ ऐसो जो राग ताहि संकर जांनिये । शास्त्रमें तो ये सात सुरनसो गायो है ॥ प म ग रि स नि रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको वखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सु० ॥ यातें जं० जाकी सिवाय० इति संकर संपूर्णम् ॥ इति छ रागके पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ नृत्य निर्णयके मतसो परजकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेंको । अघोर नाम मुखसों गाईकें भैरवकी छाया युक्ति देखि। वांको परज नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ परजको स्व०॥ गोरो लंबो अंग है । कोमल मीठे नेत्र है । सब लोगनके उपगार करवे बारो है । जाकी भार्याके हाथमें ताल है । पिनाक बाजा यारागके हाथमें है । राति दिन जाको जाचना करे है । तिनको द्रव्य देके मनोरथ पूरन करे है । राजानके अग्रवर्ती सोभायमान है । ऐसो जो राग तांहि परज जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि म म प ध नि स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । रातिके प्रथम पहरमें गावनां । यह तो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावो याकी आलापचारी सात सुरनसों किये राग वर्तेसो जंत्रसों जांनिये ॥

अथ भैरवको पुत्र परज (संपूर्ण).

नि	निषाद् चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाध चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद् चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति भैरवको पुत्र परज संपूर्णम् ॥

अथ नृत्यनिर्णयके मतसों हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । वामदेव नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखि । वांको सामंत नाम हिंडोलरागको पुत्र दीनों ॥ सामंतको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । रंगबीरंगे वस्त्र पहरे है । कमलकेसें हात पांव है । काननमें कुंडल है । माथेपें मुकुट है । फूलनकी माला कंठमे है । ऐसो जो राग तांहि सामंत जांनिये । शास्त्रमें तो पांच सुरनसों गायो है । स रि म प नि । यांतें ओढव है । याको दुपहरमें गावनो यहतो याको बखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये राग वरते सों । जंत्रसों समझिये ॥

हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत (ओडव)

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। वामदेव मुखसों त्रिवण गाईके वांको हिंडोलकी छायायुक्ति देखि हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ त्रिवणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरोजाकों रंग है। रंग विरंग वस्त्र पहरे है। कमलसरिखे जाके नेत्र है। कमलसे जाके हाथ पांव है। काननमें कुंडल है। माथेपें मुकुट है। फूलनकी माला गलमें है। सुंदर जाको रंग है। ऐसो जो राग ताहि त्रिवण जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दुपहरसमें मावनो। यहतो याको वखत है। और दिनमें चाहो तब गावों याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें सों। जंत्रसों समझिये ॥

हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण (संपूर्ण)

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको तीसरो पुत्र स्याम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपने वामदेव मुखसों स्याम राग गाईकें । वांको हिंडोलकी छाया युक्ति देखि हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ स्याम रागको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । विचित्र कप भेदनि करिकें मधुर सुरनसों गावे है । केसरिको तिलक भालमे है । ओर कामनीनके संग विहार करे है । मदसो छक्यो है । ऐसो जो राग तांहि स्याम जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याकों संध्यासमें गावनां । यहतो याकों बखत है । ओर रात्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतसों जंत्रसों समझिये ॥ इति स्याम राग संपूर्णम् ॥ अथ याको जंत्र लिख्यते ॥

हिंडोलको तीसरो पुत्र स्याम राग (संपूर्ण)

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति हिंडोलको पुत्र स्याम संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको पुत्र देवगांधार नृत्यनिर्णयके मतसों लिख्यते ॥

अथ देवगांधारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेका । ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको देवगांधार नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनो॥ अथ देव गांधारको स्वरूप लिख्यते ॥

शरीर जाका चंदनसों चर्चित है । स्वेत वस्त्र पहरे है । ओर रतनके सिंहासनपें बेठ्यो है । इंद्रादिक अस्तुति करे हैं । ओर परम रसिक है । संपूर्ण आभूषण पहरे है । हाथमें जाके कमल है । ऐसो जो राग तांहि देवगांधार जांनिये । शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दुपहरमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सप्त स्वरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

श्रीरागको पुत्र देवगांधार (संपूर्ण)

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागको पुत्र देवगांधार संपूर्णम् ॥

अथ रागार्णवके मतसों देसाख रागकी रागनी कुडाई ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याको लौकिकमें सुधराई कहत हैं । पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों कुडाई गाईके देसाखकी छाया युक्ति देखि । देसाख रागको कुडाई रागनी दीनी ॥ अथ कुडाई रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । सोलह वरषकी अवस्था है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । अरगजाको अंगराग लगाये है । मोतिनके गहना पहरे है । ललाटमें गहना पहरे है । जाके अलके छूटी रही है । अपनें समानरूप सखी जाके संग है । एक हाथमें वीणा बजावे है । ओर दूसरे हाथमें बीन बजावे है। मधुर मधुर सुरसों गावे है। अपनें मानीनाथसों मनावे है । ऐसी जो रागनी तांहि कुडाई जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसें गाई है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याकुं दिनके दूसरे पहरमें गावनी यह तो याको बखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें क्रिये राग वरेतसो जंत्रसों जानीये ॥

देसाख रागकी रागनी कुडाई (संपूर्ण.)

म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा ए
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा [illegible]
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा क
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति देसाख रागकी रागनी कुडाई संपूर्णम् ॥

अथ सोमनाथके मतसों वसंतकी रागनी देवगिरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों वामदेव मुखसों देवगिरी राग गाईके वांको वसंतकी छाया युक्ति देखि वसंत रागकों रागनी दीनी ॥ अथ [illegible] रीको स्वरूप लिख्यते ॥ सांवरो जाको रंग है । केसरिके रंगके वस्त्र पहरेके

केसरिको अंगराग लगाये है । ऊंचे कठोर जाके कुच है । मोतीनके हार गलेमे पहरे है । पानबीडा मुखमें चावे है । मतवारे चकोरसें नेत्र है । ओर सुठोत जाके अंग है । सखीनके संग विहार करे है । ऐसी जो रागनी तांहि देवगिरी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी यहतो याको बखत है । ओर दुपारपहले चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

देवगिरी रागनी (संपूर्ण)

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ताकी उ
उन राग
युक्ति देरि
स्वरूप ति
वस्त्र पहरे
ललाटमें
प
है । अ
वरतेसो जंत्र

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति देवगिरी रागिनी संपूर्णम् ॥

अथ आनंदभैरवीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों ॥ अपनें मुखसों राग गाईके वांको आनंदभैरवी नाम करिके कीनों । अथ आनंदभैरवीको स्वरूप लिख्यते ॥ भैरवीकी मेलमें जाकी उत्पत्ति होई जाको ग्रहस्वर निषादमें होय गांधारमें उत्तर होय । ऐसी जो रागनी तांहि आनंदभैरवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सो । जंत्रसों समझिये ॥ अथ याको जंत्र लिख्यते ॥

आनंदभैरवी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति आनंदभैरवी संपूर्णम् ॥

अथ आनंदभैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गरागनमें विभाग करिवेकों अपनें मुखसों राग गाईके वांको आनंदभैरव नाम कीनों ॥ अथ आनंदभैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें निषाद सूर उतर्‍यो होई। गांधारमें जाको ग्रहस्वर होई। बहुली गुजरीको जामें लछन होई। सो आनंदभैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सप्त स्वरनसों गायो है। म म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सो। जंत्रसों समझिये ॥

आनंदभैरव (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रिं	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निशाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति आनंदभैरव संपूर्णम् ॥

अथ गांधारभैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों राग गाईकें वांको गांधारभैरव नाम-कीनों ॥ अथ गांधारभैरवको लछन लिख्यते ॥ जामें देवगांधार मिले सो भैरव-गांधार जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । याकों प्रभात समें गावनों ॥

अथ शुद्ध भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों अपनें सद्योजात नाम मुखसों गाईकें वांको शुद्ध भैरव नाम कीनों ॥ अथ शुद्ध भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत वस्त्र पहरे है। अंगमें भस्म लगाये है। तीन नेत्र है। माथेपे जटाजूट बांधे है। एक हाथमें त्रिशूल है। कंठमें शृंगको धारन करे है। काननमें मुद्रिका पहरे है। चंद्रमा मुकुटमें है। बैलपें चढो है। ऐसो जो राग तांहि शुद्ध भैरव जांनिय॥ सास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याकुं हेमंत ऋतुमें प्रभात समें गावनों ॥

अथ शुद्धललित भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें सद्योजात नाम मुखसों गाईकें। शुद्ध भैरवकी छाया युक्ति देखि शुद्ध भैरवको पुत्र दीनों॥ अथ शुद्धललित भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत वस्त्र पहरे है। बडो चतुर है। सुंदर जाके चतुर भालमें केसरिको वेदा है। ओर चंपाके मल्लिकाके फूलनको मुकुट माथेपें कमल पत्रसे जाके नेत्र है। विसाल युक्त है। बडो कामी है। वीडा जाके हाथपे है। दुसरे हाथसों कमल फिरावे है। पंडित स्त्रीनको मनावे है। ऐसो जो राग सो शुद्ध ललितभैरव जांनिये॥ सास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याकों प्रभात समें गावनों। यह तो याको वखत है ॥

अथ वसंत भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों वसंत संकीर्ण भैरव गाईकें वांको वसंत भैरव नाम कीनों ॥ अथ वसंत भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। लाल वस्त्र पहरे है। बडो जाको शब्द है। किन्नरजाकी अस्तुति करे है। नाना प्रकारके बाजे वजावे है। मदमें छक्यो है। बागमें विहार करे है। ओर जाकी शरीरकी सुगंधसों भौंरा गुंजार करे है। मुखमें विडा चावे है। कमादेवके समान रूप है। ऐसो जो राग सो वसंत भैरव जांनियें॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको हेमंत ऋतुमें प्रभात समें गावनों।

ओर चाहो तब यावों । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों जंत्रसों समझिये ॥ अथ जंत्र लिख्यते ॥

वसंत भैरव (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

ओर चाहो तब गावों। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों जंत्रसों समझिये ॥ अथ जंत्र लिख्यते ॥

वसंत भैरव (संपूर्ण).

स	षडज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति वसंत भैरव संपूर्णम् ॥

अथ स्वर्णाकर्षण भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ श्रीशिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । राग गाईके वांको स्वर्णाकर्षण नाम कीनों ॥ अथ स्वर्णाकर्षण भैरवको लछन लिख्यते ॥ जाभैरवमें गांधार स्वर नहीं होई ओर रिषभ पंचम होय । सो भैरव स्वर्णाकर्षण भैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। ध नि स रि म प ध। यातें षाडव है । याको प्रभात समें गावनों ॥

अथ पंचम भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाई वांको पंचमभैरव नाम कीनों ॥ अथ पंचमभैरवको लछन लिख्यते ॥ जामें पंचमराग मिले सो भैरव पंचमभैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्या नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लिज्यो । इति पंचमभैरवकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥

अथ सोमनाथके मतसों मेघरागकी पांचवी रागनी गांधारी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गांधारी नाम करिके मेघरागको रागनी दीनी ॥ अथ गांधारीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । पीतांबरको पहेरे है । बडे नेत्र है । केसर चंदनको अंगराग लगाये है। ओर मोतिनके हार गलामें पहरे है । एक हाथसों वीणा बजावे है । मधुर सुरनसों गांन करे है । सोनेके आभूषन पहेरे है । सखी जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि गांधारी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है। रि ध नि प म ग रि स। यातें संपूर्ण है । याकुं दिनके प्रथम पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर दुपरमें चाहो तब गावो ॥ इति गांधारी संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी तीसरी रागनी पहाडी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने तत्पुरुष नाम मुखसों पहाडी गाईके । वांको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । श्रीरामको रागनी दीनी ॥ अथ स्व० ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । तरुण जाकी अवस्था है । मदमें छकि है । मतवारे हाथीकीसी चाल है । शृंगार रसमें मग्न है । तरुण जनके मनको आनंद उपजावे है । कमलपत्रसे नेत्र है । पतिके संतापको हरे है । मंद मुसिकानि करे है । चंद्रमासो जाको मुख है । अरु गीत नृत्यमें आसक्त है । ऐसी जो रागनी तांहि पहाडी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है । स रि म प ध नि स । यातें षाडव है । याको संध्यासमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग मंगलीक है । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरती लिज्यो ॥ इति पहाडी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धकामोदकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें अरु पार्वतीजीनें जे राग उत्पन्न कीये । तिनमें अधिक रसकेताई संकीर्ण करिके लोकमें गावे है । तहां प्रथम संकीर्ण कामोदनमें शुद्धकामोद लिखे है ॥ अथ शुद्धकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । कामदेवसों सुंदर है । एक हातसों स्वेत कमल फिरावे है । कस्तूरीको तिलक जाके भालमें है । जडाऊ मुकुट जाके सीसपे है । कानननें कुंडल पहरे है । हाथनमें जाके जडाऊ कडा है । मुखसों पांन चबावे है । अनेक सुंदर स्त्री जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि शुद्धकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । म ग रि म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

शुद्धकामोद (संपूर्ण).

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षडज असलि, मात्रा एक

॥ इति शुद्धकामोद संपूर्णम् ॥

अथ दुसरो सामंतकामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको अपनें मुखसों केदार राग संकीर्ण कामोद गाईके वांको सामंतकामोद माम कीनो ॥ अथ सामंतकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत धोती उपरना पहरे है। बांये हाथमें सुपेद कमल है। दाहिनें हाथमें दंड कमंडलु है। मनमें शिवजीको ध्यान करे है। ललाटमें कस्तूरीको विंदा है। लाल कमलसे जाके नेत्र है। माथेपें फूलनको मुकुट है। कंठमें गज मोतीनकी माला पहरे है। ऐसो जो राग तांहि सामंतकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। ग म प नि स रि ग। यातें षाडव है ॥ याको अर्धरात्रिमें गावनों यह तो याको वखत है ॥ ओर रात्रिके तिसेर पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरतें सों जंत्रसों समझिये ॥

॥ इति सामंत संपूर्णम् ॥

॥ अथ सामंतकामोदको जंत्र लिख्यते ॥

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सामंतकामोदको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ तिसरो तिलककामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों षट्राग संकीर्ण कामोद राग गाईके । वांको तिलककामोद नाम कीनों ॥ अथ तिलककामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । केसरि चंदनको अंगराग किये है । कस्तुरीको विंदा जाको लिलाटमें है । मुकुट जाके माथेपे है । मोतीनकी माला जाके गरेमें है । कामनीनके संग वनमें विहार करे है । ओर उदार है । जाके हाथमें बेतकी छडी है । एसो जो राग ताहि तिलककामोद जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाया है । प नि स रि ग म प । यातें षाडव है । याको रात्रिके प्रथम पहरमें गावनो यह तो याको वखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरें । सो जंत्र सों समझिये ॥

तीसरो तिलककामोद (षाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाध चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति तीसरो तिलककामोद संपूर्णम् ॥

अथ चोथो कल्याणकामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों कल्याण राग संकीर्ण कामोद गाईके । वांको कल्याणकामोद नाम कीनों ॥ अथ कल्याणकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । हाथमें जाके पानका वीडा है । हीरानके जडाऊ सिंहासनपें बेठ्यो है । स्वेत वस्त्र पहरे है । हाथनमें जडाऊ कडा है । माथेपें फूलको मुकुट है । गेरमें फूलनकी माला है । हाथमें बेतकी छडी है । केसरिको अंगराग कीयें है । सोनके आभूरण पहरे है । स्त्री जाके संग है । आनंदमें मग्न है । ऐसो जो राग तांहि कल्याणकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सप्त स्वरनसों गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको रात्रिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सप्त स्वरनमें किये राग वरतें सों जंत्रसों समझिये ॥

कल्याणकामोद (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति कल्याणकामोद संपूर्णम् ॥

अथ अडानाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों वि-भाग करिवको । अपने मुखसों मल्लारराग संकीरन कान्हडो गाईके वांको अडानो नाम कीनो ॥ अथ अडानाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीरे वस्त्र पहरे है । ये रागकी सीकनी जाकी दांतनकी पंक्ति है । हाथनमें जडाऊ कडा है । मोतीनके हार जाके गलेमें है । मणिनके जडाऊ कुंडल काननमें पहरे है । अनेक

प्रकार सुगंध फूल धारन करे है। चंदनको अंगराग किये है। बीडा मुखमें खाय है। ताके पीक कंठमें झलके है। सोनेके आभूषण पहरे है। मुकुट माथेपें है। ऐसो जो राग तांहि अडाना जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है ॥ नि ध प म ग रि स ग रि ॥ यातें संपूर्ण है॥ याको रातिके दूसरे पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। ओर रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते ॥ सो जंत्रसों समझिये ॥

अथ अडाना (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति अडाना संपूर्णम् ॥

अथ सहानाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों फिरोदस्त संकीर्ण कान्हरा गाईके । वांको सहानो नाम किनों ॥ अथ सहानाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । रंगबिरंग वस्त्र पहरे है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है । अंतरके सोभीजे जाके केस है । कंठमें रत्नकी माला है । ललाटमें केसरिको तिलक है । सिंहासनपें बेठो है । मुकुट जाके माथेपें है । काननमें कुंडल है । हाथनमें कडा है । छत्र जाके उपर फिरे है । दोऊ वोर चवर ढुले है । मित्रनके संग संभवतो है । ऐसो जो राग तांहि सहानो जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसो समझिये ॥

अथ सहाना (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सहना संपूर्णम् ॥

अथ तंभावतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गरागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सुद्ध मालसरी संकीर्ण मल्लार गाईके । वांको तंभावती नाम किनों ॥ अथ तंभावतीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहेरे है । मन जाको परचय है । कंठमें माला है । चंदनको अंगराग किये है । फूलनको गहना पहेरे है । मृगकेसे नेत्र है । सुंदर जाको शरीर है । मधुर प्रियसों हाथिके बचन कहे है । सखिनके संग बनमें विहार करे है । अरु मोरनको नचावे है । ऐसो जो राग तांहि तंभावती कहिये । शास्त्रमेंतो सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । रातिके दूसरी पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

अथ तंभावती (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति तंभावती संपूर्णम् ॥

अथ खटरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों आसावरी टोडी स्याम बहूल गुजरी संकीर्ण देवगांधार गाईके । वांको खट नाम किनों ॥ अथ खटरागको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंग बिरंगे वस्त्र पहरे है। चंदनको अंगराग किये है । ओर माथेपें मुकुट है। डहडहे फूलनकी माला कंठमें है । रतिसुखमें मग्न है। स्त्री जाके संग है । कामदेव कलामें

मध्य है। ओर सोलह बरसकी जाकी अवस्था है। ऐसो जो राग तांहि खटराग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । ग प म प ध नि स रि ग म प । यातें संपूर्ण है । याकों प्रभातसमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों । जंत्रसों समझिये ॥

खटराग (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति खटराग संपूर्णम् ॥

अथ कुंभावरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सोरठ संकीर्ण मालश्री गाईके वाको कुंभावरी नाम कीनो ॥ अथ कुंभावरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। लाल वस्त्र पहरे है । ऊंचे कठोर जाके कुच है । मोतीनके हार जाके हृदयेमें सोभायमान है । काननमें नीलकमल पहरे है । तासों च्यारु ओर भुंगा गुंजार करे है। जाके दरसन कीयेतें कामदेव उपजे है । हाथसों लालकमल फिरावे है । ओर नाजूक जाको शरीर है । आमके रूखके नीचे बेठी है । मंद मुसिकानि करे है । सखी जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि कुंभावरी जांनिये । शास्त्रमें तो छह सुरनसों गाई है । स रि ग म प नि स । यातें षाडव है । याको संध्यासमें गावनो । यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें कीये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

कुंभावरी रागनी (षाडव).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति कुंभावरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ सरस्वतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों नटनारायण संकराभरण संकीर्णसुद्धजेतश्री गाईके । वांको सरस्वती नाम कीनों ॥ अथ सरस्वतीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। पीतांबरको पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है। जाकी सुंदर कांति है। बडी दयावान है । नवीन स्त्रीनमें विहार करे है । मोरनसों क्रीडा करे है । केसरिचंदन कस्तूरीको अंगराग लगाये है । फूलेकमलकी माला पहरे है । शृंगारमें मग्न है । नृत्यगीतमें मगन है । काननमें कमलकी कली पहरे है । केसरिको तिलक ललाटमें है । आंखनमें काजर आंजे है । हाथमें चूडी पहरे है । कसुमल जाकी चोली है । नाकमें वेसरी पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि सरस्वती जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स ।

यातें संपर्ण है । याको संध्यासमें गावनी । यह तो याको बखत है । और रातिके चाहो तब गावो ॥ इति सरस्वती संपूर्णम् ॥

अथ वडहंसराग ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों देवगिरी गौरीमालव संकीर्णपूरिया धनासरी गाईके वांको वडहंस नाम कीनों ॥ अथ वडहंसको स्वरूप लिख्यते॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहेर है । माथेपें मुकुट है । काननमें कुंडल पहेर है । आंमको मौर काननमें धरे है । सोनेके आभूषण अंगनमें पहेरे है। च्यार भूजा है । जाकी सोलह बरसकी अवस्था है । सोनेसु भींजिजा सुंदर जाके केंस है। कमलकोसों मुख है । कमलपत्रसे नेत्र है। कमलनकी माला पहेरे है । चवर जाके फिरे है। वस्त्रको धारन करे है । जाके आगे गंधर्व गान करे है । ऐसो जो राग ताहि वडहंस जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनमें गायो है । स रि म प ध नि स । यातें षाडव है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । और दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग बरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

वडहंसराग (षाडव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति वडहंसराग संपूर्णम् ॥

अथ वायुर्जीकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहीको लोकिकमें पूरिया कल्याण वा मेनाष्टक कहे हैं। शिवजीनें उन रागमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों धवलसंकीर्ण कान्हडा गाईके। वांको वायूर्जिका नाम कीनों ॥ अथ वायूर्जिकाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरा जाको रंग है। रंगविरंग वस्त्र पहरे है। चंदन केसरिको अंगराग लगाये है। सुंदर चोली पहरे है। मृगकेसे बडे जाके नेत्र हैं। शृंगार रसमें मग्न है। हाथनमें कंकण है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे है। तरुण अवस्था है हासीके वचन कहे हैं। सखीनकी सभामें बैठी है। माथेपें छत्र है। ओर पास जाके चवर डुले हैं। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसी जो रागनी ताहि वायूर्जिका जानिये ॥ शास्त्रमें तो सप्त स्वरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर आधि रात पहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

वायुर्जिका अथवा पूर्याकल्याण रागनी (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार असलि, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति वायुर्जिका अथवा पूर्याकल्याण रागनी संपूर्णम् ॥

अथ लंकदहनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों देवगिरी केदारो संकीर्णगारो गाईके । वांको लंकदहन नाम कीनों ॥ अथ लंकदहनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । हाथसों कमल फिरावे है । बडे जाके नेत्र है । बडे जाके केश है । रतिकलामें प्रवीण है । कोमल जाको अंग है । सब अंगपे सो-नेके आभूषण पहरे है । दूसरे हाथमें छडी है । मनमें शिवको ध्यान करे है । मित्रनकरिके युक्त है । ऐसो जो राग तांहि लंकदहन जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याकों संध्या-

समें गावनों। यह तो याको वखत है। और रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समझिये॥

लंकदहन राग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा चार	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति लंकदहन संपूर्णम् ॥

अथ पासवतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपने मुखसों देवगिरी गौड पौरवी गुजरी संकीर्ण पौरवीके आधे स्वर गाईके। वांको पासवती नाम कीनों ॥ अथ पासवतीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है। ओर रंगबिरंगी चोली पहरे है। कोमल जाको अंग है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। मधुर वचन कहे है। बडी चतुर है। हाथमें हाथीदांतके चूडा पहरे है। पावनमें नूपर पहरे है। नाकमें जाडाउ फूलदार वेसरी पहरे है। लाल जाके होट है। वनमें विहार करे है। फूलनकी मालासुं जाकी चोटी गूही है। मोरनके संग क्रीडा करे है। वनचरनकी स्त्री जाके ओर पास है। ऐसी जो रागनी तांहि पासवती जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभातसमें गावनी। यह तो याको बखत है। दुपहरताई चाहो तब गावो ॥

अथ वागीश्वरी रागनी कान्हडाको भेद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों धनासिरी संकीर्ण कान्हडो गाईके। वांको वागीश्वरी नाम कीनों ॥ अथ वागीश्वरीको स्वरूप लिख्यते ॥ सांवरो जाको रंग है। रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है। चंदनको अंगराग लगाये है। अनारको फूल जाके हाथमें है। जाके हिराके कनीसें दांत है। जाके हाथनमें जडाउ कडा है। गरेमें मोतीनको हार है। माथेपें मुकुट है। मणीनके कुंडल पहरे है। अनेक भांति फूलनकी माला पहरे हैं। नृत्य रागसों प्रसन्न है। शृंगार रसमें मग्न है। ऐसी जो रागनी तांहि वागीश्वरी जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गाई है। नि ध प म ग रि रि स स रि ग म प ध नि। यातें संपूर्ण है। याका रातिके दुसरे पहरमें गावनी। याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरतेसो जंत्र सों समझिये ॥

वागीश्वरी रागनी (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति वागीश्वरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ लीलावतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों जैतश्री ललित संकीर्ण देशकार गाईकें । वांको लीलावती नाम कीनों ॥ अथ लीलावतीको स्वरूप लिख्यते ॥ लाल जाको रंग है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है । मात हातीकीसी चाल है । इंद्र जाको मित्र है । रंगबिरंगे वस्त्र पहेर है । मोतीनकी माला गरेमें है । हाथमें कमल है । शृंगार रसमें

मग्न है। सोला वरसकी अवस्था है। अपने समान सखीन करिके युक्त है। फूलमाला-सूं गुथी जाकी वेनी है । मंद मुसकान करे है । ऐसी जो रागनी तांहि लीला-वती जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याकों दिनके चोथे पहरमें गावनी याहितो याको वखत है । और दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जंत्र सों समझिये ॥ अथ जंत्र लिख्यते ॥

लीलावती (संपूर्ण).

म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति लीलावती संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीको तांडव नृत्य संपूर्ण भयो तब पार्वतीजीके मुखतें ॥ विष्णुकी प्रियकी अरथ नटनारायण भयो विष्णु दैत्यनसों युद्ध करिके थकिगये हैं । सो उनके खेद दूरि करिवेके लिये यह रागनी विश्रामरूप है । वांको श्रवनकरि विष्णु मगनभयो ॥ अथ नटनारायणको स्वरूप लिख्यते ॥ विष्णुरूप है स्याम सुंदर देह हैं । पीतांबर पहरे है । नटवरभेष है । मोरमुकुटको धारण करे हैं । काननमें मकराकृत कुंडल है । कौस्तुभमणी पहरे है । केसरिचंदनसों चर्चित जाको अंग है । वनमाला पहरे है । गोप ग्वाल जिनके संगि है । ऐसो जो राग ताँहि नटनारायण जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है । म प ध ग रि स । यातें षाडव हैं । याको वर्षासमें गावनों । यह तो याको वखत है । दिनके तीसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें कीये राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये ॥

नटनारायण (षाडव).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार

॥ इति नटनारायण संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीके मुखसों उत्पन्न होईके । नटनारायणनें पार्वतीजीसों विज्ञप्ती कीनी महाराज मोंको रागनी दीजे तब । शिवजीकी आज्ञा लेकरिके पार्वतीजीनें । अपने मुखसों पांच रागनी गाईके । नटनारायणकी छाया युक्ति देखि नटनारायणको दीनी ॥ तहां

प्रथम नटनारायणकी रागनी वेलावली ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों वेलावली गाईके । वांको नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । नटनारायणको दीनी ॥ अथ वेलावलीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरा जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । विचित्र रंगकी कंचुकी पहरे है । सुवर्णके आभुषण सब अंगनमें पहरे है । कस्तूरीको विंदा जाके भालमें है । कमलकी माला जाके कंठमें हैं । मृदंगको बजावे है । सखीनके संग मधुर सुरनसों गावे है । ऐसी जो रागनी तांहि वेलावली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । ध नि स रि म म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो याको जंत्र हनुमान मतमें हिंडोल रागकी रागनी प्रथम विलावली ताकें जंत्रसों आलापकीज्यो ॥ इति वेलावली संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी दूसरी रागनी कांबोजी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों कांबोजी विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों गाईके याको नटनारायणकी छायायुक्ति देखि । वांको कांबोजी नाम करिकें नटनारायणको रागनी दीनी ॥ अथ कांबोजीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरा जाको रंग है। केसरिया वस्त्र पहरे है । मोहनो स्वरूप है । बडे जाके नेत्र है । मुखमें पानके विडा चवावे है । ललाटमें कस्तूरीको विंदा है । सोनेके जडाऊ गहना सब अंगनमें पहरे है । करनाट देसमें अरु आंध्र देसमें भई है । सखी जाके संग है। सारंगी बजावे है । ऐसी जो रागनी तांहि कांबोजी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी यह तो याकी वखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो ॥ इति कांबोजी संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी तिसरी रागनी सांवेरी ताकी उत्पत्ति

लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। अपनें मुखसों सांवेरी रागनी गाईके वाकों सांवेरी नाम करिके नटनारायणकी छाया युक्ति देखि। नटनारायणकों दीनी॥ अथ सांवेरीको स्वरूप लि० ॥ स्यामजाको वर्ण है। सोसनी वस्त्र पहरे है। पिली जाकी चोली है। चंद्रमासो मुख है। नाजुक अंग है। मृगकेसे जाके नेत्र है। कस्तूरीको विंदा जाके भालमें है। मोतीनके हार कंठमें पहरे है। सोलेह प्रकारके शृंगार किये है। मतवारे हाथींकीसी चाल है। मंद मुसकान करे है। ऐसी जो रागनी ताहि सांवेरी जानिये॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है। ध ग ध रि ध स रि ग म प ध। यातें षाडव है। याको सांजसमें गावनी यहतो याको वखत है। ओर चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें कियें। राग वरतेंसों जंत्रसों॥

सांवेरी रागनी (षाडव).

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति सांवेरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी चोथी रागनी सुहवी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सुहवी गाईके । वांको नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । नटनारायणको दीनी ॥ अथ सुहवीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबरको पहरे है । नाजुक जाको शरीर है । ओर अमृतकी सीनाई आनंदकारी है । फूले कमलसें जाके मुख है । तरुण जाकी अवस्था है । ओर सुगंधके फूलनसों गुही जाकी वेनी है । रंगविरंगी चोली पहर है । मंदमुसकान करे है । शृंगार रसमें मग्न है । चवर जाके उपर ढुरे है । बडे जाके नेत्र है । ऐसी जो रागनी ताहि सुहवी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

सुहवी रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सुहवी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी पांचई रागनी सोरठ ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजींनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सोरठ

गाईके नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । वांको नटनारायणको दीनी ॥ अथ सोरठको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो अंग है । कमलसों विसाल नेत्र है । चंद्रमासो मुख है । दाडिमके बीजसरिके दांत है । अनेक रंगकी पोषाग पहेर है । कठोर कुच है । आसमानी रंगकी चोली पहेर है । सुछंद विहार करे है । कामदेवसों व्याकुल है । शृंगार रसमें मग्न है । ऐसी जो रागनी तांहि सोरठ जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है । स रि म प ध नि स । यातें षाडव है । याको आधिरातिसमें गावनी । यह तो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग वरतसों जंत्रसों समझिये ॥

सोरठ रागनी (षाडव).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सोरठ संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणके शुद्धनाटादि जे पुत्र है तिनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईके सुद्धको दिक रागनसों संकीर्ण नट गाईके। उन संकीर्णनके सुद्धनाटादि नामकरिके। नटनारायणको पुत्र दीनो। तहां नटनारायणको प्रथम पुत्र शुद्धनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। ईशान नाम मुखसों सुद्धराग संकीर्णनट गाईके। वांको शुद्धनाट नाम करिके। नटनारायणको दीनो ॥ अथ शुद्धनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ शिवजीके ईशान मुखसों जाकी उत्पत्ति है। महा धीर है। लाल जाको रंग है। कमलसे जाके नेत्र है। स्वेत वस्त्र पहेरे है। हाथमें खड्ग है। बडो जाको प्रताप है। हास्ययुक्त सुंदर जाके बचन है। गंभीर नाद है। रागमार्गमें विहार करे है। घोडापे चढ्यो है। सोभायमान है। ऐसो जो राग ताहि शुद्धनाट जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको शर्दऋतुमें संध्यासमये गावनों। यह तो याको बखत है। ओर ऋतुमें संध्यासमें चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग बरतेसों। जंत्रसों समझिये ॥

नटनारायणको प्रथम पुत्र शुद्धनाट (षाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति नटनारायणको प्रथमपुत्र शुद्धनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको दूसरो पुत्र हमीरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशाननाम मुखसों हमीरराग संकीर्ण राग गाईके । वांको हमीरनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ हमीरनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ शृंगार रसमें मग्न जाको चित्त है। शरीर हू शृंगार युक्त है । गोरो जाको रंग है । मंद मुसकान युक्त जाको मुख है । तांबूलकी

बिडीसों होठ जाको लाल है । हाथमें दंडी और दंड लिये है । तरुण कामदेवको मित्र है । लाल वस्त्र पहर है । बडो प्रतापी है । कांमनीनके मनको वस करे है । ऐसो जो राग ताहि हमीरनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। रातिके प्रथम पहरमें गावनों। यहतो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

नटनारायणको दूसरो पुत्र हमीरनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

॥ इति नटरागको दूसरो पुत्र हमीरनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको तीसरो पुत्र सालंगनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वांकी रागनीनमेसों विभाग करिवेको । ईशाननाम मुख सो सारंग राग संकीर्ण नट माईके । वांको सालंगनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनो । अथ सालंगनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । तरुण जाकी अवस्था है । ओर हाथमें वज्र लिये है । कांमदेवसो मित्र है । मोतीनकी मा । गलेमें है । सुंदर वस्त्र है । स्त्रिनके संगमें विराजे है । ऐसो राग तांहि सालंगनाट जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है । रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वख़त है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

अथ सालंगनाटको जंत्र (संपूर्ण).

म	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक दोय

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति नटनारायणको तीसरो पुत्र सालंगनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको चोथो पुत्र छायानाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वांकी रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों छाया संकीर्णनट गाईके । वांको छायानाट नाम करिके । नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ छायानाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । लाल जाके नेत्र है । कंठमें मोतीनको हार है । स्वेत वस्त्र गुलाबीपाघ पहेरे है । सुंदर वस्त्र है । हाथमें फूलछडी ले है । ऐसो जो राग तांहि छायानाट जांनिये ॥ शास्त्रमें-तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिके प्रथम पहरमें । चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये॥

अथ छायानाट जंत्र (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
नि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ ६।

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार

॥ इति छायानाटको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पांचवो पुत्र कामोदनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशाननाम मुखसों गाईके। वांको कामोद नाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ कामोद-नाटको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेको सो रंग है । पितांबर पहेरे है । सुंदर घोडेपें असवार है । महावीर है । ओर गुलाल जाके लग्यो है । रंगविरंगे वस्त्र पहेरे है । विचित्र गहना पहेरे है । ओर जाको बडो प्रताप है । गुमानसो भरयो है । ऐसो जो राग तांहि कामोदनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । याके आरोहमें गांधार तीव्र जांनिये ॥ आवरोहमें गांधार धैवत लीजे नहीं। ध नि स रि ग म प प ध नि स । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । कोऊक याको दिनके दूसरे पहरमें गात है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

अथ कामोदनाटको जंत्र (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति कामोदनाटको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको छटो पुत्र केदारनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें वांकी रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशाननाम मुखसो केदार राग संकीर्ण नट गाईके । वांको केदारनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनो ॥ अथ केदार नाटको स्वरूप लिख्यते ॥ पीत रंग है । चंद्रमासो मुख है ।

बांये हाथमें त्रिशूल है। दाहिनें हाथमें दंड है। स्वेत वस्त्र पहरे है। और मोतीनकी माला जाके कंठमें है। कमलपत्रसे नेत्र है। वैरीनको संघार करे है। वीररसमें मग्न है। और सूर्यकेसो जाको तेज है। ऐसो जो राग तांहि केदारनाट जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनसों गायो है॥ ग म प ध नि स॥ यातें षाडव है। रातिके दूसरे पहरमें गावनों यहतो याको वखत है। कोऊक रातिके प्रथम पहरमें गांवे है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसो समझिये॥

केदारनाटको जंत्र लिख्यते (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति केदारनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको सातवो पुत्र मेघनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन नाटनमेंसो विभाग करिवेको ईशानमाम मुखसो मेघराग संकीर्ण नट गाईके । वांको मेघनाट नाम करिके नटनारायणको दीनो ॥ अथ मेघनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम स्वरूप है । पीतांबरको पहरे है । ओर सोनेके आभरण पहरे है । केसरि चंदन घसि शरीरसों लगावे है । ओर हाथमें जाके खड्ग हैं । ओर घोडापे असवारी हैं । मेघनादसों बैरीनसों भय उपजावे है । ऐसो जो राग तांहि मेघनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्त स्वरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । दीनके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । वर्षाऋतुमें मुख्य है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

मेघनाटजंत्र (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मेघनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको आठमो पुत्र गौडनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिकें । ईशान नाम मुखसों । गौडनाट संकीर्णनट गाईके । वांको गौडनाट नाम करिकें नटनारायणको दीनों ॥ अथ गौडनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ लालवर्ण है । केसरिया वस्त्र पहरे है । सोनेके बखतर पहेरे है । जाके कंठमें गजमोतिनके हार है । दाहिने हाथमें माला है । बांये हाथमें ढाल है । ओर क्रोधसों घोडेको चोगान फिरावे है । तीखे जाके नेत्र है । जाके लिलाटमें केसरिको त्रिपुंड है । शिवजीको ध्यान करे है । ऐसो जो राग ताहि गौडनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनसों गायो है । स रि ग म प ध स । यातें षाडव है । रात्रिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी छह सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

गौडनाटराग (षाडव).

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति गौडनाटराग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको नवो पुत्र भूपालनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों । भूपालराग संकीर्णनट गाईके । वांको भूपालनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ भूपालनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । केसरिको अंगराग किये है । चंद्रमासो मुख है । ओर तरहतरहके आभूषण पहरे है । हाथमें कमल फिरावे है । ओर मंदमुसकानयुक्त बचन कहत है । बडो प्रतापी है । उदार धुनि है । ऐसो जो राग तांहि भूपालनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुर-

नमें गायो है। स रि ग म प ध स। यातें षाडव है। रातिके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये॥

भूपालनाट राग (षाडव).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार

॥ इति भूपालनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको दशवो पुत्र जेजनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों जजवंत संकीर्णनट गाईके वांको जेजनाट नाम कीनों ॥ अथ जेजनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। पीतांबर पहरे है। केसरिको तिलक

ललाटमें है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे है। वीर रसमें मग्न है। लालकमलसे नेत्र है। सुंदर मुसकानयुक्त जाको मुख है। ऐसो जो राग तांहि जेजनाट जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। कोऊक याको रिषभ हीनहू कहत है। तिनके मतसों षाडव है। सांझसमें गावनों। यह तो याको वखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये॥

जेजनाट राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति जेजनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको ग्यारवो पुत्र शंकरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों शंकराभरणसंकीर्णनाट गाईके । वांको शंकरनाट नाम कीनों ॥ अथ शंकरनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको वर्ण है । रक्त वस्त्र पहरे है । फूले कमलकी माला जाके कंठमें है । सुंदर जाको रूप है । शृंगार रसमें मग्न है । चंदन केसरि अगर कपूर कस्तूरी ईनको । अंगराग भालमें केसरिको तिलक है । नानाप्रकारके आभूषण पहरे है । बडो प्रतापी है । ऐसो जो राग ताहि शंकरनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रात्रिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

शंकरनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यय चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति शंकरनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको बारवो पुत्र हीरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों हीरनाटसंकीर्णनट गाईके । वांको हीरनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ हीरनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । फूलनकी माला पहरे है । केसरिको अंगराग किये है । हाथमें खड्ग है । बेरीनके हीयमें भय उपजावे

है । ऐसो जो राग तांहि हीरनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

हीरनाट राग (संपूर्ण).

म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय

॥ इति हीरनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको तेरवो पुत्र देषाखनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों । देषाखराग संकीर्णनट गाईके । वांको देषाखनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ देषाखनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके भालमें सिंदूरको विंदा है । ओर आंखनमें वीररस झलके है । सोनेके सों जाको अंग है । पुष्ट अंग है । विजयको छलमें प्रवीन है । पुष्टभुजामें रज लगि रही है । मल्लयुद्धमें चतुर है । पीतांबरकी काछनी है । हनुमानसो बली है । ओर लातसों वैरीकी छातिमें प्रहार करे है । ऐसो जो राग तांहि देषाखनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । ग प ध नि स स नि ध प म ग स । यातें षाडव है । याको संध्यासमें गावनो । यह तो याको वखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग वरतनों । जंत्रसों समझिये ॥

देषाखनाट राग (षाडव).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक.
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असली, मात्रा दोय

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति देषाखनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको चोदवो पुत्र स्याम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसो स्याम राग संकीर्णनट गाईके। वाको स्यामनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ स्यामनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको स्याम रंग है। पीतांबरको पहरे है। कोकिल-कोसो मधुर नाद है। कंठमें मोतीनकी माला है। केसरिको तिलक लिलाटमें है। कामिनीनके संग विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि स्याम जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यांतें संपूर्ण है। रातिके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये ॥

स्यामनाट राग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति स्यामनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पंद्रवो पुत्र कानाडनाटकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों । कानाडराग संकीर्णनट गाईके । वांको कानाडनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ कानाडनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको गोरो रंग है। पीतांबर पहरे है । जडाऊ कडा हाथनमें है । ओर माथेपें सोनाको मुकुट है । हाथमें खड्ग लिंय है ।बांये हाथमें कमल है । गजमोतीनकी माला कंठमें है । घोडापें असवार है । संग फोज है । ऐसो जो राग ताहि कानाडनाट जांनिये॥शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों। यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

कानाडनाट राग (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति कानाडनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको सोलवो पुत्र वराडी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों वराडी-राग संकीर्णनट गाईके । वांको वराडीनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों । याको लोकिकमें वरारी कहे है ॥ अथ वराडीनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ अपनें मुखसों मित्रनके मधुर वचनसों जाकी स्तुति होत है । गोरो जाको वर्ण है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । अति प्रसन्न जाको मुख है । अति सकुमार जाकी देह है । फूलनकी माला पहरे है । ओर जाके उपर चवर ढुरे है । कामदेवको मित्र है । जाके मनमें बडो उछाह है । अधिक प्रताप है । एसो जो राग तांहि वराडी नाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है । याको सांझसमें वा दिनके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

वराडीनाट राग (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति वराडीनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको सतरवो पुत्र विभासनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों । विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों विभासराग संकीर्णनट गाईके । वांको विभासनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ विभासनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ चंद्रमासों जाको मुख है । गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । चंदनको अंगराग लगायो है । फूलनकी माला जाके गरेमें है । केसरिको तिलक लगाये है । हाथमें जाके खड्ग है । ऐसो जो राग तांहि विभासनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । ग प ध स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत हैं । रातिसमें प्रथम पहरमें गावत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

विभासनाट (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति विभासनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको अठारवो पुत्र विहागनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको। अपने मुखसों विहाग गाईके वांको विहागनाट नाम करिके । नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ विहागनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है। स्वेत वस्त्र पहरे है। और जाके शरीरमें सुगंध आवे है। पानको बीडा हाथमें है। कामदेवयुक्त है। विरहनीनको डर पावे है। लालकमलसे नेत्र है। मल्लिकाके फूलनकी माला पहरे है। अपनें समानरूप सखीसबन करिके सुखी है। ऐसो जो राग ताहि विहागनाट जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको रातिके दुसरे पहरमें गावनों। यह तो याको वखत है। और चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये ॥

विहागनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति विहागनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पुत्र संकराभरण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गाईके । नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । वांको संकराभरण नाम करिकें नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ संकराभरणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कसुमल वस्त्र पहरे है । गलेमें कमलकी माला है । सुंदर रूप है । शृंगार किये है । शरीरमें सुगंध लमाये है । विभूतिको तिलक है । नृत्य करि-वेको आरंभ जाको प्रिय है । आनंदयुक्त है । ऐसो जो राग तांहि संकराभरण

जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यह तो याको बखत है । सायंकालसमें रात्रिमें प्रसिद्ध है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

संकराभरण (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

॥ इति संकराभरण संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धनाटकी रागनी आभीरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। ईशान नाम मुखसों आभीरी गाईके वाको शुद्धनाटकी छाया युक्ति देखि। शुद्धनाटको आभीरी दीनी ॥ अथ आभीरीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। स्याम वस्त्र पहरे है। रसिले जाके नेत्र है। मधुर बचन बोले है। सुंदर चोटी है। कोमल अंग है। मुगानकी माला पहरे है। काननेमें ढेडी पहरे है। शृंगार रसमें मग्न है। रासमें नृत्य करि मनको हरे है। ऐसी जो रागनी तांहि आभीरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पहरमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर दुपहर उपरांति चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किंये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये ॥

आभीरी रागनी (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ आभीरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध नाटको प्रथम पुत्र जुजावंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। ईशाननाम मुखसों जुजावंत राग गाईके। वाको शुद्ध नाटकी छाया युक्ति देखि। शुद्ध नाटको पुत्र दीनो ॥ अथ जुजावंतको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको स्याम रंग है। पीतांबर पहेरे है। केसरिको तिलक लिलाटमें है। मोतिनकी माला कंठमें है। सुंदर मुरली बजावे है। ललित-त्रिभंगी है। शृंगाररसमें मग्न है। कामदेवको प्यारो है। ऐसो जो राग तांहि जुजावंत जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि म म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनो। यह तो याको वखत है। रात्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। रागवरतेसो जंत्रसो समझिये ॥

जुजावंत (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति जुजावंत संपूर्णम् ॥

अथ हमीर रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों हमीर गाईके । वांको शुद्ध नाटकी छाया युक्ति देखि । वांको हमीर नाम कीनों ॥ अथ हमीरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो

जाको रंग है। लाल वस्त्र पहरे है। शृंगाररसमें मग्न है। तरुण जाकी अवस्था है। मंद मुसिकान करे है। एक हाथमें छडी है। दुसरे हाथमें दंड लिये है। कामदेवको मित्र है। माथेपें मुकुट है। काननमें कुंडल है। हाथनमें कडा है। स्त्रीनके मनको वस करे है। ऐसो जो राग तांहि हमीर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्या समें गावनों। यहतो याको वखत है। ओर आधि रात तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते ॥ इति हमीर संपूर्णम् ॥

अथ **शक्तिवल्लभाकी** उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें विभाग करिवेको। अपनें मुखसों गुजाकरी, रामकरी, गांधार, स्याम, गूजरी, संकीर्ण पूर्वी, गाईके। याको शक्तिवल्लभा नाम कीनो॥ अथ शक्तिवल्लभाको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। पीतांबर पहरे है। केसरिको तिलक लिलाटमें है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे है। चंद्रमासो जाको मुख है। चंचल जाके नेत्र है। बडो चतुर है। शृंगाररसमें मग्न है। रत्नके सिंहासनपें बेठो है। चंदनको अंगराग लगाये है। ओर हाथसों कमल फिरावे है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। मदमें छक्यो है। कामनीनके संग विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि शक्तिवल्लभा जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभात समें गावनों। यह तो याको वखत है। ओर चाहो तब गावो। यह राग मंगलीक है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुध्दि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शक्तिवल्लभा संपूर्णम् ॥

अथ फरोदस्तकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें प्रसन्न होई करिके उन रागनमेसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों पूर्वी स्याम संकीर्ण गोड गाईके वांको फरोदस्त नाम कीनों ॥ अथ फरोदस्तको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। कमलपत्रसें बडे जाके नेत्र है। अंतरसो भीजे केस है। रत्नकी माला है। लिलाटमें केसरिको तिलक लगायो है। मदिराके अंमलसों छक्यो है। सुंदर स्त्रीनके संग क्रीडा करे है। ऐसो जो राग तांहि फरोदस्त जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध

नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

फरोदस्त (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति फरोदस्त संपूर्णम् ॥

अथ अंधजरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों वि-
भाग करिवेको । अपनें मुखसों मारुसुद्ध जयरा श्रीसंकीर्ण केदारो गाईके । वांको
अंधजर नाम कीनों ॥ अथ अंधजरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है ।
लाल वस्त्र पहरे है । चंद्रमासो जाको मुख है । अंतरसों लंबे जाके केस है ।
सोनेकीसी जाकी कांति है । बडो जाको रूप है । अनेक रंगके फूलनकी माला
पहरे है । रसिले तीखे अनियारे जाके नेत्र है । मंद मुसकान करे है । कानममें
कमलकी कली पहरे है । केसरको तिलक जाके लिलाटमें है । एक हाथमें दंड
है। दूसरे हाथमें त्रिशूल है । वाघंबर बिछाय बेठ्यो है । शिवको ध्यान करे
है । मित्रनके संग विहार करे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसो जो
राग ताहि अंधजर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग
म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत
है । ओर आधिराति ताई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें
किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय
बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति अंधजर संपूर्णम् ॥

अथ अंधावरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों वि-
भाग करिवेको । अपनें मुखसों खटआसावरी संकीर्ण देसी गाईके । वांको
अंधावरी नाम कीनों॥ अथ अंधावरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है ।
स्वेत वस्त्र पहरे है । जाकी चोटी मोतियाके फूलनसों गुही है । कानममें जडाऊ
कुंडल है । कंठमें जाके मोतीनकी माला है । लालकंचुकीको पहरे है । हाथमें
जाके कंकन है । जाके पावनमें नूपुर है । कोमल जाको अंग है। हाथनमें दर-
पन लिये है । अपनें स्वरूपको निहारे है । केलनीके वनमें प्रियको ध्यान करे
है । देवता जाकी स्तुति करे है । ऐसी जो रागनी ताहि अंधावरी जांनिये ॥
शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है।
याको रातिके दुसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब
गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों।जंत्रसों समझिये॥

अंधावरी (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति अंधावरी संपूर्णम् ॥

अथ सावरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकराभरण पूर्वी केदार बिलावल संकीर्णकुकुभ गाईके। वांको सावर नाम कीनों ॥ अथ सावरको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहेरे है । पुष्ट जाको अंग है । जाके अंगनमें रति झलके है। चंपाके फूलनकी माला जाके कंठमें है । लाल डोरादार बडे जाके नेत्र है । कटा-

छिनसों स्त्रीनके मनको हरे है । एक हाथमें छडी लिये है । दुसरे हाथमें त्रिशूल लिये है । मित्रनसहित है । शृंगाररसमें मग्न है । कमलनकी माला पहरे है । सुंदर जाको रूप है । केसरको अंगराग लगाये है । केसरिको तिलक लिलाटमें है । माथेपें जाके मुकुट है । काननमें कुंडल पहरे है । सब अंगनमें आभूषण है । मृदंगको शब्द जाको प्यारो है । ऐसो जो राग तांहि सावर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । और दिनमें चाहो तब गावो ॥ इति सावर संपूर्णम् ॥

अथ कोवाहरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों विहाग राग कल्याण संकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको कोवाहरनाम कीनों ॥ अथ कोवाहरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । मुखमें तांबूल खायो है । कामदेव करिके युक्त है । राजानकी सभा कीये सिंहासनपें बैठ्यो है । मोतीनकी माला कंठमें है । कमलपत्रसे विसाल जाके नेत्र है । छत्र जाके ऊपर फिरे है । दोऊ ओर चवर जाके उपर ढुर है । सेवकजन करिके युक्त है । माथेपें जाके मुकुट है । हाथनमें कडा पहरे है । काननमें कुंडल पहरे है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसो जो राग तांहि कोवाहर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । और आधिरात तांई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुध्दि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कोवाहर संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरमण रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकराभरण संकीर्ण श्री गाईके । वांको श्रीरमण नाम कीनों ॥ अथ श्रीरमणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । लाल वस्त्र पहरे है । कमलकी माला कंठमें पहरे है । शृंगाररसमें मग्न है । केसरचंदनको अंगराग है । नृत्य गीत जाको प्यारो है । बडे जाके नेत्र है । तरुण जाकी अवस्था है । हांसिके वचन कहे है । सुंदर जाको स्वरूप है । हाथसों कमल फिरावे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । केसरको तिलक लिलाटमें

लगायें है । ऐसो जो राग तांहि श्रीरमण जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों। यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति श्रीरमण संपूर्णम् ॥

अथ ताराध्वनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सुद्धमल्लार संकीर्णकेदार गाईके । वांको ताराध्वनी नाम कीनों ॥ अथ ताराध्वनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । ओर पीतांबरको पहरे है । चंदनको अंगराग लगायें है । लिलाटमें केसरको तिलक लगायो है । ओर बडे नेत्र है । बारनको जुडा जाके माथे बंधो है । शिवजीको ध्यान करे है । मिष्ठन करिके सरन है । मोतीनकी माला कंठमें पहरे है। ओर सब अंगनमें आभूषण पहरे है । मोरनके समूहमें विहार करे है । परम उदार है । ऐसो जो राग तांहि ताराध्वनी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स नि ध प म ग रि स । यांतें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । आधिरात तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

ताराध्वनी राग (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

॥ इति ताराध्वनी राग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीसमोधकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों मालसिरी, सुद्धश्री, टंकराग, भीमपलासी, संकीर्ण गाईके । वांको श्रीसमोध नाम कीनों ॥ अथ श्रीसमोधको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । रंग-विरंगे फूलनको धरे है । मृगकेसे विशाल जाके नेत्र है । तरुण जाकी अवस्था है । शृंगार रसमें मग्न है । बहुत सुंदर है । सताईस मोतीनकी माला गलेमें है । हाथमें कमल फिरावे है । आनंदके आसूं जाके नेत्रनमें आवे है । विभागनी जो अपनी स्त्री ताको मनावे है । ऐसो जो राग ताहि श्रीसमोध जांनिये ॥ शास्त्रमें-तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर आधीरात तांई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति श्रीसमोध संपूर्णम् ॥

अथ मनोहर रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके वांको मनोहर नाम कीनों ॥ अथ

मनोहरको स्वरूप लिख्यते ॥ जाकी शुद्धस्वरके मेलमें उत्पत्ति होय। ओर षड्ज स्वर जाके आदिमें होय। जाके आरोहमें रिषभ गांधार ओर मध्यम नहीं होय। जामें पंचमको षड्जको कंप होय। धैवतको प्राथत होय करिकें धैवत तें अवरोहमें पंचमको कंप करिये। ओर पंचमतें षड्जको उच्चार करि मध्यमको उच्चार कीजिये। ओर पहले निशादको उच्चार मध्यमको उच्चार कीजिये। गांधारको कंप कीजिये ओर षड्जमें पूर्ण कीजिये। शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। स रि म म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दुपहर उपरांति लेके संध्या तांई चाहो तब गावो। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी शिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति मनोहर राग संपूर्णम् ॥

अथ देवकारिकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों कुंभारी, सरस्वती, संकीर्णमालसिरी गाईके। वांको देवकारिका नाम कीनों ॥ अथ देवकारिकाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। कमलपत्रसे जाके नेत्र हैं। चंद्रमासों जाको मुख है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। आनंदको जल जाके नेत्रनमें आई रहे है। गांन जाको प्यारो है। तरुण सखी जाके संग है। मोरनके संग क्रीडा करे है। केसर चंदनको अंगराग लगायें है। फूले कमलकी माला पहरे है। शृंगाररसमें मग्न है। जडाऊ फूलकी वेसरि कानमें पहरे है। कमलकी कली नाकमें पहरे है। जाके माथेपें केसरकी आड है। नेत्रनमें काजर आंजे है। हाथमें काचकी चूडी पहरे है। नानाप्रकारके बाजनसें आसक्त है। तरुण अवस्था हांसिके बचननसों प्रियसों बतलावे है। ऐसी जो रागनी तांहि देवकारिका जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। संध्यासमें गावनी। यह तो याको वखत है। रातिमें चाहो तब गावो ॥ इति देवकारिका संपूर्णम् ॥

अथ विचित्राकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों ईमन, वरावी, संकीर्णचेतीगोडी गाईके। वांको विचित्रा नाम कीनों ॥ अथ विचित्राको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। हाथसों कमल फिरावे है। बडे जाके नेत्र है।

अतरसो भीजे सुंदर जाके केंस है। पानकी बीडी खाई है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । छत्र चवर जाके उपर फिरे है । रत्नसिंहासनपें बेठी है। किन्नरि जाके संग है । मधुर बचन सखीनसों कहे है । फूलनसों जाकी वेनी गुही है । शृंगाररसमें मग्न है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि विचित्रा जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनी । यह तो याको बखत है । आधिरात तांई चाहो तब गावो। यह रागणी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो बरतलीज्यो ॥ इति विचित्रा संपूर्णम् ॥

अथ चौराष्टककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों विभाष संकीर्ण ललित गाईके । वांको चौराष्टक नाम कीनों ॥ अथ चौराष्टकको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको वर्ण है । पानको बीडा हाथमें है । ओर दुसरे हाथमें सूवाको पींजरो है । मुकुट जाके माथेपें है । भालमें केसरको विंदो है । स्वेत वस्त्र पहरे है । ओर बडो कामी है । अनेक तरहके आभूषण पहरे है । मोतीयाके फूलनकी माला जाके कंठमें है । कमलपत्रसे विशाल जाके नेत्र है । मीठी बानीसों सूवाको पढावे है । ऐसो जो राग तांहि चौराष्टक जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनसों मायो है । स रि ग म प ध स। यातें षाडव है । याको सूर्योदयसमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दिनमें प्रथम पहरमें चाहो तब गावो ॥

अथ शुद्धबंगालकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें सद्योजात नाम मुखसों शुद्धबंगाल गाईके । वांको शुद्ध भैरवकी छाया युक्ति देखि शुद्धभैरवको पुत्र दीनों॥ अथ शुद्धबंगालको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । दाहिणे हाथमें चंद्रकांति मणिकी माला है। बांयें हाथमें सोनेका प्याला है। ओर स्वरसों वेदको पाठ करे है। उदार रूप है । ऐसो जो राग तांहि शुद्धबंगाल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों मायो है । स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग मंगलीक

है । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धबंगाल संपूर्णम् ॥

अथ कर्णाटबंगालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कर्णाटसंकीर्णबंगाल गाईके । वांको कर्णाटबंगाल नाम कीनों ॥ अथ कर्णाटबंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । कसूंभी पाघ बांधे है । हाथनमें कडा पहरे है । जडाउ बाजू है । माथेपें मुकुट है । काननमें कुंडल है । गरेमें मोतीनकी माला है । अपने समान सखी संग है । कमलके फूलकी छडी हाथमें है । ऐसो जो राग तांहि कर्णाटबंगाल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनसों गायो है । ग म प ध नि स ग । यातें षाडव है । याको पहर दिनभीतर गावनों । यह तो याको वखत है । दुपहर पहला चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कर्णाटबंगाल संपूर्णम् ॥

अथ गोरखीबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों जजवंती संकीर्ण बिलावल गाईके । वांको गोरखीबिलावल नाम कीनों ॥ अथ गोरखीबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । ओर लिलाटमें केसरको तिलक लगाये है । कंठमें रत्ननकी माला पहरे है । प्रौढ जाकी अवस्था है । शृंगाररसमें मग्न है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । माथेपें जाके मुकुट है । काननमें जाके मुद्रा है । ऐसो जो राग तांहि गोरखीबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो यहतो याको वखत है । दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेंसों । जंत्रसों समझिये ॥

गोरखीबिलावलराग (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति गोरखीबिलावल राग संपूर्णम् ॥

अथ शंकरबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों केदारराग संकीर्णबिलावल गाइके । वाको शंकरबिलावल नाम कीनों ॥ अथ शंकरबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । मनमें शिवजीको ध्यान करे है । लाल कमलसे जाके नेत्र है । सुंदर जाको रूप है । केसर चंदनको अंगराग लगाये है । मणिनके जडाऊ मुकुट जाके माथेपें है । मणिनके कुंडल काननमें हैं । एक हाथसों कमल फिरावे है । दुसरे हाथसों ताल बजावे है । मित्रनकरिकें सहित है । ऐसो जो राग ताहि शंकरबिलावल जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । कोई याको रातिकमें गावे है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

शंकरबिलावल (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढीमात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति शंकरबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ अलहियाबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों बिलावल संकीर्णबिलावली गाईके । यांको अलहियाबिलावल नाम कीनों ॥ अथ अलहियाबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कमलके रंगके वस्त्र पहरे है । शृंगाररसमें मग्न है । कोमल जाको अंग है । तरुण जाकी अवस्था है । मधुर धुनिसों मृदंग बजावे है । केसरको तिलक जाके ललाटमें है । माथेमें मुकुट है । जडाऊ कुंडल जाके कानमें है । मदसों छक्यो है । ऐसो जो राग ताहि अलहियाबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कियें । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

अलहियाबिलावल (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति अल्हियाबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ लछोसाखबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों इमनतुल्य संकीर्ण बिलावल गाईके । वांको लछोसाखबिलावल नाम कीनों ॥ अथ लछोसाखबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । केसर चंदनको अंगराग किये है । जडाऊ मुकुट माथेपे है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । सिंहासनपें बैठ्यो राग करे है । छत्र चवर जाके उपर दुरे है । हाथसों कमल फिरावे है । ऐसो जो राग सो लछोसाखबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । स रि ग प ध नि स । यातें षाडव है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

लछोसाखबिलावल (षाडव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा तीन

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति ऊछोसाखबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ भुक्षिबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भुक्षिबिलावल नाम कीनों ॥ अथ भुक्षिबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें मध्यम सुर हीन होय ओर जामें षड्ज पंचम स्वरको कंप होय । धैवतमें जाको न्यास अंस ओर गृह स्वर होय । त्रियोगमें जाको गावनो होय । ऐसो जो राग तांहि भुक्षिबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनसो गायो है । ध नि स रि ग प ध । यातें षाडव है । याको चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति भुक्षिबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ सरपरदाबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागन-मेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गोड संकीर्णबिलावल गाईके । वांको सरप-रदा बिलावल नाम कीनों ॥ अथ सरपरदाबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । कोमल जाको अंग है । शृंगाररसमें मग्न है । कमलके रंगकी चोली पहरे है । तरुण जाकी अवस्था है। मोतीनकी माला कंठमें पहरे है। मोरनके गणसों विहार करे है । मधुर सुरनसों गावे है। सब

अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसो जो राग ताँहि सरपरदाबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। ध नि स रि ग म प ध। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। दूपहर पहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। सो जंत्रसों समझिये ॥

सरपरदाबिलावल (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा च्यार	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचग असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सरपरदाबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ कन्हडीबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन राग-नेंमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कन्हडी संकीर्णबिलावल गाईके । वाको कन्हडीबिलावल नाम कीनों ॥ अथ कन्हडीबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कमल सरिखे लाल वस्त्रको पहेर है । रंगबिरंगी जाके वस्त्र है । तरुण जाकी अवस्था है । एक हाथमें खड्ग है । दुसरे हाथमें ताल है । सिद्ध चारण जाकी स्तुति करे है । एसो जो राग तांहि कन्हडीबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो यंत्र सो समझिये ॥

कन्हडीबिलावल राग (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति कन्हडीबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ उत्तरगुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ जाके आरंभमें सुध्द गांधार स्वर होय । जाके आरोहमें मध्यमस्वर ओर निषादस्वर न होई । गांधारस्वर संयुक्त मध्यमस्वर होय । धैवत संयुक्त निषादस्वर होय । गांधारस्वरहीकी जामें मूर्छना होय । ऐसी जो रागनी तांहि उत्तरगुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । ग प ध म स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दुपहर तांई चाहो तब गावो । यह रागनी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुध्दि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति उत्तरगुजरी संपूर्णम् ॥

अथ दक्षिणादिगुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन राग-नमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों ककुभ, पूर्वी, बिलावल, संकीर्ण केदार गाईके । वांको दक्षिणादिगुजरी नाम कीनों ॥ अथ दक्षिणादिगुजरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । कोमल अंग है । शृंगाररसमें मग्न है । तरुण अवस्था है । ककरेजी चोली पहरे है । कमलपत्रसे बडे नेत्र है । पुष्ट अंग है । जाके शरीरमे रति झलके है । चंपाके फूलनकी माला पहरे है । शिव-जीके ध्यानमें मग्न है । ओर पास जाके सखी है । सब अंगनमें आभूषण पहरे मुखमें तांबूल चबावे है । एक हाथमें छडी है । ऐसी जो रागनी तांहि दक्षिणादि-गुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । आधि रातितांई चाहो तब गावो । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुध्दि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति दक्षिणादिगुजरी संपूर्णम् ॥

अथ मंगलगुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों स्याम, रागकली, गांधार, ईनसों संकीर्ण गुजरी गाईके । वांको मंगलगुजरी नाम कीनों ॥ अथ मंगलगुजरीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । बांये हाथमें जाके छडी है । पूर्ण चंद्रमासों जाको मुख है । मोतीनको हार पहरे है । कसूमल चोली पहरे है । कानमें जाके जडाऊ कुंडल है । पायनमें नूपुर है । चंचल जाके नेत्र है । कुंकुमको बिंदा लगाये है । चंदनको अंगराग लगाये है । हाथसों स्वेत कमल फिरावे है । रत्नके सिंहासनमें बेठी है । सखी जाके संग है । शृंगाररसमें मग्न है । कोमल मधुर वचन कहे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि मंगलगुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मंगलगुजरी संपूर्णम् ॥

अथ प्रतापवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको प्रतापवराली नाम कीनों ॥ अथ प्रतापवरालीको लछन लिख्यते ॥ स्वरनके भेदतें जामें मध्यमतीव्रतर निषादतीव्रतर गांधार जामें आदि । ऐसी रागनी गाईके । वांको नाम प्रतापवराली कीनों ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्तस्वरनमें गाई है । म म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दुसरे पहरमें गावनी । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति प्रतापवराली संपूर्णम् ॥

अथ कल्पानवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कल्पानवराली संकीर्ण गाईके । वांको कल्पानवराली नाम कीनों ॥ अथ कल्पानवरालीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । सखी जन जाके मीठे वचनसे स्तुति करे है । फूलनसे गुही जाकी बेनी है । चवर ढुरे है । नानाप्रकारके शृंगार करे है । कोमल अंग

है। मुखमें पान खाये है। गरेमें मोतीनकी माला है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। छत्र चवर जाके उपर ढुरे है। शृंगाररसमें मग्न है। मधुर सुरनसों अपनों राग गावे है। ऐसी जो रागनी ताहि कल्पानवराली जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको वखत है। दुपहर उपरांति चाहो तब गावो। यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरत लीज्यो ॥ इति कल्पानवराली संपूर्णम् ॥

अथ नागवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। विशेष लोकानुरंजनके लिये। अपनें मुखसों स्वरनके भेदतें। जामें मध्यम तीव्रतर अरु कोमल धैवत। गांधार धैवतको उच्चार करी। ऐसी रागनी गाईके। वांको नाम नागवराली कीनों। शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। ग म प ध नि स रि स नि ध प म ग म प ग ग रि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होयसों वरत लीज्यो ॥ इति नागवराली संपूर्णम् ॥

अथ पुन्नागवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें विशेष लोकानुरंजनके लीये। अपनें मुखसों स्वरनके भेदतें ॥ जामें निषादतीव्र अरु मध्यम तीव्रतर। गांधार धैवतसों आलाप करी। ऐसी रागनी गाईके। वांको पुन्नागवराली नाम कीनों। शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। ग म प ध नि स रि स नि ध प म ग। याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी। यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरत लीज्यो ॥ इति पुन्नागवराली संपूर्णम् ॥

अथ सुद्धवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। अपनें मुखसों सुद्ध राग संकीर्ण वराली गाईके ॥ वांको सुद्ध वराली नाम कीनों ॥ अथ सुद्ध वरालीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंग-बिरंग वस्त्र पहरे है। मोतीनके हार जाके कंठमें है। सोनेके जडाऊ कडा जाके हाथमें है। केसरिको अंगराग किये है। अपनें पीयके गोदमें बेठी है। ओर हाथसों बीन बजावे है। सुगंधसो सनी सुथरी जाकी अलक है। मंद मुसकान करे है।

अरु नेत्रकी दुलनसों चतुरनके मनको बस करे है । ऐसी जो रागनी तांहि सुद्ध वराली जांनिये । शास्त्रमेंतो सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याको दुपहरको गावनी। यह तो याको वखत है। ओर दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जंत्रसो समझिये ॥

अथ सुद्धवराली (संपूर्ण).

म	मध्यम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति सुद्धवराली संपूर्णम् ॥

अथ टोडीवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेका अपनें मुखसों चेतीसंकीर्ण आसावरी गाइकें । वांको टोडीवराली नाम कीनों ॥ अथ टोडीवरालीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । विचित्र रंगके वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । बांये हाथमें कमल है। दाहिनें हाथमें ताल बजावे है । तरुण जाकी अवस्था है । मुखमें पान चाबे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । जाके उपर चवर दुरे है । सिंहासनमें बैठी है। ऐसी जो रागनी तांहि टोडीवराली जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है ।

स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याको दिनके तीसरे पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । और दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

टोडीवराली (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति टोडीवराली संपूर्णम् ॥

अथ छायाटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों निषाध पंचम स्वरहीन टोडी गाईके । वांको छायाटोडी नाम कीनों ॥ अथ छायाटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ कुंदके फूलसों जाको मुख है । बडे जाके नेत्र है । देखन वारे पुरूषनके नेत्रनको अरु मनको आनंद उपजावे है । वनमें सुंदर फूले कल्पवृक्षको छायामें विहार करे है । ऐसी जो रागनी तांहि छायाटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है। स रि ग म ध री । यातें ओडव है। याको दिनके प्रथम पहरे उपरांति गावनी ।

यहतो याको वखत है । दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनी बरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

छायाटोडी (आडव).

म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति छायाटोडी संपूर्णम् ॥

अथ बहादुरीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिकें । अपने मुखसों टोडी संकीर्ण आसावरी गाईके । वांको

बहादुरीटोडी नाम कीनों ॥ अथ बहादुरीटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। रंगबिरंगे वस्त्र पहेरे है। बांये हाथमें दंड है। दूसरे हाथमें ताल बजावे है। चंदनको अंगराग लगाये है। मोहनी मूर्ती है। ओर सागरे शृंगार करिके युक्त है। केलनके वनमें प्रियके जसको गावे है। गंधर्व जाकी स्तुति करे है। तरुण जाकी अवस्था है। सब अंगनमें आभूषण पहेरे है। मंद मुसकान मुख है। ऐसी जो रागनी तांहि बहादुरीटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गाई है। स रि ग म ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभात समें गावनी। यह तो याको वखत है। मध्यान तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जत्रसों समझिये ॥

बहादुरीटोडी (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति बहादुरीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ जोनपुरीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों टोडी संकीर्ण कान्हडी गाईके । वांको जोनपुरीटोडी नाम कीनों ॥ अथ जोनपुरीटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ उजल बर्फ सरीखो जाको रंग है । केसर कर्पूरको अंगराग लगाये है । रंगबिरंगे वस्त्र पहेरे है । सब अंगनमें आभूषण पहेरे है । बडे जाके नेत्र है । एक हाथमें खड्ग है । दूसरे हाथमें वीणा बजावे है । सिद्ध चारण जाकी स्तुति करे है । ऐसी जो रागनी ताहि जोनपुरीटोडी जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । दिनके दूसरे पहरमें गावनी । यहतो याको वखत है । दूपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी बरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

जौनपुरीटोडी (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति जोनपुरीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ मार्गटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पंचमस्वरहीन टोडी गाईके । वांको मार्गटोडी नाम कीनों ॥ अथ मार्गटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । ककरेजी वस्त्र पहरे है । सबनके मनको वस करे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । प्रौढ जाकी अवस्था है । रसीलि जाके नेत्र हैं । बांये हाथमें छडी है । दाहिने हाथसों ताल बजावे है । चंदनको अंगराग किये है । वस्त्रनमें जाके अबीर लग्यो है । ऐसी जो रागनी ताहि मार्गटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गाई है। ध नि स रि ग म ध नि स रि स नि स नि ध नि ध नि ध म ध नि स रि स नि ध नि ध म । यातें षाडव है । प्रभातसमें गावनी । यह तो याको वखत है । दूपहर ताई चाहो तब गावो । याकी आलाचारी छह स्वरनों किये । रागनी वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

मार्गटोडी (षाडव).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मार्गटोडी संपूर्णम् ॥

अथ लाचारीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों काफी, पटमंजरी, दभी, संकीर्णटोडी गाईके । वाको लाचारीटोडी नाम कीनों ॥ अथ लाचारीटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंग-बिरंगे वस्त्र पहरे है । बाये हाथमें छडी है । दाहिनें हाथसों ताल बजावे है । तरुण जाकी अवस्था है । प्रफुल्लित जाके नेत्र है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । जननको मोहित करे है । अबीर लगाये है । मुखमें पान खाये है । पतिको स्मरण करे है । जाकी प्यारी सखी उत्साह बढावे है । पतिको मिलाप चावे है । शृंगाररसमें जाको चित है । एसी जो रागनी तांहि लाचारीटोडी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । रागनी वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

लाचारीटोडी जंत्र (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति लाचारीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ काफीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवको । अपनें मुखसों काफीसंकीर्णटोडी गाईके । वांको काफीटोडी नाम कीनों ॥ अथ काफीटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । छायानाटके मेलसों उत्पत्ति भई है । सुंदर जाकी चोटी है । काननमें जडाऊ करणफूल है । सुंदर वस्त्र आभूषण पहरे है । ओर मदिरापानसों मतवारी है । तरुण जाकी अवस्था है । अनेक सहेली जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि काफीटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्त-स्वरनमें गाई है । याका पंचममें अंशगृह स्वर षड्जमें न्यास स्वर । प ध नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरी पहरकी पांचई घडीमें गावनी । यहतो याको वखत है । ओर दिनके दूसरे पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

काफीटोडी (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति काफीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ पूर्वीसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों पूर्वी संकीर्ण सारंग गाईके । वांको पूर्वीसारंग नाम कीनों ॥ अथ पूर्वीसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंग वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग लगाये है । फूलेलसो भीजे केस है । कस्तूरीको बिंदो लिलाटमें है । कमलपत्रसे नेत्र है । मंदमुसकान करे है । सखीनमे मधुर सुरसों गान करे है । शृंगाररसमे मग्न है । माथेपे मुकुट है । बाहुनमे भुजबंद है । मुरली बजावे है। विचित्र फूलनकी माला पहरे है । ऐसो जो रागनी तांहि पूर्वीसारंग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी यह तो याको बखत है । संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो बरबलोज्यो ॥ इति पूर्वीसारंग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। अपनें मुखसों शुद्धसंकीर्ण सारंग गाईके। यांका शुद्ध सारंग नाम कीनों ॥ अथ शुद्धसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। पीतांबर पहर है। माथेपें जाके मुकुट है। काननमें मकराकृत कुंडल है। और कौस्तुभमणि जाके कंठमें है। जिनके चार भुजा है। शंख चक्र गदा पद्मको धारण करे है। और बाई वोर जिनके लक्ष्मी विराजमान है। देवतानकी सभामें विराजे है। सिद्ध पार्षद जिनकी स्तुति करें है। ऐसो जो राग तांहि शुद्धसारंग राग जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। मध्यानको गावनो। यह तो याको बखत है। दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सों जत्रसों समझिये ॥

शुद्धसारंग (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति शुद्धसारंग संपूर्णम् ॥

अथ वृंदावनीसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको । पार्वतीजीके मुखसो सारंगराग संकीर्ण मल्लार माईके । मल्लारकी छाया युक्ति देखि वांको मलार सारंग नाम कीनों । याको लोकिकमें वृंदावनीसारंग कहे है ॥ अथ वृंदावनीसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । दोय जिनके भुजा है । काछनी पहरे है । पीतांबरको पहरे है । मुखसो मुरली बजावे है । मोर मुकुट जिनके माथेपे है । सखा जाके संग है । गाई चरावे है । माध्यानसमें कदमके रुखके नीचे बैठ्यो है । ऐसो जो राग तांहि वृंदावनीसारंग जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनसों गायो है । स रि म प नि स । यांतें ओडव है । कोउक याको षाडव कहत है । याको मध्यामसमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

वृंदावनीसारंग (ओडव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति वृंदावनीसारंग संपूर्णम् ॥

अथ गौडसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकरा अरुणटसंकीर्ण सारंग गाईके । वांको गौडसारंग नाम कीनों ॥ अथ गौडसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । मणिनके जडाऊ मुकुट जाके माथेपे है । सोनेके जडाऊ कडा हाथमें है । मुखमें तांबूल खावे है । कमल-पत्रसें बडे जाके नेत्र है । बडो जाको प्रताप है । कौस्तुभमणि जाके कंठमें है । वनमालाको पहरे है । सखानके संग विहार करे है । ऐसो जो राग तांहि गौड-सारंग जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें

संपूर्ण है । याको मध्यान उपरांति गावनों । यह तो याको वखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किंयेराग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

गौडसारंग (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा चार
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति गौडसारंग संपूर्णम् ॥

अथ धवलसिरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसे विभाम करिवेको । अपनें मुखसों वरारीसंकीर्ण जैतसिरी गाईके । वांको धवलसिरी नाम कीनों ॥ अथ धवलसिरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरें है । अपनी इछासों सखीनके संग विहार करे है । फूलनसों जाकी वेनी गुही है । चवर जाके ऊपर ढुरे है । अनेक प्रकारके शृंगार करे है । कामदेव करिके व्याप्त है । हाथमें कमल फिरावे है । कसूमल चोली पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । चतुरनके मनको वस करे है । ऐसी जो रागनी तांहि धवलसिरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दुपैर उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी व्हेत । सो जंत्रसों समझिये ॥

धवलसिरीरागनी (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति धवलसिरी संपूर्णम् ॥

अथ जैतसिरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अघोर नाम मुखसों जैतसिरी गाईके । वांको देशकारकी छाया युक्ति देखी देशकारको दीनी ॥ अथ जैतसिरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कसूमल वस्त्रनको पहर है । नाकमें लवंगकी भांति वेसरी पहर है । कमलकलीनको कानमें पहर है । ओर कसूमल कंचूकीको पहरे है । चंद्रमाकी कलासों कुटिल केसरिकी विंदी जाके लिलाटमें है । काजर जीके आंखनमें है । दोऊ हाथमें काचकी चूरी है । जाके केसनकी सुंदर वेनी है । अंगनमें सोनेके आभूषण पहर है । ऐसी जो रागना तांहि जैतसिरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसा गाई ह । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर रात्रिमें प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । रागनी वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

जैतसिरी (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति जैतसिरी संपूर्णम् ॥

अथ फूलसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकीर्ण मालसिरी गाईके । वांको फूलसिरी नाम कीनों ॥ अथ फूलसरीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । कोमल अंग है । सुगंधयुक्त जाकी वेनी है । तांबूल जाके मुखमे है । ओर प्रवीण है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । नाकमें बडे मोतीनकी वेसरी पहरे है । चंदनको अंगराग लगाये है । मृगकेसे बडे जाके नेत्र है । तरुण अवस्था है । अपनें प्रियसों हासीके बचन कहे है । हाथसों कमल फिरावे है । ऐसी जो रागनी तांहि फूलसरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म ध प नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी यहतो याको बखत है । दुपहर पीछे चाहो तब गावों । याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये रामनीवरतें । सो जंत्रसों समझिये ।

फूलसरी रागनी (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
सं	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति फूलसरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ पूर्याधनासिरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पूर्या संकीर्ण धनासिरी गाईके । वांको पूर्याधनासिरी नाम कीनों ॥ अथ पूर्याधनासिरीको लछन लिख्यते ॥ स्याम रंग है । पीतांबर पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । एक हाथसों कमल फिरावे है । मोतीनकी माला कंठमे है । सखी जाके संग है । वनमें विहार करे है । आनंदके आंसू जाके नेत्रमें है । मंद्र सुरसों गावे है । ऐसो जो राग तांहि पूर्याधनासिरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तिसरे पहरमें गावनो । यहतो याको वखत है । ओर चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

पूर्याधनासिरी (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति पूर्याधनासिरी संपूर्णम् ॥

अथ मुलतानी धनासिरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पाहाडी राग संकीर्ण धनासिरी गाईके। वांको पहाडी धनासिरी नाम कीनों । याको लौकिकमें मुलतानीधनासिरी कहे है ॥ अथ मुलतानि धनासिरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त्र पहरे है । मदसों छके जाके नेत्र है । मतवारे हाथी कीसी जाकी चाला है। नृत्य ओर गानमें आसक्त है । केसर चंदनको अंगराग कीये है । विभूती जाकी

अलक है। अंगनमें अनेक प्रकारके आभूषण पहरे है। ऐसी जो रागनी ताहि मुलतानी धनासिरी जानिये। शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर चाहो तब गावो ये रागनी मंगलीक है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनीवरते। सो जंत्रसों समझिये॥

मुलतानी धनासिरी (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मुलतानी धनासिरी संपूर्णम् ॥

अथ भीमपलासीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों विहागसंकीर्णधनासिरी गाईके । वांको भीमपलासी नाम कीनों ॥ अथ भीमपलासीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहेरे है । सब अंगनमें आभूषण पहेरे है । हरशके आंसू जीके आंखनमें है । अंगमें अरगजाको अंगराग कीये है । हाथमें जाके पानको बीड़ा है । चंपाके फूल ओर जायके फूलनसों गुही जाकी वेनी है । कंठमें मालतीके फूलनकी माला है । विरहनीके ममको वेध है । ऐसी जो रागनी तांहि भीमपलासी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

भीमपलासी (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति भीमपलासी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें तत्पुरुष नाम मुखसों शुद्धगौड गाईके। वांको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ शुद्धगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । कसूमल केसरिया वस्त्र पहरे है । बडे नेत्र है । कंठमें कमलके फूलनकी माला पहरे है । केसरके तिलक ललाटमें है । अपनें समान सखा जाके संग है। शृंगाररसमें मग्न है। मदमें छक्यो है। मतवारे हाथीकीसी चाल है। और बन-विहारमें आसक्त है । तांबूल खाये है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसो जो राग तांहि शुद्धगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि ध प म ग रि नि स । यातें संपूर्ण है । संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । और दुपहर उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धगौड संपूर्णम् ॥

अथ रीतिगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों । विभाग करिवेको अपनें मुखसों राग गाईके । वांको रीतिगौड नाम कीनों ॥ अथ रीतिगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको धैवतसो उच्चार होय। जाके अवरोहमें पंचम सुरहीन होई । और जाको न्यास स्वर षड्ज और रिषभमें होय । ऐसो-जो राग तांहि रीतिगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको तीसरे पहरमें गावनों । याकी आ-

लापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति रीतिगौड संपूर्णम् ॥

अथ मालवगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों मालवसंकीर्णगौड गाईके । वांको मालवगौड नाम कीनों ॥ अथ मालवगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । पद्मसरीखो जाको मुख है । पद्मसे बडे जाके नेत्र हैं । कंठमें फूलनकी माला है । मुखमें तांबूल खायो है । अपनें समान मित्रनकरिके संयुक्त है । केसरिको तिलक जाके ललाटमें है । शृंगाररसमें मग्न है । अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसो जो राग तांहि मालवगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । दुपहर पीछे चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

मालवगौड (संपूर्ण).

ध	धैवत असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षडज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा चार
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक		

॥ इति मालवगौड संपूर्णम् ॥

अथ नारायणगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । जा रागमें गांधार स्वर तीव्र होय जाके अवरोहमें धैवत गांधार न होय । निषादस्वर आदिमे ओर मध्यमें होय । जाके आरोहमें रिषभ ओर पंचमको गमक अपनें स्थानमें होय । जामें पलोस्वर आगेके स्वर

तांहि होय । जाको न्यासस्वर मध्यमस्वरमें होय । ऐसो जो राग तांहि नारायण गौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि स नि प म रि स । यातें संपूर्ण है । तीसरे पहर उपरांति गावनों याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये । राग वरते यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति नारायणगौड संपूर्णम् ॥

अथ केदारगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों केदारसंकीर्णगौड गाईके । वांको केदारगौड नाम कीनों ॥ अथ केदारगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । कसूमल केसरिया वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । केसरिको तिलक लिलाटमें है । कमलकी माला कंठमें है । मुखमें तांबूल चवावे है । मित्रन करिके सहित है । शिवजीके ध्यानमें मग्न है । एक हाथमें दंड है । दूसरे हाथमें त्रिशूल है । शंखकीसी तीन रेषा जाके कंठमें है । बडे नेत्र है । मंद मुसकान करे है । ऐसो जो राग तांहि केदारगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग ग प ध नि स । यातें संपूर्ण है । रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरत । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ इति केदारगौड संपूर्णम् ॥

अथ कान्हडगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कान्हडसंकीर्णगौड गाईके । वांको कान्हडगौड नाम कीनों ॥ अथ कान्हडगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसरको तिलक जाके लिलाटमें है । शृंगाररसमें मग्न है । अपनें समान मित्रन करिके सहित है । बडे जाके नेत्र है । माथेपें जाके मुकुट है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । बनमें बिहार करे है । ऐसो जो राग तांहि कान्हडगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चौपहर पीछे चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकि सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कान्हडगौड संपूर्णम् ॥

अथ पूर्वीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों नट विलावल संकीर्ण पूर्वी गाईके । वांको पूर्वी नाम कीनों ॥ अथ पूर्वीको स्वरूप लिख्यते ॥ लाल जाको रंग है । श्वेत वस्त्रनको पहरे है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है । मुखमें तांबूल चवावे है। सुंदर जाके केस है । लिलाटमें तिलक है । माथेपें जाके मुकुट है । काननमें कुंडल पहरे है। हाथमें कमल फिरावे है । ओर घोडापें चढयो है । स्त्रीनके मनको हरे है । तरुण जाकी अवस्था है । मंदमुसिकानि करे है। ऐसो जो राग तांहि पूर्वी जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । आर संध्यातांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

पूर्वी (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति पूर्वीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चैत्रगौडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों चैत्रगौडी गाईके । श्रीरागकी छायायुक्ति देखि । चैत्रगौडी नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ चैत्रगौडीको स्वरूप लिख्यते ॥ सोलह बरसकी जाकी अवस्था है । गोरो जाको रंग है । ओर अनेक रंगके वस्त्र पहरे है । हाथमें कमल फिरावे है । सुंदर जाके केस है । बडे नेत्र है । सिद्ध-चारण जाकी स्तुति करे है । ओर उनके संग बिहार करे है । ऐसो जो राग ताहि चैत्रगौडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गायो है । स रि म प नि स । यातें ओडव है । याको अस्तसमें गावनो । यह तो याको वखत है । ओर रात्रिके प्रथम पहरमें गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

चैत्रगौडी (ओडव).

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति चैत्रगौडी ओडव संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धगौडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । शुद्धकल्याण संकीर्ण गाईके । वांको शुद्धगौडी नाम कीनों ॥ अथ शुद्धगौडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त्र पहरे है । केसरको अंगराग कीये है । मोतीनकी माला पहेर है । अनेक आभुषण पहेरे है। सिंहासनपें बेठी है । सखीनकी सभामें सोभीत है । मंद मुसकान करे है । ऐसी जो रागनी तांहि शुद्धगौडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरकी दूसरी घडीमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥

अथ पूर्वीगौडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेका । अपनें मुखसों पूर्वीसंकीर्णगौडी गाईके । वांको पूर्वीगौडी नाम कीनों ॥ अथ पूर्वीगौडीको स्वरूप लिख्यते ॥ तरुण जाकी अवस्था है । सांवरो जाको रंग है । केसरकी बिंदी जाके लिलाटमें है । ओर रंगबिरंगे वस्त्रनको पहरे है । हाथमें कमल फिरावे है । चंद्रमाको देखकर प्रसन्नताकी चेष्टा करे है ।

चंदनको अंगराग किये है । मोतीनकी माला जाके कंठमें है । सुंदर गुहीहुई चोठी जाके पीटपें है । शृंगाररसमें मग्न है । एसी जो राग तांहि पूर्वीगौडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनो यह तो याको बखत है । ओर रातीके पहले प्रहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किजीये ॥ इति पूर्वीगौडी संपूर्णम् ॥

अथ इमनरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों बिलावलसंकीर्ण कल्याण गाईके । वांको इमन नाम कीनों ॥ अथ इमनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। श्वेत वस्त्र पहरे हैं । कस्तुरी केसरको अंगराग कीये है । माथेपें मुकुट हैं । मणिको जडाऊ कुंडल है । रत्नके सिंहासनपें बेठ्यो है । मुखमें तांबूल चावे है । सुगंधसों भौरा जाके वोरपास गुंजार करे है । हाथसों कमल फिरावे है । जाके आगे गंधर्व गान करे है । देवांगना नृत्य करे है। एसो जो राग तांहि इमन जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । आधि राततांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

इमनराग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति इमन राग संपूर्णम् ॥

अथ इमनकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों इमन संकीर्ण कल्याण गाईके । वांको इमन-कल्याण नाम कीनों ॥ अथ इमनकल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । मुखमें तांबूल चवावे है । कंठमें मोतीनकी माला है । कमलपत्रसे बडे जाके नेत्र है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । छत्र फिरे है । चवर ढुरे है । रत्नकें सिंहासनपे बडो दरबार किये बेठो है । केसरको तिलक लिलाटमें है । अगनमें अनेक प्रकारके फूलनके गहना पहरे है । मदसों छको है । तरुण जाकी अवस्था है । स्त्रीनके संग विहार करे है । ऐसो जो राग तांहि इमनकल्याण जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको वखत है । आधी राततांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

इमनकल्याण (संपूर्ण.)

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असली, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा तीन
नि	निषा चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति इमनकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों राग गाईके वांको शुद्धकल्याण नाम कीनों ॥ अथ शुद्धकल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ जा कल्याणमें मध्यम ओर निषाद स्वर

न होय । ऐसो जो राग तांहि शुद्धकल्याण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । स रि ग प ध स । यातें औडव है । याको रात्रिके प्रथम पहरमें गावनों ॥ यह तो याको वखत है । संध्या उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसो समझिये ॥

शुद्धकल्याण राग (ओडव).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय		

॥ इति शुद्धकल्याण राग संपूर्णम् ॥

अथ जैतकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको जैतश्री । केदार संकीर्ण कल्याण गाईके वांको जैतकल्याण नाम कीनों ॥ अथ जैतकल्याको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कसमल वस्त्र पहरे है । नाकमें मोतीकी बुलाक पहरे है । सोनेके कुंडल पहरे है । हाथमें जडाऊ कडा है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । कमलपत्रसे विशाल नेत्र है । छत्र जापें फिरे है । चवर ढुरे है । रत्नके सिंहासनपें बठ्यो

है। सब अंगनमें आभूषण पहेर है। ऐसो जो राग ताहि जैतकल्याण जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। ग म प ध नि स रि ग। यातें संपूर्ण है। याको रातिके प्रथम पहरमें गावनो। यहतो याको वखत है। आधी राति पहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरतें। सो जंत्रसों समझिये॥

जैतकल्याण (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत असलि, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ असलि, मात्रा एक		

॥ इति जैतकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ सावणीकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों बिलावल, कामोद संकीर्णकल्याण गाईके । वांको सावणीकल्याण नाम कीनों ॥ अथ सावणीकल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ स्वेत जाको वर्ण है । स्वेत वस्त्रनको पहेर है। एक हाथमें कमल है । मोतिनकी माला कंठमें है । मुकुट माथेपें है । काननमें कुंडल है । रत्नके सिंहासनपें बैठ्यो है । छत्र जाके उपर फिरे है । चवर जाके ऊपर ढुरे है । तरुण पुरुषनकी सभा किये है । मृदंगको शब्द जाको प्यारो है । ऐसो जो राग तांहि सावणीकल्याण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

सावणीकल्याण (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	।र	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति सावणीकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ पूरियाकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों पूरिया संकीर्णकल्याण गाईके। वांको पूरियाकल्याण नाम कीनों ॥ अथ पूरियाकल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ जा रागके आरंभमें तीव्र मध्यम होय ओर स्वर कंपजुत होय। निषाद जामें तीव्र होय। ऐसो जो राग तांहि

पूरियाकल्याण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यहतो याको बखत है। आधि राति पहले चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकि सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो ॥ इति पूरियाकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ **मलोहाकेदारकी** उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों स्यामरागसंकीर्ण केदारो गाईके । वांको मलोहाकेदारो नाम कीनों ॥ अथ मलोहाकेदारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । कंठमें रत्नकी माला पहरे है । भालमें केसरीको तिलक है । मदसों छक्यो है । जाके बाये हाथमें दंड है । दाहिनें हाथमें त्रिशूल है । माथेपें जाके मुकुट है । काननमें कुंडल है । हाथमें जाके कमल है । मित्रनके संग बिहार करे है । कमलपत्रसे विसाल नेत्र है । मधुर सुरनसों गान करे है । ऐसो जो राग तांहि मलोहाकेदार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

मलोहाकेदार (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मलोहाकेदार संपूर्णम् ॥

अथ शंकरकेदारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों शंकरकेदार संकीर्णकेदार गाईके । वांको शंकरकेदार नाम कीनों ॥ अथ शंकरकेदारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । कमलसे नेत्र है । चंदन केसरको अंगराग किये है । तरुण जाकी अवस्था है । मदसों छक्यो है । कमलनकी माल कंठमें है । अनेक आभूषण पहरे है । स्त्रीनके संग बिहार करे है । ऐसो जो राग तांहि शंकरकेदार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दुसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग बरतेसों । ग्रंथसों समझिये ॥

शंकरकेदार (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढीं, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	मांधार चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति शंकरकेदार संपूर्णम् ॥

अथ शंकरानंदकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शंकराभरणसो उत्पत्ति होय। रिषभ गांधार पंचम जाके अंश स्वर होय। रिषभमें जाको न्यास स्वर होय। ओर जामें अंशस्वरसें वादि स्वर तक तिनके योगते कंप होय। ऐसो जो राग तांहि शंकरानंद जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याका सबसमें गावनों यह राग मंगलीक है। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतली-ज्यो ॥ इति शंकरानंद संपूर्णम् ॥

अथ शंकराअरुणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों बिहाग धनासिरी संकीर्ण गाईके। वांको शंकराअरुण नाम कीनो ॥ अथ शंकराअरुणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। उजले वस्त्र पहरे है। कामदेवको मोहे है। मणिनको जडाऊ कुंडल पहरे है। हाथमें जडाऊ कडा है। कमलसे जाके नेत्र है। मुखमें पानको विडो खाये है। देहमें चंदनको लेप किये ह। सब अंगनमें गहना पहरे है। दाडिमको फूल जाके हाथमें है। बडो कामी है। कामदेवके समान रूप है। विरहनीके मनको वेधे है। चंपाके जायके फूलनकी माला जाके कंठमें है। ऐसो जो राग तांहि शंकराअरुण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको रातिके दुसरे पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते। सो जंत्रसों समझिये ॥

शंकराअरुण राग (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

॥ इति शंकराअरुण राग संपूर्णम् ॥

अथ जुजावंतकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों जुजावंत सकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको जुजावंतकान्हडो नाम कीनों ॥ याहीको लोकिकमें जेजकान्हरो कहत है ॥ जुजावंतकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहेरे है । कंठमें मोतीनकी माला है । केसरको तिलक लिलाटमें है । चंदनकेसरको अंगराग कियेहै । कामदेवको मित्र है । हाथमें जाके कडा है। काननमें कुंडल है । छत्र चवर जाके उपर फिरे है । वनमें विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि जुजावंतकान्हडो जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको आधि राति पिछे गावनो। यहतो याको वखत है। ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

जुजावंतकान्हडा (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति जुजावंतकान्हडा संपूर्णम् ॥

अथ नाईकीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागन-मेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गारा, काफी, कान्हडो, गाईके । वांको नाईकीकान्हडा नाम कीनो ॥ अथ नाईकीकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदर-छविएथ युक्त जाको अंग है । रागकी धुनी जाको प्यारी है । कोकिलके समान जाके कंठको नाद है । बडो रसज्ञ है । गोरो जाको रंग है । पीतांबरको पहेरे है । कंठमें मोतीनकी माला पहेरे है । ऐसो जो राग तांहि नाईकीकान्हडा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दुसरे पहरमें गावनो । यहतो याको वखत है । सांझ उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते। सो जंत्रसों समझिये ॥

नाईकीकान्हडा (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्य उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति नाईकीकान्हडा संपूर्णम् ॥

अथ गारा रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी खंभायची संकीर्णगारा गाईके । वांको गारा नाम कीनों ॥ अथ गाराको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदर लावणतायुक्त जाको शरीर है । रागकी धुनि जाको प्यारी है । कोकिलके समान जाके कंठको नाद है । नानाप्रकारके आभूषण पहरे है । शृंगाररसमें मग्न है । ऐसो जो राग तांहि गारा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दूपहर उपरांति चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

गारा राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति गाराराग संपूर्णम् ॥

अथ गाराकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रामनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गारासंकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको गाराकान्हडा नाम कीनों ॥ अथ गाराकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ मोरो जाको रंग है । पीतांबरको पहरे है । माथेपें जाके मुकुट है । मोतीनकी माला कंठमें है । हाथमें जडाऊ कडां है । सौंदर्य लावण्ययुक्त जाको शरीर है । रागकी धुनि जाको प्यारी है । कोकिलकोसो जाको कंठको नाद है । बडो रसज्ञ है । ऐसो जो राग तांहि गाराकान्हडा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर सांझ उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसो समझिये ॥

गाराकान्हडा (संपूर्ण).

रि	रिषभ असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक		

॥ इति गाराकान्हडो संपूर्णम् ॥

अथ हुसेनीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों देषाख सुहासंकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको हुसेनीकान्हडो नाम कीनों ॥ अथ हुसेनीकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । माथेपे मुकुट है । हाथनमें कडां पहरे है । वीररसमें मग्न है । लंबो शरीर है । चंद्रमासो मुख है । शृंगाररसमें मग्न है । तरुण अवस्था है । ऐसो जो राग तांहि हुसेनीकान्हडो जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । प ध नि स रि ग म प । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । संध्या उपरांति चाहो तव गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

हुसेनीकान्हडो (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ हुसेनीकान्हडो संपूर्णम् ॥

अथ खंभायचीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों खंभायची संकीर्णकान्हडा गाईके । वांको खंभायचीकान्हडो नाम कीनों ॥ अथ खंभायचीकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । सुंदर रूप है । बडो रसिलो नाद जाको प्यारो है । माथेपे जाके मुकुट है । हाथनमें कडा पहरे है । कोकिलकोसो जाके कंठको नाद है । प्रिय वचन कहे है । मोतीनकी माला कंठमें है । एसो जो राग तांहि खंभायचीकान्हडो जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें कियें । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

खंभायचीकान्हडो (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असली, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति खंभायचीकान्हडो संपूर्णम् ॥

अथ **पूरियाकर्णाटकी** उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पूरियासंकीर्णकान्हडो गाईके । वांको पूरिया-कर्णाट नाम कीनों ॥ अथ पूरियाकर्णाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर षड्जमें होय । षड्जहीकी मूर्छना जाके आरंभमें होय । ऐसो जो राग तांहि पूरियाकर्णाट जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । आधि राति पहले चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

पूरियाकर्णाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	षड्ज असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति पूरियाकर्णाट संपूर्णम् ॥

अथ सूरकीमल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सोरठकान्हडसंकीर्णमल्हार गाईके । वांको सूरकीमल्हार नाम कीनों ॥ अथ सूरकीमल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । कमलपत्रसे विसाल नेत्र है। चंद्रमासों मुख है। शृंगाररसमें मग्न है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । मोरनके संग क्रीडा करे है। वर्षाऋतुमें जाको आनंद है । हीराकी कनीसो जाके नेत्रको तेज है । हाथनमें जडाऊ कडां पहरे है । कुंडल जाके कानमें है । माथेपे मुकुट है । मित्रन करिके युक्त है । ऐसो जो राग ताहि सूरकीमल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको आधि रात्रीसमें गावनों । यह तो याको बखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

सूरकीमल्हार (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सूरकीमल्हार संपूर्णम् ॥

अथ नायकरामदासकीमल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों अडानासंकीर्णमल्हार गाईके। वांको नायकरामदासकी मल्हार नाम कीनों ॥ अथ नायकरामदासकी मल्हारको स्वरूप लिख्यते। गोरो जाको रंग है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। बडो कामी है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे है। मेघकी गर्जना सुनिके आनंदको पावे है। मोरनके संग क्रीडा करे है। शृंगाररसमें मग्न है। हाथनमें कडा पहरे है। माथेपें मुकुट है। काननमें कुंडल है। सिंहासनपें बेठ्यो है। माथेपें छत्र फिरे है। ओर पास जाके चवर ढुरे है। मित्रन करिके सहित है। ऐसो जो राग तांहि नायकरामदासकी मल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। प ध नि स नि ध प म ग रि स। यातें संपूर्ण है। याको वर्षाऋतुमें गावनों। यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये ॥

नायक रामदासकी मल्हारराग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति नायकरामदासकी मल्हारराग संपूर्णम् ॥

अथ मीयाकी मल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन राग-नमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों मल्हार गाईके । वांको मेघरागकी छाया युक्ति देखि मेघरागको दीनों । अथ मीयाकी मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम वर्ण है । लहरिया अंगमें पहरे है । चंदनको अंगराग कुचनमें लगाये है । रंग-विरंगे वस्त्र पहरे है । मोतीनके हार कंठमें पहरे है । कांति फेलरही है । मुखसों पान खाय है । पीक जाके कंठमें झलक है । मेघ गरजे है । बिजुरी चमके है । तीसमें जाके ओर पास कामसे दुःखी मोर ओर कुकुट नाचरहे है । ऐसो जो राग तांहि मीयाकी मल्हार जानिये । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है ।

कोईक याको पांच सुरनमेंभी कहे है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको अर्धरात्रि समें गावनों यहतो याको वखत है। वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते। सो जंत्रसों समझिये ॥

मीयाकी मल्हार (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मीयाकी मल्हार संपूर्णम् ॥

अथ धूरिया मल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों मल्हार जेजेवंती गाईके । वांको धूरिया मल्हार नाम कीनों ॥ अथ धूरिया मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसरको तिलक लिलाटमें है । रत्नकी माला कंठमें है । कामदेव युक्त है । मोरनके संगक्रीडा करे है । ऐसो जो राग तांहि धूरिया मल्हार जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें गावनों । यहतो याको वखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

धूरिया मल्हार (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा चार	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति धूरिया मल्हार संपूर्णम् ॥

अथ नटमल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों नट संकीर्ण मल्हार गाईके । वांको नटमल्हार नाम कीनों ॥-अथ नटमल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । सुपेद वस्त्र ओढे है । मुकुट जाके माथेपें है । कुंडल जाके कानमें है । मोतीनकी माला पहरे है । हाथमें खड्ग है । घोडापें चढचो है । मंद मुसकान युक्त वचन कहे है । बिलासमें वर्षासमेंमें मोरनको नचावे है । मोरनसो विनोद करे है । कमलसे नेत्र है । ऐसो जो राग तांहि नटमल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । याको अंशस्वर ग्रहस्वर षड्जमें जानिये ॥ स रि ग म

प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें सांजसमें गावनां । यह तो याको वखत है । बरखामें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

नटमल्हार (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति नटमल्हार राम संपूर्णम् ॥

अथ गोड मल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको । अपनें मुखसों गोड संकीर्ण मल्हार गाईके । वांको गोड मल्हार नाम कीनों ॥ अथ गोड मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहेर है । मदसों जाको परिचय है । कंठमें माला पहेरे है । बाये हाथमें ढाल है । दाहिने हाथमें भाला है । सिंहनाद करे है । माथेपें फूलनको मुकुट है । भालमें केसरिको तिलक है । वीररसमें मग्न है । वनमें विचरे है । मनमें शिवजीको ध्यान करे है । ओर उद्भट है । ऐसो जो राग तांहि गोड मल्हार जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। ध प म ग रि स स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको अर्ध रात्रिसमें गावनों । यहतो याको वखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये ॥ इति गोड मल्हार संपूर्णम् ॥

॥ अथ पारिजातके मतसों राग लिख्यते ॥

तहां प्रथम नीलांबरी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको नीलांबरी नाम कीनों ॥ अथ नीलांबरीको स्वरूप लिख्यते ॥ जा रागमें षड्ज ग्रामकी मूर्च्छना होय। सातों सुरनके मेलमें उत्पन्न होय । जामें सुंदर कंप होय । जाको सुद्ध स्वर

कंपमें होय । न्यास स्वर मध्यम होय । ओर तैसेंही गांधार स्वर रिषभ स्वर निषाद स्वर येद्ध अंशस्वर न्यासस्वर होत है । ओर जामें षड्ज स्वरको उच्चार कीजिये । पंचमके उच्चार कीजिये । ओर पंचमकी उच्चार करिके षड्ज स्वरको उच्चार कीजिये । ऐसो जो राग तांहि नीलांबरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनो । यहतो याको वखत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये । यह राग सुन्यो नही जातें बुद्धि चली नही । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति नीलांबरी संपूर्णम् ॥

अथ मुखारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके वांको । मुखारी नाम कीनों ॥ अथ मुखारीको स्वरूप लिख्यते ॥ जा रागमें रिषभस्वर कोमल होय । गांधार स्वर पूरव संज्ञक होय । धैवत स्वरमें जाको गृह स्वर होय । ओर निषाद स्वर जहां पूर्व संज्ञक होय । धैवत स्वर जहां कोमल होय । षड्जमें जाको न्यास स्वर होय । कोईक याको गृहस्वर अंशस्वर न्यासस्वर षड्जहींमें कहत है । ओर पारिजातके मतसों षड्ज जाको न्याय स्वर होय । अंशस्वर पंचममें होय । ऐसो जो राग तांहि मुखारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यहतो याको वखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरतें । यह राग सुन्यो नही यातें जंत्र बन्यो नही । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मुखारी राग संपूर्णम् ॥

अथ देवपियूषिकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके वांको देवपियूषिका नाम कीनों ॥ अथ देवपियूषिकाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसर चंदनको अंगराग किये है । अंतरसों भींजे लंबे जाके केस है । मोतीनकी माला कंठमें है । माथेपें मुकुट है । हाथनमें जडाऊ कडां पहरे है । काननमें कुंडल पहरे है । देवतानकी सभामें बठ्यो है । मधुर सुरनसों गावे है । ऐसो जो राग तांहि देवपियूषिका जानिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध

नि स । यातें संपूर्ण है । याको मध्यांनसमें गावनों । यहतो याको वखत है । ओर संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें बुद्धि नहीं चली यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति देवपियूषिका संपूर्णम् ॥

अथ हिंजेजरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको हिंजेज नाम कीनों ॥ अथ हिंजेजको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें गांधारकी ओर निषादकी गति तीन बेर होय है । यह हिंजेजके मेलमें भैरवादि राग अनेक होत है । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर निशादमें होय । अंतरकाकलीस्वर करिके सहित होय । ऐसो जो राग तांहि हिंजेज जानिये ॥ अथ हिंजेजको लछन लिख्यते ॥ जामें षड्ज रिषम शुद्ध होय । ओर मध्यम पंचम शुद्ध होय । ओर जामें धैवत भी शुद्ध होय । ओर जामें मध्यम कोमल लघु होय । निषाद जामेंर तीव्र होय । ऐसो जो राग तांहि हिंजेज जानिये ॥ या हिंजेजके मेलतें हिंजेजी ओर भैरवादिक राग होत है । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । यह लोक प्रसिद्ध थोरो है । संगीतशास्त्र गायवेवार अधिक समझें सों हिंजेजको जानें । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति हिंजेज राग संपर्णम् ॥

अथ कोल्लहासकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कोल्हहास नाम कीनों ॥ अथ कोल्हहासको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें मध्यमस्वर नहीं होय । जाके अवरोहमें धैवतस्वर न होय । जाके आरंभमें गांधारस्वरकी मूर्च्छना होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर गांधारमें होय । ऐसो जो राग तांहि कोल्लहास जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग प ध नि स रि ग नि प ग रि स स रि ग । यातें षाडव है । याको प्रभावसमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर दुपहर पहले चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये

राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कोल्हहास संपूर्णम् ॥

अथ घंटारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको घंटा नाम कीनों ॥ अथ घंटारागको लछन लिख्यये ॥ जा रागके आरंभमें गांधारस्वर होय। निषाद जाके अंतरमें होय । जामें कोमल धैवतस्वर होय । ऐसो जो राग तांहि घंटाराग जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि स नि ध प म म रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति घंटाराग संपूर्णम् ॥

अथ शर्बराकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शर्बरी नाम कीनों ॥ अथ शर्बरीको लछन लिख्यते ॥ जा रागकी गोडीके मेलमें उत्पत्ति होय । ओर जहां याको ग्रहस्वर षड्जमें होय । अंशस्वर जाको पंचममें कीजिये । मध्यममें जाको न्यासस्वर कीजिये । ऐसो जो राग तांहि शर्बरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको सबसमैमें । गावनों यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति शर्बरी संपूर्णम् ॥

अथ पार्वतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके वांको पार्वती नाम कीनों ॥ अथ पार्वतीको लछन लिख्यते ॥ जो वेसरीखाडमें विभाषा होय । जाको षड्जमें अंशस्वर गृहस्वर होय । ऐसी जो रागनी तांहि पार्वती जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति पार्वती रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग माईके वांको सुद्धा नाम कीनों ॥ अथ शुद्धाको लछन लिख्यते ॥ जो राग भिन्न षड्जकी भाषा होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धैवतमें समाप्त होय । जाके आलापमें धैवत कोमल होय । रिषभ पंचम नहीं होय । अथवा जाके आलापमें धैवत होय । पंचम नहीं होय । ओर षड्जस्वर गांधारस्वरमें मिले होय । अथवा गांधार स्वरमें पंचम स्वरमें भीजाको न्यास स्वर होय । जामें मध्यम स्वर गांधार स्वर धैवत स्वर गंभीर होय । ऐसो जो राग तांहि शुद्धा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें अथवा छ स्वरमें गायो है । अथवा सात सुरमें गायो है ॥ ध नि स रि म ध । यातें ओडव है । ध नि स रि ग म ध । यातें षाडव है । ध नि स रि ग म प ध स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरत लीज्यो ॥ इति शुद्धा राम संपूर्णम् ॥

अथ सिंहवरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों राग गाईके बांको सिंहवर नाम कीनों ॥ अथ सिंहवरको लछन लिख्यते ॥ भैरवके मेलमें जाकी स्वर उत्पत्ति होय । गांधार हीन होय । आरोहमें निषाद नहीं होय । मध्यमसों जाको आलाप होय । ऐसो जो राग तांहि सिंहवर जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । म प ध स रि म रि स ध स नि । यातें षाडव है । याको तीसरे पहर उपरांति गावनों । यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

सिंहवर राग (षाडव).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सिंहवर संपूर्णम् ॥

अथ चक्रधरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग माईके । वांको चक्रधर नाम कीनों ॥ अथ चक्रधरको लछन लिख्यते ॥ नाटके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय । पंचम स्वर हीन होय । षड्ज स्वर जाके आदिमें होय । ऐसो जो राग तांहि चक्रधर जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । स रि म ध नि स । यातें षाडव है । याको तीसरे पहर उपरांति गावनों । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

चक्रधर राग (षाडव).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति चक्रधर संपूर्णम् ॥

अथ मंजुघोषाकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको मंजुघोषा नाम कीनों॥ अथ मंजुघोषाको लछन लिख्यते॥ श्रीरागके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय। गांधार स्वर जामें नहीं होय। धैवत स्वर जाकी आदिमें होय। आरोहमें निषाद नहीं होय। ऐसो जो राग तांहि मंजुघोषा जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरमें गायो है। स रि म प ध स। यातें ओडव है। याको दूपहर उपरांत गावनो। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी शिवाय बुद्धि होय। सो करलीज्यो॥ इति मंजुघोषा संपूर्णम्॥

अथ रत्नावलीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागगमेंसों विभाम करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको रत्नावली नाम कीनों ॥ अथ रत्नावलीको लछन लिख्यते । जाके आलापमें रिषभ निषाद नही होय । मध्यम गांधार जामें अति तीव्रतर होय । और गांधारहीकी जामें मूर्छना होय । पंचम स्वरमें न्यास होय । ऐसो जो राग तांहि रत्नावली जानिये । शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरमें गायो है । ग म प ध स ग । यातें ओडव है । याको दोय पहर उपरांत गावनो । यहतो याको वखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरतें । यह राग सुन्यो नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुध्दि होय । सो वरतली ज्यो ॥ इति रत्नावली संपूर्णम् ॥

अथ कंकणरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कंकण नाम कीनों ॥ अथ कंकणको लछन लिख्यते ॥ शंकराभणके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय । ओर पंचम स्वर नहीं होय । गांधारस्वर जाके आदिमें होय । ओर बहुतबेर जामें मध्यमको उच्चार होय । ऐसो जो राग तांहि कंकण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग म ध नि स रि म । यातें षाडव है । याको दूपहर उपरांति गावनों । यहतो याको वखत है । रातिमें चाहो तब गावों । याकी आलापचारी छह स्वरममें किये । राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुध्दि चली नहीं । जाकी सिवाय बुध्दि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कंकण राग संपूर्णम् ॥

अथ साधारिताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको साधारिता नाम कीनों ॥ अथ साधारिताको लछन लिख्यते ॥ सोवीर रागके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय । ओर जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर पंचमस्वरमें होय । ओर रिषभ मध्यमको षड्ज मध्यमसों मिलाप होय । सिगरे स्वरमें गमक होय । ऐसो जो राग तांहि साधारिता जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनमें गायो है । प ध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें

किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्ये नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति साधारिता संपूर्णम् ॥

अथ कांबोधीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कांबोधी नाम कीनों ॥ अथ कांबोधीको लछन लिख्यते ॥ जा रागके आरंभमें तीव्र गांधारस्वर होय । ओर गांधारस्वरकी मूर्छना आदिमें होय । जाके आरोहमें मध्यमस्वर ओर निषाद्स्वर न होय । जो गांधारस्वर आदिमें न कीजिये । उत्तरायता मूर्छनाही कीजिये । ऐसो जो राग ताहि कांबोधी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग प ध स स नि ध प म रि स ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दूसरे पहरमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर दूपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कांबोधी राग संपूर्णम् ॥

अथ गोपीकांबोधीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राम गाईके । वांको गोपीकांबोधी नाम कीनों ॥ अथ गोपीकांबोधीको लछन लिख्यते ॥ जा रागको गृहस्वर धैवतमें होय । जाकी आरोहमें निषाद्स्वर न होय । जाको अंशस्वर मध्यमस्वर पंचमस्वरमें होय । जाको न्यासस्वर षड्जमें होय । ऐसो जो राग ताहि गोपीकांबोधी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । ध स स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनो । यहतो याको बखत है । दूपहर पहलां चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति गोपीकांबोधी राग संपूर्णम् ॥

अथ अर्जुनरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको अर्जुन नाम कीनों ॥ अथ अर्जुनको लछन लिख्यते ॥ जो गोरीरागके मेलमें भयो होय । ओर जाके आरोहमें मध्यम निषाद नहीं होय । ओर अवरोहमें गांधार धैवतको आलाप नहीं

होय । गांधारतें याको आरंभ करनो । ऐसो जो राग तांहि अर्जुन जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग प ध स स नि प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । यहतो याको बखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति अर्जुन राग संपूर्णम् ॥

अथ कुमारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कुमारी नाम कीनों ॥ अथ कुमारीको लछन लिख्यते ॥ गौरीके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय। । ओर धैवतस्वरमें जाको गृहस्वर होय । धैवतहीमें जाको अंशस्वर न्यासस्वर होय । ओर बहुलपाता करिके कंपितस्वर होय । ऐसो जो राग तांहि कुमारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्तस्वरमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कुमारी राग संपूर्णम् ॥

अथ रक्तहंसीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों राग गाईके । वांको रक्तहंसी नाम कीनों ॥ अथ रक्तहंसीको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें गांधार स्वर न होई । ओर आरोहमें निषाद स्वर नहीं होय । अवरोहमें धैवत करिके हीन होय । ओर षड्जकी मूर्छना जाके आलापमें होय । गालवके मेलमें उत्पन्न होय । ऐसो जो राग तांहि रक्तहंसी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरमें गायो है । स रि म प ध स नि । यातें षाडव है । याको प्रभातसमें गावनो । यहतो याको बखत है । ओर दूपहर पहले चाहो तब गावो । याकी आलाचारी छह सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति रक्तहंसी संपूर्णम् ॥

अथ सौदामिनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको सौदामिनी नाम कीनों ॥ अथ सौदामिनीको लछन लिख्यते ॥ जामें रिषभ धैवत कोमल होय । अरु गांधार तीव्र-

तम मध्यम तीव्रतर निषाद तीव्र जाको आलाप गांधार स्वरतें । ऐसो जो राग तांहि सौदामिनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है ॥ ग म प ध स रि स नि ॥ यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति सौदामिनी संपूर्णम् ॥

अथ कुरंगरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कुरंग नाम कीनों ॥ अथ कुरंगको लछन लिख्यते ॥ जामें मध्यम तीव्रतर गांधार जामें अति तीव्रतर । अरु निषाद तीव्र अरु अंसस्वर न्यासस्वर जाको पंचम षड्जमें होय । ऐसो राग गाईके । वांको कुरंग नामकीनों । शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कुरंग संपूर्णम् ॥

अथ कल्पतरुकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कल्पतरु नाम कीनों ॥ अथ कल्पतरुको लछन लिख्यते ॥ जामें धैवत न होय । अरु तीव्र तीव्रतर गांधार रिषभ होय । अरु रिषभसों जाको उच्चार होय । षड्जको न्यास होय । ऐसो जो राग तांहि कल्पतरु जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । रि ग म प नि स रि । यातें षाडव है । याको तीसरे पहर उपरांति गावनों । यहतो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कल्पतरु संपूर्णम् ॥

अथ नद्दारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको नद्दा नाम कीनों ॥ अथ नद्दाको लछन लिख्यते ॥ जो वेसरि षाडवकी भाषा होय । जाको गृहस्वर

षड्जमें होय । मध्यममें जाकी समाप्ति होय । गांधारस्वर जामें बहुतसो होय । पंचमस्वर नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि नद्दा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । स रि ग म ध नि स । यातें षाडव है । याको सबसें गावनों । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति नद्दा संपूर्णम् ॥

अथ सौवीरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको सौवीरी नाम कीनों ॥ अथ सौवीरीको लछन लिख्यते ॥ जा रागनीकी सौवीरीके मेलमें उत्पत्ति होय । ओर मूलभाषा होय । बहुत जामें मध्यमस्वरको प्रयोग होय । षड्जस्वरमें जाको आरंभ होय । ओर समाप्त होय । जहां संवादीस्वर षड्ज धैवत ओर रिषभधैवत होय । तहां षड्जधैवतके संवादमें प्रथम सौवीरी भाषा । जाको षड्ज पंचमको मिलाप । ओर मध्यममें जाको अंशस्वर होय । वेग युक्त जामें मध्यम होय । मध्यमस्वर करिके सोभायमान होय ॥ अथ सौवीरीको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके शरीरकी कमलके फूलकीसी कांति है । संभोगकी जाके इछा है । अपनें पतिसों संभोग करचुकि है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है। शांतरसमें मग्न है । ऐसी जो रागनी तांहि सौवीरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यहतो याको वखत है । और दूपहर उपरांत चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नही । यातें बुद्धि चली नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति सौवीरी संपूर्णम् ॥

अथ मार्गहिंडोलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको मार्ग हिंडोल नाम कीनों ॥ अथ मार्ग हिंडोलको लछन लिख्यते ॥ जा हिंडोलके अलापमें रिषभ स्वरको उच्चार होय । सो हिंडोल मार्ग जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । रि ग म प नि स रि । यातें षाडव है । याको दिनके दूसरे पहरे उपरांति गाव-

नो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति मार्ग हिंडोल-राग संपूर्णम्॥

अथ दक्षिणात्याकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों राग गाईकें। वांको दक्षिणात्या नाम कीनों॥ अथ दक्षिणात्याकी उत्पत्ति लिख्यते॥ भिन्नागीति भाषा होय। जाको अंशस्वर गृहस्वर धैवतमें होय। पंचम स्वर जामें थोरो होय। षड्जमें धैवत पंचम मिली होय। ऐसो जो राग तांहि दक्षिणात्या जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है। ध नि स ग म प ध। यातें षाडव है। याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति दक्षिणात्या संपूर्णम्॥

अथ कोकिळरागकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। विशेष लोकानुरंगनके लिये। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको कोकिळ नाम कीनों॥ अथ कोकिळको लछन लिख्यते॥ कल्याण रागके मेलमें अरु मध्यम निषाद जामें सदैव नहीं होय। अरु गांधारातें उच्चार करनों। ऐसो राग गाईके। वांको कोकिळ नाम कीनों। शास्त्रमें यह पांच स्वरतें गायो है। ग प ध स स ध प ग प ग रि स। यातें औडव है। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो॥ इति कोकिळ-राग संपूर्णम्॥

अथ वैजयंतीरागकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। विशेष लोकानुरंजनके लिये। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको वैजयंती नाम कीनों॥ अथ वैजयंतीको लछन लिख्यते॥ जामें छह वार श्रुति मध्यमको उच्चार। धैवतकोमल निषादतीव्र अरु रिषभ तें उच्चार। आरोहण अवरोहमें कबहू गांधारको धैवतको उच्चार होय। ऐसो राग गायके। वांको नाम वैजयंती कीनों॥ शास्त्रमें सप्त स्वरनतें गायो है। रि म प नि स स नि ष ध प म

प म रि म रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति वैजयंतीराग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शुद्धा नाम कीनों ॥ अथ शुद्धाको लछन लिख्यते । जो राग भिन्न षड्जकी भाषा होय । जाको अंश स्वर गृहस्वर न्यासस्वर समाप्त धैवतमें होय । आलापमें जाको धैवत कोमल होय रिषभ पंचम नही । अथवा वांके आलापमें रिषभ होय । अरु पंचम न होय । अरु षड्ज स्वर गांधार स्वरमें मिले होय । अथवा गांधार मध्यम स्वरमें मिले जाको न्यास होय । जामें मध्यम स्वर गांधार स्वर धैवत स्वर गंभीर होय। ऐसो जो राग तांहि शुद्धा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच अथवा छह अथवा सात सुरनमें गायो है । ध नि स ग म यातें ओडव है । ध नि स रि ग म ध यातें षाडव है । ध नि स रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धाराग संपूर्णम् ॥

अथ रंगतीभाषाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईकें । वांको रंगतीभाषा नाम कीनों ॥ अथ रंगतीभाषाको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको पीरो वर्ण है । सुंदर है । अपनें पतिकें वियोगके संतप्त है । सखीजन जाको मान देके समाधान करत है । उदास जाको मन है । ऐसी जो रागनी तांहि रंगती भाषा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है । ध नि सा म प ध । यातें ओडव है । याको सर्व समै गावनी। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत-लीज्यो ॥ इति रंगतीभाषा रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धभिन्नाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको । अपनें मुखसों राम गाईके । वांको शुद्धभिन्ना नाम कीनों ॥ अथ शुद्धभिन्नाको लछन लिख्यते ॥ जाकी भिन्न पंचमसें उत्पत्ति होय ।

धैवतमें जाको अंशस्वर न्यासस्वर ग्रहस्वर होय। ओर जाके रिषभ धैवत षड्ज मध्यममें मिलि होय। किन्नर देवतानको प्यारो है। ऐसो जो राग तांहि शुद्धभिन्ना जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्तस्वरनमें गायो है। ध नि स रि ग म प ध। यातें संपूर्ण है। याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। तातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धभिन्ना राग संपूर्णम् ॥

अथ विशालारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों रागनी गाईके। वांको विशाला नाम कीनों ॥ अथ विशालाको लछन लिख्यते ॥ जो रागनी भिन्न पंचमकी भाषा होय। जामें षड्जस्वर ओर धैवतस्वरको संचार होय। जाको पंचममें अंशस्वर होय। धैवतमें जाको अंत होय। धैवतसों सोभायमान होय। किन्नर देवतानको प्यारी है। ऐसी जो रागनी तांहि विशाला जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो ॥ इति विशाला रागनी संपूर्णम् ॥

अथ पुलिंदीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों रागनी गाईके। वांको पुलिंदी नाम कीनों ॥ अथ पुलिंदीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय। ओर जाको अंशस्वर धैवतमें होय। ओर जामें गांधार पंचम न होय। षड्ज धैवतमें ओर षड्ज मध्यममें मिली होय। ऐसी जो रागनी तांहि पुलिंदी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है। ध नि स रि म ध स यातें ओडव है। याको चाहो जब गावो। यह मनुषनको प्यारी है। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो ॥ इति पुलिंदी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ भिन्नपंचमीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजींनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भिन्नपंचमी नाम कीनों ॥ अथ भिन्नपंचमीको लछन लिख्यते ॥ जाकी भाषा आसावरी होय । जाको धैवत स्वर अंतमें होय । गांधार जामें तीव्रतर होय । कोमल जामें मध्यम सुर होय । मध्यममें जाको गृहस्वर अंशस्वर होय । जामें थोडो षड्जको उच्चार होय । आरोहमें पंचम कहि कहि न होय । मध्यम पंचममें जाको न्यासस्वर होय । जामें रिषभ पंचम धैवत बहोत होय । गांधार जाके अवरोहमें नहीं होय । सो भिन्न पंचमी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति भिन्नपंचमीराय संपूर्णम् ॥

अथ मधुकरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको मधुकरी नाम कीनों ॥ अथ मधुकरीको लछन लिख्यते ॥ जो राग ककुभ विभाषाको होय । जाको षड्जमें आरंभ होय । गांधार पंचममें जाको न्यासस्वर होय । ओर निषाद षड्ज रिषभ धैवत पंचम जामें बहुत आवे । ऐसो जो राग तांहि मधुकरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मधुकरी राग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध षाडवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको । अपनें मुखसों राग माईके वांको शुद्धषाडव नाम कीनों ॥ अथ शुद्ध षाडवको लछन लिख्यते ॥ जाकी विकृत मध्यम जातिमें उत्पत्ति होय। विकृत मध्यम जातिके तेईश भेद है । जामें पंचम अरु गांधारको वरतवो कठिम होय। जाको अंशस्वर न्यासस्वर मध्यम स्वरमें होय । तीव्र मध्यम स्वर जाके आरंभमें होय । काकली निषाद अंतर गांधार जामें आवे। मध्यमकी आदि मूर्च्छना

जाके आलापमें होय। अठराही आदि वरन नाम जो संचारी वरन करिके। मिल्यो जो प्रसन्नता नाम अस्मंकारिता करिके शोभायमान होय। नृत्यके आरंभमें याको गावनो ॥ यह राग हास्यरस अरु शृंगाररसको पुष्टकर है। ऐसो जो राग ताको नाम शुद्ध षाडव जानिये ॥ अथ शुद्ध षाडवको स्वरूप लिख्यते ॥ श्वेत जाको वर्ण है। श्वेत वस्त्र पहरे है। वृक्षकी छायाके नीचे बैठ्यो है। अपनी प्यारी स्त्रीके संग हास्यविनोद करे है। सीसपे जाके मुकुट है। ऐसो जो राग तांहि शुद्ध षाडव जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। मा सा री नी धा धा धा नी मा पा पा धा नी मा धा सा री गा धा सा सा सा री ग मा धा मा री गा नी धा सां धा नी मा मा ॥ यातें संपर्ण है। यह टोडी रागको पिता है। यातें टोडी रागको जन्म है। शुक्राचारजको यह राग प्यारो है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको बखत है। दोय पहर ताईं चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि नहीं चली। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्ध षाडव संपूर्णम् ॥

अथ ब्राह्म षाडवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको ब्राह्म षाडव नाम कीनों ॥ अथ ब्राह्म षाडवको लछन लिख्यते ॥ जामें निषाद स्वर गांधार स्वर मिल्यो होय। अरु रिषभ स्वर मध्यम स्वर मिले होय। अरु जाको मध्यम स्वरमें अंशस्वर ग्रहस्वर न्यासस्वर होय। जो बेसर षाडवकी भाषा हाय। ऐसो जो राग तांहि ब्राह्म षाडव जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है। म प ध नि स रि ग म। यातें संपूर्ण है। याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि नहीं चली। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति ब्राह्म षाडव संपूर्णम् ॥

अथ गांधार पंचमकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवको। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको गांधार पंचम नाम कीनों ॥ अथ गांधार पंचमको लछन लिख्यते ॥ जा रागकी गांधारी संकीर्ण उतर गांधारीतें उत्पत्ति होय। ओर गांधारमें अंशस्वर ग्रहस्वर न्यासस्वर होय। अरु

जाकी हारिणाश्वा मूर्च्छना होय । ओर जामें प्रसन्न मध्यम अलंकार होय । जामें काकलीको संचार होय । ओर अद्भुत हास्य करुणरसमें जाको प्रयोग होय। सो गांधार पंचम है ॥ अथ गांधार पंचमको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेकोसो जाको वर्ण है । सोनेके कुंडल काननमें पहरे है । ओर अपनी स्त्रीसों हासीके बचन कहे है । ओर विमानमें बेठ्यो है । ऐसो जो राग तांहि गांधार पंचम जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । म प ध नि स ग म । यातें षाडव है । याको चाहो जब गावो । यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारी छह सुर-नमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति गांधार पंचम संपूर्णम् ॥

अथ कालिंदी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको कालिंदी नाम कीनों ॥ अथ कालिंदीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी विभाषा होय । जाको ग्रहस्वर षड्जमें होय । अरु धैवतमें जाको अंत होय । अरु निषाद जामें थोरो होय । जामें पंचम रिषभ न होय । ओर षड्ज मध्यममें मिली होय । ऐसी जो रागनी ताहि कालिंदी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गाई है । ध नि स ग म ध । यातें ओडव है । याको चाहो जब गावो । यातें अद्भुत दशामें गाई है । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनीवरते । यह रागनी सुनी नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कालिंदीराग संपूर्णम् ॥

अथ कछेलीको लछन लिख्यते ॥ जाको षड्जमें अंशस्वर ग्रहस्वर होय । न्यासस्वर मध्यममें होय । कुरतानमें जाको आश्रय होय । जामें गांधार धैवत स्वर नहीं होय । अरु भिन्न षड्जकी भाषा होय । ऐसो जो राग तांहि कछेली जानिये ॥ ओर कोईक आचार्य या तरह कहत है । जाको अंशस्वर गृह मध्यममें होय । जामें कोमल ओर तीव्र रिषभ होय । जाको आरंभमें गांधार निषाद नहीं ॥ शास्त्रमेंतो पांच सुरनमें गाई है । स रि म प नि स । यातें ओडव है । अथवा म प ध स रि म प । याको चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कछेलीराग संपूर्णम् ॥

अथ नूतमंजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको नूतमंजरी नाम किनों ॥ अथ नूतमंजरीको लछन लिख्यते ॥ जो राग हिंडोलकी भाषा होय । जामें षड्ज मध्यम संचारी होय । ओर मध्यमस्वर जाके अंतमें होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर पंचममें होय । रिषभ जामें नहीं होय । ओर निषाद गांधारमें मिली होय। ऐसी जो रागनी तांहि नतमंजरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गाई है । प ध नि स ग म प । यातें षाडव है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये रागनी वरतें । यह रागनी सुनी नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति नूतमंजरी संपूर्णम् ॥

अथ पौरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको पौराली नाम किनों ॥ अथ पौरालीको लक्षण लिख्यते ॥ जो राग भिन्न षड्जकी विभाषा होय । जाको अंशस्वर मध्यममें होय । रिषभस्वर मध्यम पंचममें परस्पर मिले होय । ऐसो जो राग तांहि पौराली जानिये ॥ याको चाहो जब गावो । शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें मायो है । म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । याकों गाईवेतें । नागसर्प प्रसन्न होय । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति पौराली राग संपूर्णम् ॥

अथ भिन्नपौराली राग लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भिन्नपौराली नाम किनों ॥ अथ भिन्नपौरालीको लक्षण लिख्यते ॥ जो हिंडोलरागकी पांचमी भाषा होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर धैवतमें होय । ओर न्यासस्वर षड्ज होय । ओर सातु सुर करिके मिली होय । पंचमरागमें प्रधान होय । ऐसो जो राग तांहि भिन्न-पौराली जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । म प ध नि स रि ग म स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । याकी आलापचारी

सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति भिन्नपौराली राग संपूर्णम् ॥

अथ देवारवर्धनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको देवारवर्धनी नाम किनों ॥ अथ देवारवर्धनीको लछन लिख्यते ॥ जो राग मालवकी विभाषा होय । जामें गांधार निषाद नहीं होय । ओर जाको अंत पंचमस्वरमें होय । जाको अंशस्वर षड्जमें होय । ऐसो जो राग तांहि देवारवर्धनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गायो है । स रि म प ध सा । यातें ओडव है । याको मातसमें गावनों । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति देवारवर्धनी राग संपूर्णम् ॥

अथ भोगवर्धनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भोगवर्धनी नाम किनों ॥ अथ भोगवर्धनीको लक्षण लिख्यते ॥ जो ककुभ रागकी विभाषा होय । जामें तीव्र कोमल गांधार होय । ओर जाको अंशस्वर ग्रहस्वर न्यासस्वर धैवतस्वर होय । गांधार पंचम जाको न्यासस्वर होय । रिषभस्वर कहिंही न होय । ओर धैवत निषादकी गमकनसों जाको गायो होय । ऐसो जो राग तांहि भोगवर्धनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । ध नि स ग म प ध । यातें षाडव है । याको शांतरसमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति भोगवर्धनी संपूर्णम् ॥

अथ शिववल्लभा रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शिववल्लभा नाम किनों ॥ अथ शिववल्लभाको लक्षण लिख्यते ॥ मुखारी रागके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय । जामें मध्यमस्वर नहीं होय । गांधारस्वरसें जाको आलाप जाके

पंचममें अंशन्यास होय । ऐसो जो राग तांहि शिववल्लभा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग प ध स स नि ध प नि ध प ग ग ग रि । यातें षाडव है । याको दोय पहर उपरांत गावनों । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शिववल्लभा राग संपूर्णम् ॥

अथ मालवेसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको मालवेसरि नाम कीनों ॥ अथ मालवेसरिको लछन लिख्यते ॥ जो हिंडोल रागकी भाषा होय । गांधारस्वरमें ओर पंचमस्वरमें जाको न्यासस्वर होय । ओर षड्जमें जाको गृहस्वर होय । ओर षड्जमें समाप्त होय । ओर मध्यमस्वर ओर पंचमस्वरमें गमक युक्त होय । जाके आलापमें रिषभ धैवत नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि मालवेसरि जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । स ग म प नि स । यातें ओडव है। याको संध्यासमें गावनों । याकी आलापचारी पांच स्वरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति मालवेसरि संपूर्णम् ॥

अथ गांधारवल्लीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय । धैवतमें जाकी समाप्ती पंचममें जाको अंशस्वर होय । ओर षड्ज धैवत जुक्त होय । ऐसो जो राग तांहि गांधारवल्ली जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको पितृनके कार्यमें गावनों । श्राद्धादिकनमें याके गायेतें पितृ प्रसन्न होत है। यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति गांधारवल्लीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ स्वरवल्लीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके। वांको स्वरवल्ली नाम कीनों ॥ अथ स्वरवल्लीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय । रिषभस्वर तामें नहीं होय । जाको निषादमें गृहस्वर होय । जाको अंशस्वर धैवतमें होय । जाको आलाप कोमलतायुक्त होय । ऐसी जो रागनी तांहि स्वरवल्ली जानिये ॥

शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गाई है । नि स ग म प ध नि ध । यातें षाडव है । याको चाहो तब गावो । यह मुनीश्वरनको प्यारी है । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये रागनी वरतें । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति स्वरवल्ली रागनी संपूर्णम् ॥

अथ तुंबरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको तुंबरी नाम कीनों ॥ अथ तुंबरीको लछन लिख्यते ॥ जो रागनी भिन्न षड्जकी भाषा होय । ओर जाके आलापमें रिषभस्वर नहीं होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धैवतमें होय । ऐसी जो रागनी तांहि तुंबरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गाई है । ध नि स ग म प ध । यातें षाडव है । याको चाहो तब गावो । याको ब्रह्मचारी गावेतो ब्रह्मचारी विद्या आवे । यह रागनी विद्या देनहारी है । ओर गावे ताको विद्या समाप्त होय । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति तुंबरी संपूर्णम् ॥

अथ शालिवाहनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शालिवाहनी नाम कीनों ॥ अथ शालिवाहनीको लछन लिख्यते ॥ जो राग ककुबकी अंतरभाषा होय । जाको रिषभमें अंशस्वर गृहस्वर होय । ओर धैवतमें जाको अंशस्वर होय । ओर रिषभ मध्यम जामें मिले होय । ऐसो जो राग तांहि शालिवाहनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । रि ग म प ध नि स । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शालिवाहना संपूर्णम् ॥

अथ कोसलीरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको कोसली नाम कीनों ॥ अथ कोसलीको लछन लिख्यते ॥ जो रागनी भिन्न पंचमकी विभाषा होय । जाको अंशस्वर ग्रहस्वर निषादमें होय । धैवतमें जाको न्यासस्वर होय । जामें रिषभ-

स्वर नहीं । ऐसी जो रागनी तांहि कोसली जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गाई है । नि स ग म प ध । यातें षाडव है । याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये है । रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कोसली रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शक्कमिश्राकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शक्कमिश्रा नाम कीनों॥ अथ शक्कमिश्राको लछन लिख्यते ॥ जो राग ककुभ रागकी भाषा होय । अरु जामें निषाद् पंचम अरु रिषभ धैवत संवादी स्वर होय । अरु निषाद् जाको अंशस्वर ग्रहस्वर होय । रिषभमें जाको न्यास होय । ऐसो जो राग तांहि शक्कमिश्रा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो सात स्वरनसों गायो है । नि स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति शक्कमिश्रा राग संपूर्णम् ॥

अथ हर्षपुरी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको हर्षपुरी नाम कीनों ॥ अथ हर्षपुरीको लछन लिख्यते ॥ जो मालवकोसकी भाषा होय । षड्जमें जाको अंशस्वर गृहस्वर होय । जामें मध्यम स्वर तीव्र होय । धैवत जामें नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि हर्षपुरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । स रि ग म प नि स । यातें षाडव है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति हर्षपुरी राग संपूर्णम् ॥

अथ रक्तगांधारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको रक्तगांधारी नाम कीनों ॥ अथ रक्तगांधारीको लछन लिख्यते ॥ जाके अंशस्वर षड्ज गांधार मध्यम निषादमें होय । ओर जाके मेलमें रिषभको छोडके षड्ज गांधारको अंशस्वर-

नसों मिलाप होय । रिषभके त्यागतें यह षाडव है । और धैवत रिषभके त्यागतें ओडव है । यातें याको षाडव ओडव मिली है । जो अंशस्वर पंचम होई तो षाडव नहीं होय । और षड्ज निषाद पंचम मध्यम ये च्यार स्वरनसों ओडव नहीं होय । यातें याको षाडव मिली ती जानिये ॥ जहां मिले षड्ज गांधारको मिलाप होय । और रिषभ स्वरकी मूर्छना होय। ऐसो जो राग तांहि रक्तगांधारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरके आरोहमें । और पांच स्वरनके अवरोहमें गायो । प नि स ग म प ध नि प म ग स नि । यातें षाडव याको प्रभातसमें गावनों । यह तो याको बखत है । और दूपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह स्वरके आरोहमें । और पांच स्वरनके अवरोहमें । किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति रक्तगांधारी राग संपूर्णम् ॥

अथ भाषा गांधारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भाषागांधारी नाम कीनों ॥ अथ भाषागांधारीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय। जाको अंश-स्वर गांधारमें होय। मध्यम स्वरमें जाकी समाप्त होय । ऐसो जो राग तांहि भाषा गांधारी जानियें ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको एकांतमें गावनों । यह शार्दूल मुनीश्वरको राग है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति भाषा गांधारी राग संपूर्णम् ॥

अथ षड्ज भाषाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको षड्जभाषा नाम कीनों ॥ अथ षड्ज भाषाको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न भाषा होय । जाको अंश-स्वर गृहस्वर समाप्त धैवतमें होय । निषाद काकली अंतर करिके मिली होय । जाके आलापमें रिषभ पंचम नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि षड्ज भाषा जानिये । शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । ध नि स ग म ध नि । यातें ओडव है । याको चाहो तब गावो । अरु देवपूजामें याको गावो तो देवता

प्रसन्न होय। सर्व काम फल दे याकी आलापचारी पांच स्वरनमें किये रागवरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं जातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो। इति षड्ज भाषाराग संपूर्णम् ॥

अथ मालवीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों राग गाईके। वांको मालवी नाम कीनों ॥ अथ मालवी रागको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय। जामें षड्ज रिषभ गांधार मध्यम होय। जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धैवतस्वरमें होय। धैवत जामें कोमल होय। ऐसो जो राग तांहि मालवी जानिये। शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गाई है। ध स रि ग म ध। यातें ओडव है। याको चाहो तब गावो। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो। इति मालवीराग संपूर्णम् ॥

अथ षड्जमध्यमाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों गाईके। वांको षड्जमध्यमा नाम कीनों ॥ अथ षड्जमध्यमाको लछन लिख्यते ॥ जाके आदिमें षड्ज स्वर होय। ओर मध्मम स्वरमें जाको अंशस्वर होय। मध्यममें जाकी समाप्त होय। ओर हिंडोल रागकी भाषा होय। अरु जामें निषाद रिषभ नही होय। अरु षड्ज मध्यममें ओर गांधार मध्यम स्वरमें युक्त होय। ऐसो जो राग तांहि षड्ज मध्यमा जानिये। शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है। स ग म प ध स। यातें ओडव है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों। याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो। इति षड्ज मधमा राग संपूर्णम् ॥

अथ उमातिलककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाम करिवेको। अपनें मुखसों षट्राग संकीर्ण गौरी गाईके। वांको उमातिलक नाम किनों। अथ उमातिलकको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। विचित्र वस्त्रनको पहरे है। ओर हाथमें जाके कमल है। ओर सुंदर जाके नेत्र है। अरु सुंदर जाके केस है। माथेपें जाके मुकुट है। ओर काननमें कुंडल

पहरे है । मोतीनकी माला जाके कंठमें है । अरु शृंगाररसमें मग्न है । अपनें समान मित्र जाके संग है । ओर मधुर स्वरसों गान करे है । ऐसो जो राग ताहि उमातिलक जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । स रि ग म प नि स । यातें षाडव है । म प नि स रि ग म ध । यातें संपूर्ण है । याको संध्या समें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर आधी राति तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये रागवरते सो जंत्रसों समझिये ॥

उमातिलक राग (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति उमातिलक राग संपूर्णम् ॥

अथ झंझोटीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों बिलावल संकीर्ण भूपाली गाई । वांको झंझोटी नाम कीनों ॥ अथ झंझोटीको स्वरूप लिख्यंते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहेरे है । नेत्रनमें काजर आंजे है । लिलाटमें जाके कुंकुमको विंदा है । हाथमें जाके पानको बिडा है । हाथनमें कंकण पहेरे है । ओर फूलनके गुथानको धरे है । ओर नासिकामें भडकदार वेसरि पहेरे है । कंठमें जाके मोतीनकी माला है । ओर मदसों छकी है । ऐसी जो रागनी तांहि झंझोटी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । म प ध नि स रि ग म प नि म रि ग म । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर चाहो तब गावो । यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

झंझोटी रागनी (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

म	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति झंझोटी राभ संपूर्णम् ॥

अथ हुजीजकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कोईक आचार्य्यानें । सोरठ विहाग बिलावल संकीर्ण गाईके । नैन ये रागको आभास देखि । वांको हुजीज नाम कीनों ॥ अथ हुजीजको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे हैं । ओर

अंगनमें जाके सुगंध आवे है। कामदेव करिके युक्त है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। ओर चंद्रमासो जाको मुख है। शृंगाररसमें मग्न हैं। ओर तरुण जाकी अवस्था है। ऐसो जो राग तांहि हुजीज जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें मायो है। स रि ग म प ध नि स प ध नि स रि ग म। यातें संपूर्ण है। याको चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समझिये ॥

हुजीज राग (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हुजीज राग संपूर्णम् ॥

अथ पीलूकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक यवनीचार्यनें काफी संकीर्ण गोरी गाईके । वांको पीलू नाम कीनों ॥ अथ पीलूको स्वरूप लिख्यते ॥ कानमें जाके आंबको मोर है । कोकिलसो जाको कंठ है । ओर सोलह वर्षकी जाकी अवस्था है । गोरो अंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । बडे जाके नेत्र है । ऐसो जो राग ताहि पीलू जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

पीलू राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति पीलू राग संपूर्णम् ॥

अथ हंसकिंकिनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों चैती संकीर्ण आसावरी गाईके । वांको हंसकिंकिनी नाम कीनों ॥ अथ हंसकिंकिनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्रनको पहरे है । सोलह वर्षकी अवस्था है । बाये हाथमें जाके कमल है । दाहिने हाथमें दरपन है । शृंगार रसमें मग्न है । किनरीनके संग अपनें प्रियको जस निर्मल गावे है। उनके संग विहार करे है । गंधर्व जाकी अस्तुति करे है । ऐसी जो रागनी तांहि हंसकिंकिनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । नि स रि ग म प ध स । यातें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनी । यहतो याको वखत है । और रातिके प्रथम पहरमें गावनी । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी उरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

हंसकिंकिनी राग (संपूर्ण).

नि	निषाद अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार अंतर, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति हंसकिंकिनी राग संपूर्णम् ॥

अथ भटिहार रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवको । अपनें मुखसों परजसंकीर्ण बिभास गायके । वांको प्रभातकार नाम कीनों ॥ याको लोकमें भटिहार नाम कहे है ॥ अथ भटिहारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । चित्रविचित्र वस्त्र पहरे है । अनेक प्रकारके आभूषण पहरे है । जाके ललाटमें केसरीकी बिंदी है । मल्लिकाके फूलनकी माला पहरे है । मधुर वचन कहे है । राजानके आगें सभामें शोभायमान है । ओर अनंत द्रव्यदान करें है । ऐसो जो राग तांहि भटिहार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स प ध रि ग म स । यातें संपूर्ण है । याको सूर्यउदयसमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर दिनके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

भटिहार राग (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति भटिहार राग संपूर्णम् ॥

अथ ठूमरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक यवनाचार्यनें गारा संकीर्ण काफी गाईके। वामें नये रागको आभास देखि वांको ठुमरी नाम कीनों ॥

अथ ठूमरीको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके सुनेतें अति सुख होय । ओर सुंदर जाको शरीर है । ओर जाको नाद प्यारो है । कोकिलकेसो जाको कंठस्वर है । ओर बडे जाके नेत्र है । ऐसी जो रागनी तांहि ठूमरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

ठूमरी राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति ठूमरी राग संपूर्णम् ॥

अथ परदीपकी रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी संकीर्ण धनाश्री गायके । वांको परदीपकि नाम कीनों ॥ अथ परदीपकीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । सुंदर जाकी मूर्ति है । ओर रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । प्रियको स्मरण करे है । ओर सखी जाको समाधान करे है । प्रियके वियोगसों दुःखी है । ऐसी जो रागनी तांहि परदीपकी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । नि रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दुपहर उपरांत चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

परदीपकी रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति परदीपकी राग संपूर्णम् ॥

अथ काफी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको काफी नाम कीनों ॥ अथ काफी रागको लछन लिख्यते ॥ जाके आलापमें गांधार मध्यम निषादको मेल होय । ओर रिषभ धैवत तीव्रतर होय । जाको निषादसों आरंभ होय । ओर जाकी षड्ज समाप्तमें होय । ऐसो जो राग तांहि काफी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो याको गुनी सात स्वरनमें गावे है । नि सा रि ग म प ध नि स रि स। यातें संपूर्ण है। याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

काफी राग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति काफी राग संपूर्णम् ॥

अथ सौहनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों परजसंकीर्ण मालवी राग माईके । वांको सौहनी नाम कीनों ॥ अथ सौहनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त्र पहरे है । ओर ताल हाथमें है । ऐसी स्त्री जाके संग है । हाथमें जाके पिनाक बाजो है । नानाप्रकारके आभूषण पहरे है । ओर मधुर बचन कहे है । ओर राजानकी सभामें शोभायमान है । कुंडल जाके काननमें विराजमान है । ओर मदसो छक्यो है । ऐसो जो राग तांहि सौहनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग म ध नि स रि ग । यातें षाडव है । याको रात्रिके तीसरे पहरमें गावनो । यहतो याको बखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

सौहनी राग (षाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार षढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सोहनी राग संपूर्णम् ॥

अथ वैखरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रामकली संकीर्ण पंचम गाईके । वांको वैखरी नाम कीनों ॥ अथ वैखरीको स्वरूप लिख्यते ॥ पूर्णचंद्रमासो जाको मुख है। ओर मोतीनकी माला पहेरे है । ओर नील वस्त्रनको पहेरे है । ओर हाथनमें जडाऊ कडा है । ओर चंचल जाके नेत्र है । ओर मधुरी जाकी बानी है । ओर बडो चतुर है । ओर स्याम जाको रंग है । बीडी पानकी हाथमें है । एक हाथसों कमल फिरावे है। दूसरे हाथमें जाके वेणु है । ओर केसर चंदनको अंगराग लगाये है । सुंदर मुकुट जाके माथेपें है । ऐसो जो राग ताहि वैखरी कहिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

वैखरी राग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति वैखरी राग संपूर्णम् ॥

अथ सिंदूरिया रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी संकीर्ण आसावरी गाईके । वांको सिंदूरिया नाम कीनों ॥ अथ सिंदूरियाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको वर्ण है । ओर कोमल जाको अंग है । हाथमें दर्पन लिये है । ओर शृंगार करिके युक्त है । ओर केलिनके बनमें अपनें प्रियको जगावे है । सुंदर जाके केस है । ओर गंधर्व जाकी स्तुति करे है । उग्र जाको रूप है । ओर मदिरापानसुं छाकि रही है । ऐसी जो रागनी तांहि सिंदूरिया जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनसूं गाई है । नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझियें ॥

सिंदूरिया रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सिंदूरिया राग संपूर्णम् ॥

अथ ऐराक रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक आचार्यनें काफी संकीर्ण कान्हडी गाईकें। वाको ऐराक नाम कीनों ॥ अथ ऐराकको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके हाथमें खड्ग है । दूसरे हाथमें कमल है । देवता ओर चारण जाकी स्तुति करे है । गोरो जाको रंग है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ओर चंदनको अंगराग लगाये है । ऐसो जो राग ताहि ऐराक जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । याको अंशस्वर गृहस्वर निषाद है। याको न्यासस्वर पंचम । नि ध प म ग रि स स रि ग म प । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। सो जंत्रसों समझिये ॥

ऐराक राग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति ऐराक राग संपूर्णम् ॥

अथ उज्जाल रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी संकीर्ण सारंग गाईके । वांको उज्जाल नाम कीनों ॥ अथ उज्जालको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । च्यार

जाके भुजा है। पीतांबर पहरे है। ओर मोरमुकुट कुंडल पहरे है। अनेक तरहके विहार स्त्रीनके संग करे है। ऐसो जो राग तांहि उज्जाल जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। नि ध प म ग रि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो। ओर चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समझिये॥

उज्जाल राग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति उज्जाल राग संपूर्णम् ॥

अथ सिंधडा रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी संकीर्ण सोरठ गाईके । वांको सिंधडा नाम कीनों ॥ अथ सिंधडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । उदे रंगकी चोली पहरे है । विशाल जाके नेत्र है । अनेक तरहके आभूषण पहरें है । दाडिमीके वीजसे जाके दांत है । मदिरापानकी मतवारी है । एसी जो रागनी तांहि सिंधडा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । याको अंशस्वर गृहस्वर निषादमें न्यासस्वर षड्जमें जानिये । रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रात्रिसमें गावनो । यहतो याको वखत है । और दिन रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

सिंधडा रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सिंधडा राग संपूर्णम् ॥

सप्तम रागाध्याय समाप्त.

इति श्रीमन् सूरजकुलमंडन अरिमदखंडन मही मंडलाखंडल सकल विद्या विद्याविशारद धर्मावतार श्रीमन्महेंद्र महाराज राजाधिराजेंद्र श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री सवाई प्रतापसिंहदेवविरचिते श्री राधागोविंद संगीतसार संपूर्ण ग्रंथ॥ समाप्त ॥१॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥